चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 233, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 22 सितंबर 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में पहुंच का सशक्त माध्यम बनेगा उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो : राष्ट्रपति

यूपी देश की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना : राष्ट्रपति

उद्घाटन

राष्ट्रपति ने उत्तर प्रदेश के पहले अंतरराष्ट्रीय व्यापार शो का उद्घाटन किया

ग्रेटर नोएडा/नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गुरुवार को कहा कि उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो राज्य के निमार्ताओं और उद्यमियों के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी पहुंच स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम बनेगा। राष्ट्रपति आज ग्रेटर नोएडा में उत्तर प्रदेश के पहले अंतरराष्ट्रीय व्यापार शो का उद्घाटन करने के बाद उपस्थित लोगों को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो प्रदेश के उत्पादों को देश-विदेश के बाजारों तक पहुंचाने के लिए एक स्वागत योग्य कदम है। उन्होंने इस पर खुशी जतायी कि इस ट्रेड शो में दो हजार से अधिक निमार्ता अपने उत्पाद प्रदर्शित कर रहे हैं और 66 देशों के 400 से अधिक खरीदार इस व्यापार शो में भाग ले रहे हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह आयोजन प्रदेश के निमाताओं और उद्यमियों के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी पहुंच स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम बनेगा। राष्ट्रपति ने कहा कि इस ट्रेड शो में 'एक जिला एक उत्पाद' के विभिन्न उत्पादों का प्रदर्शन सराहनीय है। उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि हस्तशिल्प आधारित उत्पादों के साथ-साथ राज्य के युवा उद्यमी, विशेषकर महिला उद्यमी भी अपने उत्पादों का प्रदर्शन कर रही हैं। उन्होंने उद्यमिता और श्रम शक्ति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। राष्ट्रपति ने कहा कि हाल के वर्षों में उत्तर प्रदेश सरकार ने आर्थिक विकास और निवेश को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि निवेश प्रक्रिया के सरलीकरण, व्यापार करने में आसानी और बुनियादी ढांचे के विकास में तेजी के कारण उप्र अब देश की सबसे तेजी से बढ़ती राज्य स्तरीय अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि राज्य स्तर पर ऐसे उत्कृष्ट आर्थिक प्रदर्शन के बल पर भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेगा। राष्ट्रपति ने कहा कि 96 लाख से अधिक एमएसएमई वाले सभी राज्यों में उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है।

'यूपी ने आर्थिक विकास और निवेश के क्षेत्र में नये कदम उठाए'

राष्ट्रपति ने कहा कि हाल के वर्षों में यूपी ने आर्थिक विकास और निवेश के क्षेत्र में नये कदम उठाए हैं। निवेश को सरल, व्यापार को सुगम बनाने और इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट को गति देने के परिणाम स्वरूप यूपी आज देश में सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था बन चुका है। भारत जो आज विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और शीघ्र ही यह विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए संकल्पबद्ध है। इस राष्ट्रीय संकल्प को पूरा करने में उत्तर प्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान है। यूपी ने अपनी अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने का संकल्प लिया है। भारत के 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य में यूपी सरकार और यहां की जनता महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।'जी-20 सम्मेलन की सफलता से पूरा विश्व समुदाय प्रभावित' राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि यूपी में एमएसएमई के लिए अच्छा ईको सिस्टम विकसित किया जा रहा है। 96 लाख एमएसएमई इकाइयों के साथ यूपी देश के सभी राज्यों में प्रथम स्थान पर है। लैंडलॉक राज्य होने के बावजूद प्रदेश का निर्यात निरंतर बढ़ रहा है। राज्य का निर्यात 2017-18 में 88 हजार करोड़ से बढ़कर 1लाख 75 हजार करोड़ तक पहुंच गया है। ये प्रदेश के उद्यमियों की मेहतन तथा योग्यता का परिणाम है। हाल ही में जी-20 सम्मेलन की सफलता से पूरा विश्व समुदाय प्रभावित है। यूपी के आगरा, लखनऊ, वाराणसी और ग्रेटर नोएडा में जी-20 के विभिन्न समिट आयोजित हुए। वहीं ग्रेटर नोएडा में अब आयोजित ये ट्रेड शो भी जरूर सफल होगा।

मोदी के लिए महिला सशक्तिकरण राजनीतिक मुद्दा नहीं, मान्यता का सवाल है: शाह

लखनऊः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में लोकसभा में महिला आरक्षण से जुड़ा 128वाँ संविधान संशोधन 'नारी शक्ति वंदन विधेयक-2023' बिल पेश किया गया, जिसे बुधवार को लोकसभा में पास कर दिया गया। इस मौके पर विपक्ष के सवालों का करारा जवाब देते हुए शाह ने स्पष्ट किया कि, ह्यकुछ पार्टियों के लिए महिला सशक्तीकरण पॉलिटिकल एजेंडा या राजनीतिक मुद्दा हो सकता है। मोदी के लिए महिला सशक्तीकरण राजनीतिक मुद्दा नहीं, बल्कि मान्यता का सवाल है। नए संसद भवन में पेश किया गया 'नारी शक्ति वंदन विधेयक' पर बुधवार चर्चा के बाद वोटिंग के दौरान तमाम बहसों के बीच बिल के पक्ष में 454 वोट पड़े और यह बिल दो तिहाई बहुमत से पास हो गया।

डीजीसीए ने एयर इंडिया के उड़ान सुरक्षा प्रमुख को एक महीने के लिए निलंबित किया

नई दिल्ली

नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने एयर इंडिया के उड़ान सुरक्षा प्रमुख राजीव गुप्ता को एक महीने के लिए निलंबित कर दिया है। विमान नियामक ने यह निर्णय कुछ खामियों के कारण लिया है। डीजीसीए ने गुरुवार को जारी बयान में कहा कि डीजीसीए की टीम ने 25 और 26 जुलाई को आंतरिक लेखा परीक्षा, दुर्घटना निवारण कार्य और आवश्यक तकनीकी कर्मचारियों की उपलब्धता को लेकर एयर इंडिया की समीक्षा की थी। डीजीसीए ने इस समीक्षा के दौरान दुर्घटना निवारण कार्य और अपेक्षित तकनीकी जनशक्ति की उपलब्धता में कमियां पाईं। इसके बाद उड़ान सुरक्षा प्रमुख राजीव गुप्ता को एक महीने के लिए निलंबित करने का फैसला लिया गया है। इसके बाद विमान नियामक ने एयर इंडिया के मुख्य उड़ान सुरक्षा प्रमुख को निलंबित किया है। डीजीसीए ने पिछले महीने भी एयर इंडिया के प्रशिक्षण केंद्रों के एटीओ अनुमोदन को 10 दिनों के लिए निलंबित कर दिया था।

भीमा-कोरेगांव मामले में ज्योति जगताप की जमानत याचिका पर चार हफ्ते बाद सुनवाई

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस अनिरुद्ध बोस की अध्यक्षता वाली बेंच ने भीमा-कोरेगांव मामले में ज्योति जगताप की जमानत याचिका पर चार हफ्ते बाद सुनवाई करने का आदेश दिया। आज सुनवाई के दौरान ज्योति जगताप की ओर से पेश वकील अपर्णा भट्ट ने जवाबी हलफनामा दाखिल करने के लिए समय मांगा, जिसके बाद कोर्ट ने तीन हफ्ते का समय दे दिया। इससे पहले 22 अगस्त को सुनवाई के दौरान एनआईए ने जमानत याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए समय देने की मांग की थी।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम महिला वैज्ञानिकों के लिए उपहारः राजनाथ सिंह

नई दिल्लीः रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को कहा कि महिला आरक्षण बिल इसरो की महिला वैज्ञानिकों को एक तरह से उपहार है, जो इस देश के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं और उन्हें भारत द्वारा ये खास गिफ्ट दिया जा रहा है।

इसरो की सफलता पर देश को गर्वः रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लोकसभा में चंद्रयान-3 की सफलता पर बात की। राजनाथ सिंह ने अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों पर चर्चा की शुरूआत करते हुए सिंह ने कहा कि भारत द्वारा अब तक लॉन्च किए गए 424 विदेशी उपग्रहों में से 389 उपग्रह पिछले नौ वर्षों में पीएम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में लॉन्च किए गए हैं।

महिला वैज्ञानिकों की भूमिका सराहनीयः राजनाथ सिंह ने कहा कि विदेशी उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण से भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र तेजी से दुनिया में प्रमुख स्थान हासिल कर रहा है। रक्षा मंत्री ने कहा कि सदन और राष्ट्र इसरो की महिला वैज्ञानिकों और प्रत्येक भारतीय बेटी को सलाम करता है, उनकी सराहना करता है और उनके प्रति आभार व्यक्त करता है।

महिला आरक्षण बिल पर राजनाथ सिंह ने कहा, संसद का यह विशेष सत्र 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' को समर्पित है। ऐसी स्थिति में, मैं इस विधेयक को कृतज्ञ राष्ट्र द्वारा इसरो की महिला वैज्ञानिकों और उनके साथ-साथ भारत की संपूर्ण महिला वैज्ञानिक समुदाय के लिए प्रस्तुत एक उपहार मानता हूं। राजनाथ सिंह ने चंद्रयान-3 की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, सबसे पहले, मैं इस सफलता के लिए इसरो वैज्ञानिकों और भारतीय वैज्ञानिक समुदाय को हार्दिक बधाई देता हूं। यह हमारे इसरो वैज्ञानिकों की बौद्धिक क्षमता और देश के विकास के प्रति उनके समर्पण का ही परिणाम है कि आज हमारा देश विज्ञान की दुनिया में अग्रणी देशों की कतार में खड़ा है। पूरे देश को गौरवान्वित किया है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद लगातार मेहनत के बदौलत ही भारत आज इस मुकाम पर पहुंचा है।

वोटर लिस्ट में नाम जुड़वाने के लिए आधार नंबर अनिवार्य नहीं

नई दिल्ली

निर्वाचन आयोग ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में एक हलफनामा दाखिल करके बताया कि वोटर लिस्ट में नाम जुड़वाने के लिए फॉर्म 6 और फॉर्म 6बी के तहत आधार नंबर देना अनिवार्य नहीं है। आयोग ने कहा कि वो इसके लिए फॉर्म में यथोचित बदलाव करेगा। सुनवाई के दौरान वरिष्ठ वकील सुकुमार पटजोशी ने निर्वाचन आयोग की ओर से चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच को हलफनामा सौंपते हुए कहा कि वोटर लिस्ट में नाम जुड़वाने ।

भारत एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति बनने की दिशा में बढ़ रहा है आगे : बिरला

नई दिल्ली

लोक सभा में गुरुवार को चंद्रयान-3 मिशन की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में देश की अन्य उपलब्धियों को लेकर चर्चा हुई। इस अवसर पर सत्र की अध्यक्षता करते हुए लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की इस शानदार उपलब्धि पर देशवासियों को बधाई दी। इस दौरान बिरला ने कहा कि इन उपलब्धियों से प्रत्येक भारतीय गौरवान्वित हुआ है और वैश्विक स्तर पर हमारे देश का कद बढ़ा है। 23 अगस्त, 2023 के ऐतिहासिक दिन का उल्लेख करते हुए बिरला ने इस तथ्य की सराहना की कि उस दिन भारत ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास उतरने वाला पहला देश बनकर एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की। उन्होंने कहा कि चंद्रयान-3 मिशन की सफलता भारतीय वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की अथक प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जो ब्रह्मांड के सुदूरतम क्षेत्रों तक पहुंचने के लिए लगातार प्रयास करते आए हैं । बिरला ने यह भी कहा कि प्रज्ञान रोवर ने चंद्रमा से जो अमूल्य जानकारी भेजी है, उससे अंतरिक्ष के बारे में मानव ज्ञान में वृद्धि होगी और भावी खोजों का मार्ग प्रशस्त होगा। 23 अगस्त को "राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस" के रूप में मनाए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बिरला ने कहा कि यह एक ऐसा दिन होगा, जो आने वाली पीढ़ियों को जीवन में उच्च लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

चंद्रमा पर चंद्रयान-2 के पदचिह्न का नाम "तिरंगा प्वाइंट" और चंद्रयान-3 के लैंडिंग स्थल का नाम "शिव शक्ति प्वाइंट" रखने का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि ये नाम भारत की सदियों पुरानी विरासत के प्रति सम्मान के साथ ही हमारी वैज्ञानिक महत्वाकांक्षाओं और प्रयासों के प्रतीक भी हैं।

बीजेपी सांसद जय पांडा को जान से मारने की धमकी

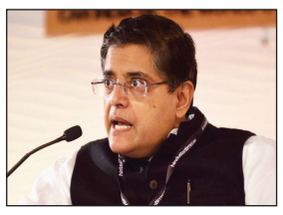

नई दिल्ली

बीजेपी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और सांसद जय पंडा को जान से मारने की धमकी मिली है। जय पांडा की हत्या की धमकी फोन कॉल के जरिए दी गई है। धमकी देने वाले शख्स ने बीजेपी सांसद के असिस्टेंट को फोन किया था। बीजेपी नेता को जान से मारने की धमकी मिलने के बाद पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया है। दिल्ली पुलिस मामले जांच में जुट गई है।

नब दास जैसा हाल करने की धमकीः बताया जा रहा है कि फोनन कॉल में जय पांडा का हाल नब दास जैसा करने की धमकी दी गई है। बता दें कि इसी साल की शुरूआत में ओडिशा के स्वास्थ्य मंत्री नब दास की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। जनवरी में ड्यूटी पर तैनात एक पुलिसकर्मी ने ही गोली मारकर नब दास की हत्या कर दी थी। बीजेपी की तरफ से एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई है।

कनाडा अपने राजनयिकों और संबंधित कर्मचारियों की संख्या में कटौती करें: भारत

भारत ने कनाडा से वीजा सेवा रोकी

नई दिल्ली

भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के मद्देनजर नई दिल्ली स्थित कनाडा के उच्चायोग से कहा गया है कि वह अपने राजनयिकों और संबंधित कर्मचारियों की संख्या में कटौती करे। कनाडा के नागरिकों के लिए भारत ने प्रवेश संबंधी वीजा सेवाओं पर अस्थाई रोक लगाने के बाद यह कदम उठाया है। भारत ने कनाडा से दो टूक शब्दों में कहा है कि वह आतंकवादियों को सुरक्षित पनाह न दे तथा कनाडा में भारतीय राजनयिक मिशनों और राजनयिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने गुरुवार को साप्ताहिक पत्रकार वार्ता में कहा कि भारत और कनाडा के वर्तमान राजनयिक टकराव से कनाडा की ही छवि खराब हो रही है। कनाडा आतंकवादियों को सुरक्षित पनाह मुहैया करा रहा है। इसको लेकर कनाडा को अपनी अंतरराष्ट्रीय छवि को लेकर चिंता होनी चाहिए। प्रवक्ता ने दोहराया कि कनाडा की संसद में प्रधानमंत्री ट्रुडो और वहां की विदेश मंत्री का बयान पूर्वाग्रह और राजनीति से ग्रसित है। भारत इन बेतुके और प्रेरित बयानों को खारिज करता है। प्रवक्ता से दोनों देशों के बीच जारी राजनयिक टकराव के बारे में विभिन्न सवाल पूछे गए। प्रवक्ता ने कहा कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रुडो ने खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की मौत का मुद्दा जी-20 शिखरवार्ता के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सामने उठाया था। इसे प्रधानमंत्री ने पूरी तरह खारिज कर दिया था।

'जेलों में बढ़ती भीड़ और न्याय में देरी बना चिंता का विषय'

कैदियों को लेकर संसदीय समिति ने की कई सिफारिशें

नई दिल्ली

देशभर के जेलों में बढ़ती भीड़ को लेकर संसदीय समिति ने चिंता जताई है। संसदीय समिति का मानना है कि जेलों में भीड़ भाड़ और न्याय में देरी होना एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है। उनका मानना है कि बढ़ती भीड़ की वजह से न्याय मिलने में देरी हो रही है।

समिति ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का किया जिक्रः भाजपा सांसद बृजलाल की अध्यक्षता में गठित गृह मामलों की संसदीय स्थायी समिति ने सिफारिश की है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले की तर्ज पर गर्भवती महिलाओं (कैदियों) पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट के फैसले में कहा गया था कि जेल में प्रसव से पहले और प्रसव के बाद महिला कैदियों और उनके बच्चों की देखभाल के लिए पर्याप्त सुविधाएं होनी चाहिए। संसदीय समिति का मानना है, भीड़भाड़ और न्याय में देरी का मुद्दा एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है, जिससे कैदियों और आपराधिक न्याय प्रणाली दोनों के लिए कई परिणाम सामने आ रहे हैं। समिति की सिफारिश है कि भीड़ भाड़ वाली जेलों से कैदियों को अन्य जेलों में भेजा जा सकता है। संसदीय समिति ने सिफारिश की कि जेल में पैदा हुए बच्चों को 12 साल की उम्र तक उनकी मां के साथ रहने की अनुमति मिलनी चाहिए। समिति ने कहा कि जेलों में खाना आश्रय, चिकित्सा देखभाल, शिक्षा और शारीरिक विकास से संबंधित बच्चों की सही देखभाल पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके अलावा इन बच्चों के लिए खेल और मनोरंजन की सुविधाएं भी उपलब्ध हो।

समिति ने उठाया ट्रांसजेंडर कैदियों का मुद्दाः संसदीय समिति ने ट्रांसजेंडर कैदियों का मुद्दा उठाते हुए कहा कि इन कैदियों को भी अन्य कैदियों की तरह सुविधा मिलनी चाहिए।

देश भर में आवारा कुत्तों के मामले पर दिशा-निर्देश जारी करेगा सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि देश भर में आवारा कुत्तों द्वारा लोगों को काटने और हमला करने के मामले में वो कोई अंतरिम आदेश पारित नहीं करेगा, बल्कि वो एक ठोस दिशा-निर्देश जारी करना चाहता है। जस्टिस जेके माहेश्वरी की अध्यक्षता वाली बेंच ने मामले की अगली सुनवाई 18 अक्टूबर को करने का आदेश दिया। सुप्रीम कोर्ट पांच हाई कोर्ट की ओर से जारी आदेशों को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा है। इन याचिकाओं में केरल में आवारा कुत्तों द्वारा लोगों को काटने और हमला करने का मामला भी शामिल है।

चोरों ने मकान को बनाया निशाना नगदी सहित कीमती आभूषण किया पार

थाना मेजा क्षेत्र के अंतर्गत चोरों ने तीस लाख रुपए की चोरी को दिया अंजाम

अखंड भारत संदेश

सिरसा। प्रयागराज मेजा थाना क्षेत्र के अंतर्गत बुधवार देर रात चोरों ने दो अलग-अलग गांवों में जमकर कहर बरपाते हुए लगभग तीस लाख रुपए की चोरी को अंजाम दिया। सुबह से चोरी की जानकारी होने पर पीड़ित परिवारों में हड़कंप मच गया। सूचना पर इलाकाई पुलिस मौके पर पहुंच छानबीन कर वापस चली गई। सूचना के तीन घंटे बाद शहर से फिल्ड यूनिट की टीम घटनास्थल पर पहुंच कार्रवाई शुरू की।मिली जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र में बुधवार की देर रात हौसला बुलंद चोरों ने थाना क्षेत्र के पंडित का पूरा गांव में देवभास्कर त्रिपाठी के घर को निशाना बनाते हुए उनके चार कमरों का ताला तोड़कर लोहे के बाक्स में रखे करीब 30 लाख रुपए के आभूषण व नगदी पार कर दिया। पास में रखी लाइसेंसी रिवाल्वर भी चोर उठा ले गए। सुबह जानकारी हुई तो हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची इलाकाई पुलिस छानबीन में जुट गई और डाग स्क्वायड टीम बुलाया गया। चोरी गई रिवाल्वर घर के पीछे खेत में पड़ी मिली। वहीं गांव के ही उमाकांत पाण्डेय उर्फ बबलू के घर को निशाना बनाते हुए चोरों ने लाखों की चोरी की। यही नहीं गांव के ही एसपी तिवारी के घर में भी चोरों ने चोरी का प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिली। वहीं थाना क्षेत्र के सिरसा पुलिस चौकी अंतर्गत बेदौली गांव में चोरों ने दो घरों में चोरी की। सीएमपी ईंट भट्टा व्यवसाई के घर से लाखों की चोरी के साथ ही गांव के डाक्टर दुबे के घर को भी निशाना बनाया। एक ही रात में दो गांवों के पांच घरों में चोरी से इलाके में हड़कंप मच गया। समाचार लिखे जाने तक पुलिस जांच पड़ताल में जुटी हुई है। इस घटना से क्षेत्र में तरह-तरह की चर्चा बना हैं और ग्रामीणों में भय और डर का माहौल बना हुवा हैं।

यूकों बैंक से किसान ने कराया केसीसी ढाई लाख का लोन

रुपए मिलने पर गिनने के नाम पर दलाल ने डेढ़ लाख ले ली दलाली, किसान ने थाना पुलिस को दलाल के खिलाफ तहरीर देकर रुपये वापस दिलाने की किया मांग

कोरांव। सरकार भले ही किसानों को केसीसी या ग्राहक क्रेडिट कार्ड हो या होम लोन के लिए आदेश दिए गए है किन्तु बैक के मैनेजर के द्वारा दलाल सक्रिय किए गए हैं बिना दलाल के कोई भी लोन नही दिया जा रहा है। ऐसा ही एक मामला कोरांव के खिवली गांव में प्रकाश में आया है। खिवली गांव का रहने वाला किसान राधेश्याम पुत्र रामनाथ यूको बैंक से दलाल के माध्यम से अपनी केसीसी बनवाई। बीते 14 सितंबर को यूको बैंक शाखा कोरांव से वह ढाई लाख रुपए केसीसी लोन का पैसा निकाला। पैसा निकालने के दौरान दलाल रमेश चंद्र पुत्र मथुरा निवासी पटेरी थाना कोरांव भी मौजूद रहा। जब किसान राधेश्याम अपना पैसा लेकर बैंक से बाहर आया तो दलाल रमेश के द्वारा यह कहा गया कि चलो किसी दुकान पर बैठकर पैसे को गिन लेते हैं। पीड़ित किसान राधेश्याम का आरोप है कि ढाई लाख रुपये गिनने के बाद उसमें से मुझे एक लाख रुपए देकर कहा चुपचाप घर चले जाओ डेढ़ लाख रुपये मेरी दलाली हो गई। ऐसे में किसान अब अपने पैसे के लिए दर दर की ठोकर खा रहा है। भुक्तभोगी किसान ने दलाल को नामजद करते हुए थाना पुलिस कोरांव को तहरीर देकर दलाली के नाम पर लिए गए पैसे को वापस दिलाने व विधिक कार्रवाई की मांग की है।

न्यूज झरोखा

जिला जज ने ग्राम न्यायालय मेजा का किया निरीक्षण

जिला जज से मिला अधिवक्ता संघ का प्रतिनिधि मंडल

मेजा। जिला जज संतोष राय ने बुधवार को ग्राम न्यायालय मेजा का निरीक्षण किया। इस दौरान बार एसोसिएशन मेजा के अध्यक्ष महेंद्र कुमार द्विवेदी और मंत्री चंद्रमणि शुक्ल के साथ अधिवक्ताओं का प्रतिनिधि मंडल जिला जज से मुलाकात की। संघ के अध्यक्ष महेंद्र कुमार ने जिला जज से ग्राम न्यायालय मेजा में मांडा थाना क्षेत्र को भी शामिल करने की मांग की।अध्यक्ष की मांग को गंभीरता से लेते हुए जिला जज संतोष राय ने आश्वासन दिया।बता दें कि बुधवार को जिला जज संतोष राय, एडीजे डी.सी . शुक्ला और उपजिला मजिस्ट्रेट अमित गुप्ता दोपहर बाद ग्राम न्यायालय मेजा का निरीक्षण किया।शांति सुरक्षा को लेकर एसीपी मेजा विमल किशोर मिश्र पुलिस बल के साथ मौजूद रहे।

मण्डल स्तरीय भोरोत्तोलन प्रतियोगिता के लिए 32 खिलाड़ियों का हुआ चयन

करछना। गुरुवार को राजकीय बालिका इंटर कॉलेज मुगारी करछना में मंडल स्तरीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता के लिए जनपद के विभिन्न विद्यालयों के 32 खिलाड़ियों का चयन किया गया।जिसमे जूनियर स्तर पर अकोढ़ा से खुशी केसरवानी का घटवा से एकता,काजल,आरती का मुंगारी से सानिया,हनी, मानशी का जबकि सीनियर बालिका में घटवा से संजना,खुसबू गुप्ता,स्वेक्षा,लवली,आरती का सोरांव से गार्गी मिश्रा का,मुंगारी से रोशनी पटेल सहित जनपद स्तर में 23 बालको का भी जूनियर एवं सीनियर वर्ग में चयन हुआ,करछना में ही 23 सितंबर को प्रातः 9 बजे से मंडलस्तरीय भोरोत्तोलन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा।प्रतियोगिता के लिए जिला स्तर पर 100 से अधिक छात्रों का ट्रायल किया गया,उक्त कार्यक्रम में प्रधानाचार्य मदन मोहन शंखधर, डॉ संतोष सिंह,ज्योत्सना सिंह,सूर्यकांत त्रिपाठी खेल प्रभारी बुलंद प्रताप राय, राजेन्द्र पाण्डेय,अजय यादव,बृजेश कुमार,शिवराज,क्षीतिज तिवारी,राकेश एवं श्वेता सिंह सिंह सहित विभिन्न विद्यालयों के खेल प्रशिक्षक उपस्थित रहें।

लायंस क्लब इंटरनेशनल ने गरीबों को भोजन वितरित किया

प्रयागराज। में लायंस क्लब इंटरनेशनल के हंगर रिलीफ कार्यक्रम के अंतर्गत लायंस क्लब प्रयागराज रॉयल द्वारा कुष्ठ रोगी सेवा आश्रम नुरुल्ला रोड प्रयागराज में रात्रि में 82 लोगों को सेवा भाव से भरपेट भोजन कराया गया। भोजन पाकर सभी लोग बहुत प्रफुल्लित थे अध्यक्ष डॉ रमेश चंद्र बताते हैं कि ऐसे सेवा भाव से गरीबों की सेवा करना चाहिए इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से क्लब के अध्यक्ष डॉ रमेश चंद्र सचिव इं संत कुमार वर्मा, कोषाध्यक्ष डॉ सूर्यनाथ प्रजापति व गुप एडमिन रवि भूषण गुप्ता सहित सुधा गुप्ता अल्पना वर्मा सरिता पटेल के साथ कई अन्य लोग उपस्थित थे ।

विधि विधान से पूजे गए भगवान गजानन

सहसों। गणेश महोत्सव के दौरान क्षेत्र के सिंगरामऊ गांव में आयोजित भगवान गणेश जी की पूजन कार्यक्रम में शामिल फूलपुर विधायक प्रवीण पटेल और भाजपा गंगापार जिलाध्यक्ष कविता पटेल ने गणेश भगवान का पूजन के उपरांत उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान गजानन के पूजन से सभी प्रकार के कष्ट दूर होते हैं। विघ्नहर्ता हैं भगवान गणपति इनकी आराधना से घर, परिवार, देश एवं समाज में खुशहाली आती है। आचार्य पंडित सर्वेश्वर दत्त त्रिपाठी द्वारा विधिवत वैदिक मंत्रोच्चारण से धूप, दीप, स्तुति करते हुए पूजन कराया गया। आयोजक राधेश्याम मिश्रा, बृजेंद्र मिश्रा एवं ज्ञानेंद्र मिश्रा ने आए हुए सभी अतिथियों का माल्यार्पण व अंगवस्त्रम के द्वारा स्वागत किया। संचालन पवन कुमार शुक्ला ने किया। इस मौके पर प्रमुख रूप से जिला उपाध्यक्ष भाजपा गंगापार अनिरुद्ध सिंह पटेल, फूलपुर ब्लॉक प्रमुख विपेंद्र सिंह पटेल, लक्ष्मीकांत, भाजपा नेता भूपेन्द्र मिश्रा, संदीप दूबे, सत्यम मिश्रा, जिला महामंत्री भाजपा मनोज निषाद, ग्राम प्रधान गुलाब तिवारी, पूर्व मंडल अध्यक्ष जय प्रकाश दूबे, जिला संयोजक भाजपा नमामि गंगे राजधर दूबे, भाजपा नेत्री सौम्या मिश्रा, दिनेश शुक्ला, विमलेश पटेल, वेद मणि तिवारी सहित आदि भक्त जन प्रसाद ग्रहण करते मौजूद रहे।

सीएचसी मेजा के नए अधीक्षक का प्रधान संघ ने किया स्वागत

मेजा। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मेजा के नए अधीक्षक डॉक्टर समीम अख्तर का अखिल भारतीय प्रधान संघ के जिला प्रभारी प्रधान गडेवरा अनिल शुक्ला ने गुरुवार को उनके चेंबर में माल्यार्पण कर स्वागत किया। श्री शुक्ल ने कहा कि डॉक्टर समीम अख्तर अधीक्षक के रूप में सीएचसी मेजा का कायाकल्प करने में अपने 5 साल के अनुभव का बखूबी इस्तेमाल कर जिले में अंकित करने का प्रयास करेंगे।उन्होंने आधा व्यक्त की कि अस्पताल के लापरवाह कर्मचारियों के प्रति जबादेही और स्वास्थ्य कर्मियों के प्रति जिम्मेदारी के साथ इनका सहयोग करेंगे।उन्होंने यह भी कहा कि आस पास कुकुरमुत्ते की तरह फैले नर्सिंग होम की जांच कर आवश्यक कदम उठाएंगे।गौरतलब है कि दो दिन पूर्व निवर्तमान अधीक्षक डॉक्टर ओमप्रकाश को सीएमओ प्रयागराज आशू पांडेय द्वारा कार्यों में लापरवाही बरतने पर हटा दिए गए थे। स्वागत के दौरान स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी अंजू राय,एलटी दीपू त्रिपाठी, एलटी देवेंद्र कुमार दुबे और मांडा दुबे मौजूद रहे।

कारगिल शहीद मार्ग बसही पतुलखी डगर मुश्किलों भरा, डीएम से शिकायत

अखंड भारत संदेश

करछना। तहसील के बसही गांव की कारगिल शहीद मार्ग की स्थिति एकदम जर्जर हो जाने से लोगो को आने जाने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। आपको बता दें कि सड़क के किनारे बनी दोनों तरफ की नाली एकदम से टूट कर खराब हो गई है जिससे सड़क पर पानी का जमाव बना रहता है। जिससे लोग गिरते रहते है इस सड़क पर साईं नाथ पब्लिक स्कूल और सरकारी प्राथमिक विद्यालय बसही के बच्चो का भी आना जाना रहता है जिससे बच्चे भी गिरकर चोटिल होते रहते है।इसी सड़क के रास्ते धार्मिक शनि देव महराज का मंदिर है जहा शनिवार को लोग इकट्ठा होकर पूजा पाठ करते है। जिन्हें आवागमन में बहुत दिक्कत का सामना करना पड़ता है।बसही ग्राम प्रधान अभिषेक कुमार सिंह को भी मौखिक रूप से भी कई बार अवगत कराया गया लेकिन उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ रहा। शनि देव महराज सेवा ट्रस्ट की अध्यक्ष-जन्मेजय पाल ने प्रयागराज जिलाधिकारी को लिखित पत्र भेजकर सड़क व नाली को बनवाने की मांग की है। वहीं उपस्थित लोगों में भोला ठाकुर,संतोष यादव, शिव प्रकाश यादव,गणेश पाल,अनिल यादव, साईं नाथ पब्लिक स्कूल, राकेश शर्मा, दीपक भारतीया, सूरज यादव,अश्वनी कुमार पाण्डेय, रणंजय पाल, विवेक चौधरी, विमल केसरवानी, डॉ पवन कुमार,राहुल यादव, विनोद यादव, आशीष शर्मा,राहुल पाल, संदीप यादव, विनय केसरवानी सहित लोग उपस्थित रहे।

तीन दिवसीय चिंतन शिविर का हुआ समापन

अखंड भारत संदेश

बाल विकास व स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं के सुधार को लेकर हुआ मंथन

कोरांव। नीति आयोग भारत सरकार ने पिछड़े ब्लॉकों के समुचित विकास हेतु आकांक्षी ब्लॉक योजना तैयार कर उनके समुचित विकास के लिए सभी विभागों के समन्वय व सहभागिता को लेकर तीन दिवसीय चिंतन शिविर का आयोजन विकासखंड मुख्यालय कोरांव पर आयोजित हुआ। जिसमें अलग-अलग दिनों में अलग-अलग विभागों के साथ समन्वय एवं संवाद कर आ रही समस्याओं के निदान की योजनाएं तैयार की गई। खंड विकास अधिकारी धीरेंद्र कुमार यादव ने बताया कि पिछड़े ब्लॉकों को आगे की पंक्ति में लाने के लिए सरकार ने ब्लॉक डेवलपमेंट स्ट्रेटजी हेतु चिंतन शिविर के माध्यम से सभी विभागों को समन्वय के साथ कार्य करने व हर क्षेत्र में सहभागिता के साथ काम करने की सब लोगों को प्रेरणा मिले इसके लिए चिंतन शिविर में विभागीय अधिकारियों व कर्मचारियों का सीधे संवाद स्थापित हुआ। एक दूसरे को आ रही दिक्कतों को बताया गया। जिसके निदान हेतु कार्य योजनाएं तैयार होगी और जन भागीदारी व सहभागिता से सभी योजनाओं को धरातल पर लाने का काम किया जाएगा। तीन दिवसीय चिंतन शिविर के आखिरी दिन बाल विकास एवं स्वास्थ्य से संबंधित अधिकारी और कर्मचारी शामिल हुए। जहां स्वास्थ्य तथा बाल विकास से जुड़ी योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक कैसे पहुंचाया जा सकता है, आदि पर मंथन किया गया। संचारी रोग कैसे खत्म होंगे टीबी उन्मूलन, कुपोषण कैसे भागेगा आदि को लेकर मंथन हुआ और सबको मिल जुल कर लोगों को जागरूक करने एवं सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं से जुड़कर समाज के अभिशाप कुपोषण व संचारी रोगों के रोकथाम के उपायों को अपनाते हुए उनके उन्मूलन में सहयोग करने की अपील की गई। चिंतन शिविर में सहायक विकास अधिकारी पंचायत दिनेश चंद्र पाठक, सहायक विकास अधिकारी सांख्यिकी रामेश्वर सिंह, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कोरांव के अधीक्षक डॉ उमेश कुमार, सीडीपीओ राकेश मिश्रा, समेत आंगनबाड़ी कार्यकत्री, आशा, एएनम व सीएचओ कर्मी मौजूद रही।

शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को चरित्रवान बनानाः शिव अवतार

अखंड भारत संदेश

प्राथमिक विद्यालय घोरहा कल्याणपुर में शिक्षा चौपाल का आयोजन

शंकरगढ़। विकास खंड शंकरगढ़ के प्राथमिक विद्यालय घोरहा कल्याणपुर में गुरुवार को शिक्षा चौपाल का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता खंड शिक्षा अधिकारी शिव अवतार ने की। ग्राम पंचायत के उपस्थित अभिभावकों एवं संभ्रांतजनों से मुखातिब बीईओ ने कहा कि निपुण भारत मिशन के उद्देश्यों की सफलता के लिए जन भागीदारी एवं सामूहिक सहभागिता को आगे बढ़ते हुए इस तरह के कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। बीईओ ने कहाकि शिक्षा एक सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है, जो इंसान के व्यक्तित्व को निखारती है और समाज में कल्याणकारी परिवर्तन लाती है। शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को चरित्रवान बनाना है। इसमें शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा जीवन को जीने योग्य बनाती है, लेकिन लर्निंग आपको आगे बढ़ती है। नई शिक्षा नीति में लर्निंग (सीखने) के द्वारा डूइंग (करने) प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया है। प्रधानाध्यापक बृजेश कुमार सिंह ने विद्यालय में संचालित समस्त शैक्षिक योजनाओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। निपुण भारत मिशन के अहम बिंदुओं पर विद्यालय की कार्य योजना को प्रस्तुत किया गया। रीड एलांग, निपुण लक्ष्य एप के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करने की प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला गया। चौपाल में ग्राम प्रधान राममिलन, उदयभान, रामलोचन, मनमोहन सिंह, दिलीप सिंह, वंदना केसरवानी, नेहा मिश्रा, सुषमा सिंह के साथ गांव के तमाम लोग उपस्थित रहे।

विकास भवन में नौकरी लगाने के बहाने 50हजार ठगे, शिकायत

घूरपुर। नौकरी लगाने के बहाने भोले भाले लोगों को जालसाज अपने झांसे में फंसाकर लोगों को कंगाल कर दे रहें है। इसी तरह का एक और मामला थाना घूरपुर में गुरुवार के दिन आया है। निशांक त्रिपाठी पुत्र दीना नाथ त्रिपाठी ग्राम निवासी बथुई थाना करारी कौशांबी झलवा स्थित एक हॉस्पिटल में नौकरी करता था। इसी बीच घूरपुर थाना के बगबना गांव निवासी दीनदयाल पुत्र लालता प्रसाद नामक युवक से मुलाकात हुई। दीनदयाल ने उसे विकास भवन में संविदाकर्मी के रुप में नौकरी लगवाने की झांसा देते हुए उससे तत्काल 50हजार रुपए की मांग की तब पीड़ित युवक ने इसी वर्ष के 25जूलाई को अपने बैंक खाते से 22हजार रुपए उसके खाते में ट्रांसफर कर दिया। 28हजार रुपए रिश्तेदार से लेकर उसे नगद दिया। कुछ दिन बाद नौकरी नहीं लगी तो पीड़ित ने रुपए वापस करने का दबाव बनाने लगा तो वह बहाने और आनाकानी करने लगा। जिस पर पीड़ित थकहार कर गुरुवार दिन घूरपुर थाने में के नामजद शिकायती देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने आरोपित युवक से मोबाईल पर संपर्क किया तो वह कुछ दिन बाद देने की बात कही। मामले में पुलिस जांच पड़ताल कर रही है।

प्रधान पर जानलेवा हमला करने वाले आरोपी पर नहीं हुई कोई कार्रवाई

ग्राम प्रधान ने डीजीपी, पुलिस आयुक्त समेत विभागीय उच्चाधिकारियों से की शिकायत

कोरांव। प्रयागराज।अखिल भारतीय प्रधान संगठन के मंडल महामंत्री ग्राम प्रधान अलह्वा तथा वरिष्ठ पत्रकार अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे पर जानलेवा हमला करने वाले आरोपी के विरुद्ध पुलिस प्रलोभन के चक्कर में आकर अभी तक एफआईआर दर्ज नहीं किया है। मामले की शिकायत ग्राम प्रधान व वरिष्ठ पत्रकार के द्वारा प्रदेश के डीजीपी, पुलिस आयुक्त समेत तमाम वरिष्ठ अधिकारियों से शिकायत कर जांच व कार्रवाई की मांग की है। ज्ञातव्य हो कि ग्राम प्रधान अलहवा इंटरलॉकिंग सड़क निर्माण कार्य के लिए मार्ग पर किए गए अतिक्रमण की सफाई पाल बस्ती अल्हवा में गत दस सितंबर को करा रहे थे, इसी बीच अल्हवा गांव के कोटेदार व उसके पुत्र के द्वारा प्राण घातक हमला कर दिया गया था। हमले में वे अपने आप को खुद बाल बाल बचा लिए थे। कोटेदार देख लेने की धमकी दी अपशंद कहा और अमानवीयता से पेश आया। साथ ही सरकारी और ग्राम पंचायत के प्रशासनिक कार्यों में व्यवधान डाला। ग्राम प्रधान ने मामले की शिकायत थाना पुलिस कोरांव से की जिस पर पुलिस ने महज 151 की कार्रवाई कर इति श्री कर ली। पुलिस ने बाप बेटे में बाप को थाने से छोड़कर बेटे के विरुद्ध 151 की कार्रवाई की है। ग्राम प्रधान ने मामले में सुसंगत धाराओं में एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई की मांग की है। इस मामले में मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज ने भी पुलिस आयुक्त यमुनानगर को ग्राम प्रधान पर किए गए जानलेवा हमले मामले में कार्रवाई करने हेतु निर्देशित किया है। ग्राम प्रधान पर हमले को लेकर ग्राम प्रधान संगठन के पदाधिकारी व पत्रकार संगठन के पदाधिकारियों में रोष देखा जा रहा है। अगर पुलिस ने दो दिन में सुसंगत धाराओं में कार्रवाई नहीं की तो 23 सितंबर को मंडलायुक्त एवं जिलाधिकारी से पत्रकारो एवं ग्राम प्रधान संगठन का प्रतिनिधिमंडल मिलकर शिकायत दर्ज कराएगा।

उच्चको ने वाशिंग पाउडर विक्रेता को पीटकर किया अधमरा पाउडर व नगदी समेत फरार

अखंड भारत संदेश

सिरसा। मेजा इलाकाई कोतवाली क्षेत्र में एक बार फिर चोरों-उचक्को ने पांव पसारने लगे हैं। मेजा के कुंवरपट्टी-तंदरिया गांव के बीच सूनसान जगह पर वाशिंग पाउडर विक्रेता को पीटकर अधमरा कर पाउडर व रुपए छीनने का मामला सामने आया है। मरणासन्न अवस्था में विक्रेता को सीएचसी रामनगर भेजा गया जहां हालत गंभीर देख कर वहां से शहर के लिए रेफर कर दिया गया। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार मांडा थाना क्षेत्र के दिघिया गांव में निर्मल वाशिंग पाउडर की कंपनी है। उसका मालिक संदीप कुमार टेंपो पर वाशिंग पाउडर लादकर गांव-गांव में फेरी करता है। रोज की तरह वह बुधवार को टेंपो पर वाशिंग पाउडर लादकर मेजा थाना क्षेत्र के कुंवरपट्टी तंदरिया गांव की तरफ गया था। आरोप लगा है कि वहीं दोपहर करीब 12 बजे वह दोनों गांव के सूनसान रास्ते पर पहुंचा ही था कि वहां मौजूद तीन चार लोग उसकी टेंपो रोककर मारपीट कर उसके पास से 6-7 हजार रुपए छीन लिया और ये 60-70 किलो वाशिंग पाउडर भी छीनकर उसे मरणासन्न अवस्था में छोड़कर भाग गए। जानकारी पर उसी क्षेत्र के उसके रिश्तेदारों को जानकारी हुई तो वहां पहुंचे और देखा कि खाली टेंपो पड़ा हुआ है और वह घायल अवस्था में पड़ा है। रिश्तेदार उसे लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रामनगर ले गए। जहां उसकी हालत गंभीर देख कर डाक्टरों ने रेफर कर दिया। परिवार के लोग उसे करछना के देवरी स्थित आर्गन अस्पताल में भर्ती कराया। जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। उसे होश आने पर ही मामला स्पष्ट हो पाएगा। थानाध्यक्ष राजेश उपाध्याय ने बताया कि छिनैती नहीं हुई है वाहन पास को लेकर मारपीट हुई है। जांच की जा रही है।

सुजावन देव मंदिर पर होगा 11 करोड़ पार्थिव शिवलिंगों का निर्माण

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। भगवान श्री राम की जन्म भूमि अयोध्या में श्री राम मंदिर के निमित्त के उपलक्ष्य में घूरपुर के यमुना स्थित पौराणिक एवम धार्मिक आस्था के केंद्र सुजावन देव मंदिर में 11करोड़ शिव लिंगों का निर्माण किया जाएगा। कार्यक्रम के मीडिया प्रभारी शिवम द्विवेदी ने बताया कि आयोजन के अधिष्ठाता स्वामी बृजेशानंद जी महराज होगें। कार्यक्रम 27नवंबर से26दिसंबर तक नियमित चलता रहेगा। इस बीच प्रतिदिन पूजन आरती हवन भी कि जायेगी।और प्रतिदिन सुबह से शाम तक भंडारे का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम की सफलता के लिए स्वामी बृजेशानंद महराज और मीडिया प्रभारी शिवम द्विवेदी लगातार क्षेत्र में बैठक कर और धर्म और समाज के लोगो को जागरूक कर रहे है। राम मंदिर निर्माण के पक्ष में फैसला आने पर 11करोड़ शिव लिंग निर्माण का संकल्प लिए थे महराज : सुप्रीम कोर्ट में राम मंदिर निर्माण के लिए चल रहे केस के दौरान राम मंदिर निर्माण के पक्ष में फैसला आने पर स्वामी बृजेशानद महराज ने 11करोड़ शिव लिंग निर्माण का संकल्प लिए थे। फैसला आने के बाद ही महराज ने 9नवंबर 2019 को संकल्प पूरा करने हेतु संगम के परेड ग्राउंड से संगम तक कलश यात्रा निकालनी शुरू की तो तत्कालीन जिला अधिकारी ने कोविड 19 के चलते लगाए गए 144धारा के मद्देनजर जिलाधिकारी ने रोक लगा दी थी। उसके बाद स्वामी बृजेशानन्द ने भगवान राम वन गमन स्थली जहां पर एक रात्रि के लिए श्री राम लक्ष्मण सीता रुक कर विश्राम किए थे। इसी पवित्र क्षेत्र के स्थान पर संकल्प पूरा किए जानें का मन बना आगे की रूपरेखा की तैयारी में जुट गए। इस पवित्र कार्य में पूरी जोर शोर से दिन रात लगे कार्यक्रम के मिडिया प्रभारी शिवम द्विवेदी की अतुलनीय भूमिका की क्षेत्र में खूब सराही जा रही है।

मुम्बई से घर आ रहा व्यक्ति हुआ जहरखुरानी का शिकार

उतरांव। हंडिया तहसील के थाना सरायममरेज अनर्गत मखदुमपुर गांव निवासी मुम्बई से आते वक़्त हुआ जहर खुरनी का शिकार। आप को बताते चले के थाना सराय ममरेज अनर्गत मखदुमपुर गांव निवासी अवधेश कुमार कुशवाहा पुत्र राजेंद्र प्रसाद जो नेवी मर्चेंट महाराष्ट्र के जयगढ़ पोर्ट पर कुक के पद पर कार्यरत है।वहीं अवधेश कुमार 19 सितम्बर को मुम्बई एल टी टी से ट्रेन पकड़ कर अपने घर मखदुमपुर आ रहे थे। लेकिन प्रयागराज पहुंचते जहर खुरनी का शिकार हो गये। अवधेश कुमार का छोटा भाई धर्मेंद्र कुमार ने बताया की भाई से फोन पर बात हुई और कहाँ की दो तीन घंटे मे प्रयागराज पहुंचने वाले है। दो घंटे के बाद फोन किया तो अवधेश कुमार का फोन नहीं उठा बार बार कोशिश करने पर गुरुवार के सुबह तड़के लगभग 5 बजे किसी अंजान व्यक्ति फोन उठाया और बताया की थाना फूलपुर के पास प्रतापपुर तिराहे पर यह व्यक्ति बेहोशी हालत मे यही पड़ा है।सूचना पाकर घर वाले पहुँचे देखा की अवधेश कुमार बेहोशी हालत मे पड़ा था और बैग भी गायब था। वहीं बैग मे पासपोर्ट मार्कशीट व अन्य जरूरी कागजात थे। वहीं अवधेश कुमार का उतरांव क्षेत्र के सहारा हॉस्पिटल के डॉ. राशिद साहब, डॉ. ग्यास अहमद के देखरेख मे इलाज चल रहा है। अवधेश कुमार का भाई धर्मेंद्र कुमार गुरुवार को थाना फूलपुर मे पहुँचकर लिखित तहरीर देकर कानूनी कार्यवाही की मांग की।

अस्पतालों में लग रही मरीजों की कतार

डेंगू के डंक ने पसारे पैर, 300 पहुंची संक्रमितों की संख्या

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बारिश के बाद जिले में कई जगहों पर हुए जलभराव के कारण डेंगू के डंक ने तेजी से पैर पसारने शुरू कर दिए हैं। मरीजों की संख्या तेजी के साथ बढ़ी है। यूनिफाइड डिजीज सर्विलांस पोर्टल (यूडीएसपी) पर संक्रमितों की संख्या 300 पहुंच गई है।जिला मलेरिया विभाग के मुताबिक जिले में कुल डेंगू के मरीजों की संख्या 91 है। लेकिन यूडीएस पोर्टल पर संक्रमितों की संख्या 300 पहुंचने पर अब जिला स्वास्थ्य और मलेरिया विभाग आंकड़े दुरुस्त करने में लग गया है। सरकारी अस्पतालों में बुखार के मरीजों की लंबी कतारें नजर आ रही हैं। अस्पताल पहुंच रहे हर दूसरे व्यक्ति में डेंगू जैसे लक्षण दिखाई दे रहे हैं। सरकारी अस्पतालों से ज्यादा तो निजी अस्पतालों में डेंगू के मरीज भर्ती हैं। हालांकि सीएमओ का कहना है कि यूडीएस पोर्टल पर एनएस वन कार्ड पर पॉजिटिव पाए गए मरीजों की संख्या है। जिले में अभी स्थिति नियंत्रण में है। दरअसल, इसी साल यूडीएस पोर्टल की शुरूआत की गई है। पोर्टल पर सरकारी के साथ निजी अस्पतालों को भी अस्पताल में भर्ती डेंगू मरीजों का ब्योरा देना अनिवार्य किया गया है। लेकिन अभी तक जिले के करीब 50 निजी अस्पतालों ने ही पोर्टल पर अपने यहां कार्ड की जांच में पॉजिटिव पाए गए डेंगू मरीजों की रिपोर्ट भेजी है।मरीजों की संख्या इससे कहीं ज्यादा होने का अनुमान है।विभाग के दावों की पोल सरकारी और निजी अस्पतालों में लग रही मरीजों की लंबी कतारें खोल रही हैं। शहर के एक अस्पताल में तो डेंगू से संक्रमित सीआरपीएफ और आईटीबीपी के करीब 50 से अधिक जवान भर्ती हो गए थे। स्वरूप रानी नेहरू चिकित्सालय में दारागंज के रहने वाले एक ही परिवार के तीन सदस्य डेंगू संक्रमित पाए गए हैं। इनका भी इलाज चल रहा है। लेकिन स्वास्थ्य विभाग के अनुसार ये भी डेंगू पॉजिटिव नहीं हैं।

अनियंत्रित बाइक ने हाकर को मारी टक्कर, घायल

सहसों। थरवई थाना क्षेत्र के भोपतपुर गांव निवासी रामकुमार सोनी उर्फ पुट्टीलाल गुरुवार को समाचार पत्र वितरण करने के लिए सहसों चौराहे से साइकिल द्वारा जा रहा था। कि जैसे ही वह प्रयागराज गोरखपुर राजमार्ग पर भोपतपुर गांव के सामने पहुंचा था अनियंत्रित बाइक सवार ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। जिससे हाकर रामकुमार सोनी साइकिल सहित सड़क पर गिरकर घायल हो गया। मौके पर पहुंचे आसपास के लोगों ने हाकर को उठाकर स्थानीय अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया। बाइक सवार टक्कर मारने के पश्चात फरार हो गया।

24 को होगा विराट दंगल का आयोजन

उतरांव। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 24 सितंबर दिन रविवार को स्व० रामसुंदर यादव स्मारक समिति के तत्वाधान जगतपुर रेलवे क्रासिंग के पास में विराट दंगल एवं मेला महोत्सव का आयोजन किया गया है उक्त आशा की जानकारी प्रबंधक राजीव कुमार यादव ग्राम प्रधान पहाड़पुर ने दी है।

ट्रक ने तीन बाइको को रौंदा दो की हुई मौत, तीन गंभीर

युनाइटेड भारत

फूलपुर। इफको पुलिस चौकी के पास बुधवार शाम करीब नौ बजे फूलपुर की तरफ आ रहे ट्रक ने बाइक सवार ओम प्रकाश निवासी दल्लू का पूरा मुंगरा बादशाहपुर जौनपुर एवं अमित कुमार (24) निवासी जरौना बरसठी जनपद जौनपुर को रौंद दिया। तेज रफ्तार ट्रक चालक फूलपुर में तीन अलग-अलग स्थानों पर तीन बाइकों को रौंदते हुए भाग निकला। एक बाइक सवार के शव को 500 मीटर व एक बाइक को 16 किलोमीटर तक घसीटता हुआ चला गया। टंकी फटने से डीजल खत्म होने पर ट्रक रूका। इसके बाद ही पुलिस चालक को पकड़ पाई। हादसे में दो युवकों की मौत हो गई और तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे में ओम प्रकाश की मौके पर मौत हो गई। अमित गंभीर रूप से घायल हो गया। बाइक ट्रक में फंस गई, जिसे घसीटते हुए चालक ट्रक लेकर भागने लगा। घिसटते हुए बाइक का आधा हिस्सा करीब डेढ़ किमी दूर फूलपुर नहर की पुलिया पर गिर गया।बेतहाशा भाग रहा ट्रक चालक बस अड्डे के पास बाइक से जा रहे धीरेंद्र पाल (40) निवासी तेंदुई सराय इनायत को भी रौंद दिया। घटना में बाइक सवार युवक का शव ट्रक में फंस गया। करीब 500 मीटर दूर बाबूपुर गांव के सामने मस्जिद के पास शव का क्षत-विक्षत आधा हिस्सा छूट गया और कुछ हिस्सा ट्रक में ही फंसा रह गया। तहसील के सामने ट्रक ने तीसरे बाइक सवार को भी टक्कर मार दी। बाइक पर सवार दो लोग घायल हो गए। यह हादसा देख फूलपुर के ग्रामीणों और इंस्पेक्टर दीनदयाल सिंह ने जौनपुर की तरफ भाग रहे ट्रक का पीछा करने शुरू किया। फूलपुर से करीब 20 किमी दूर प्रयागराज-जौनपुर मार्ग पर मुंगरा बादशाहपुर थाने के पहले रेल क्रॉसिंग पर गड्ढे में ट्रक का पहिया जाने से जब ट्रक में झटका लगा तक फंसा बाइक का आधा हिस्सा गिर गया। क्रॉसिंग से तीन किलोमीटर आगे ट्रक चालक को पुलिस पकड़ पाई।

बीस किमी तक ट्रक को दौड़ाती रही पुलिस, टंकी फटी तो रूका ट्रक

फूलपुर में तीन अलग-अलग स्थानों पर बाइक सवारों को रौंदकर भाग रहे ट्रक को स्थानीय लोगों के साथ इंस्पेक्टर फूलपुर दीनदयाल सिंह पुलिस फोर्स के साथ दौड़ाते रहे, लेकिन चालक वाहन लेकर भागता रहा। मुंगरा बादशाहपुर थाने के आगे ट्रक पहुंचा तो अचानक ट्रक की डीजल टंकी फट गई। जिससे डीजल गिर गया। तब जाकर ट्रक रूका। मुंगराबादशाहपुर एवं फूलपुर पुलिस ने पहुंचकर ट्रक चालक को पकड़ लिया।

मण्डलीय समीक्षा बैठक सम्पन्न

मण्डलायुक्त ने जल निगम, सिंचाई विभाग, पीडब्लूडी विभाग से सम्बंधित शिकायतों के निस्तारण का दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मण्डलायुक्त ने जल निगम, सिंचाई विभाग, पीडब्लूडी विभाग से सम्बंधित शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता का फीडबैक खराब पाये जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण किए जाने के दिए निर्देश। मण्डलायुक्त ने जनपद प्रतापगढ़ एवं फतेहपुर में स्वास्थ्य सम्बंधी योजनाओं के क्रियान्वयन में शिथिलता पाये जाने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए मुख्य चिकित्साधिकारियों को चेतावनी देते हुए स्वास्थ्य सम्बंधी योजनाओं के क्रियान्वयन में प्रभावी कार्यवाही करने के दिए निर्देश। मण्डलायुक्त ने प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के अन्तर्गत नए प्राप्त आवेदन पत्रों की शीघ्रता के साथ जांच करते हुए पात्र लोगो को योजना से लाभान्वित कराये जाने के दिए निर्देश जल जीवन मिशन से सम्बंधित कार्यों में तेजी लाये जाने के दिए निर्देशकर-करेत्तर की समीक्षा करते हुए सभी विभागों को राजस्व वसूली बढ़ाये जाने के दिए निर्देशमण्डलायुक्त ने कार्य योजना बनाकर शत-प्रतिशत आर0सी0 की वसूली सुनिश्चित किए जाने के दिए निर्देश शराब बिक्री में किसी भी दशा में ओवर रेटिंग की शिकायत न होने के दिए निर्देश। मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत की अध्यक्षता में गुरूवार को आईजीआरएस, विकास प्राथमिकता कार्यों की मण्डलीय समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में मण्डलायुक्त ने आईजीआरएस पोर्टल की शिकायतों के निस्तारण एवं उसकी गुणवत्ता की समीक्षा करते हुए सभी सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से निर्धारित समयसीमा में अनिवार्य रूप से किया जाये। मण्डलायुक्त ने कहा कि आईजीआरएस से सम्बंधित शिकायतों का निर्धारित समयसीमा में निस्तारण हो, यह मा0 मुख्यमंत्री जी की शीर्ष प्राथमिकता पर है। उन्होंने सभी अधिकारियों को इसे गम्भीरता से लेने तथा निर्धारित समयसीमा के अंदर शिकातयों का निस्तारण सुनिश्चित कराये जाने के लिए कहा है। समीक्षा में जल निगम, सिंचाई विभाग, पीडब्लूडी से सम्बंधित शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता का फीडबैक खराब पाये जाने पर मण्डलायुक्त ने निस्तारण की गुणवत्ता पर नाराजगी व्यक्त करते हुए शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से कराये जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने कहा कि शिकायत के निस्तारण से शिकायतकर्ता को अवगत भी करा दिया जाये। उन्होंने कहा कि किसी भी दशा में शिकायतों का निस्तारण निर्धारित समयसीमा के बाद नहीं होना चाहिए। मण्डलायुक्त ने कहा कि आईजीआरएस के लिए विभागों के बनाये गये सभी नोडल अधिकारी पोर्टल पर हर दिन नजर रखे। उन्होंने आईजीआरएस शिकायतों के निस्तारण में अत्यधिक असंतोष जनक फीडबैक पाये जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए उन्होंने शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिए जाने के निर्देश दिए है साथ ही असंतोष जनक फीडबैक देने वाले शिकायतकताओं से उसका कारण भी जानने के लिए कहा है। मण्डलायुक्त ने कहा कि यदि कोई शिकायत किसी विभाग/अधिकारी से सम्बंधित नहीं है, तो उस शिकायत को तत्काल सम्बंधित अधिकारी के पास प्रेषित कर दिया जाये, जिससे कि शिकायतों का निस्तारण समय सीमा में हो सके।मण्डलायुक्त ने रियल टाइम खतौनी, अंश निर्धारण एवं घरौनी वितरण के कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्होंने सम्बंधित अधिकारियों को इस कार्य में तेजी लाये जाने के निर्देश दिए है। जनपद प्रयागराज में घरौनी बनाने की प्रगति कम पाये जाने पर इसमें तेजी लाये जाने के निर्देश दिए है। मण्डलायुक्त ने ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी से सम्बंधित निवेशकों की धारा-80सी में कंवर्जन एवं अन्य विषयों से सम्बंधित लम्बित अनापत्ति से सम्बंधित आवेदनों को शीघ्रता से निस्तारण किए जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने सभी जनपदों के जिलाधिकारियों को निवेशकों/ उद्यमियों के साथ बातचीत करते रहने व उनकी समस्याओं का शीर्ष प्राथमिकता पर समाधान सुनिश्चित कराये जाने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि कुछ प्रकरणों में निवेशकों/ उद्यमियों को अभी तक जमीन की उपलब्धता नहीं हो पायी है। मण्डलायुक्त ने सर्वे कराकर उद्यमियों को जमीन की उपलब्धता सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश दिए है। विद्युत विभाग की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने अधिकारियों से कहा कि प्रयागराज में वर्ष महाकुम्भ-2025 का आयोजन होने जा रहा है। उन्होंने बिजली विभाग के अधिकारियों को इसके दृष्टिगत अपने विभाग की व्यवस्था को चाक-चैबंद बनाने के लिए कहा है। मण्डलायुक्त ने राष्ट्रीय तथा राज्य मार्ग हेतु भूमि अधिग्रहण सहित अन्य कार्यों की प्रगति के बारे में जानकारी लेते हुए जनपद कौशाम्बी में बैनामा के कार्य की प्रगति धीमी पाये जाने पर अधिकारियों से बैनामा, भूस्वामियों के भुगतान आदि के लम्बित प्रकरणों को प्राथमिकता पर लेते हुए उनका निराकरण शीघ्रता से सुनिश्चित कराये जाने के लिए कहा है, जिससे कि राष्ट्रीय तथा राज्य मार्ग के निर्माण कार्यों को निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत पूरा कराया जा सके। मण्डलायुक्त ने प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने पीएम स्वनिधि योजना के अन्तर्गत पहले दो ऋणों का भुगतान जिन लाभार्थियों के द्वारा किया जा चुका है, उन लाभार्थियों को तीसरे ऋण के आवेदन के भुगतान को तेजी के साथ निस्तारित करने के निर्देश दिए है।

चोरी हुई बाइक का पुलिस ने किया चालान, नहीं लग रहा सुराग

कोरांव। कोरांव बाजार के कोऑपरेटिव बैंक के पास से 24 मई 2022 को शिक्षक मनोज भारती की चोरी गई बाइक का कोई सुराग नहीं लग रहा है। चौंकाने वाली बात यह है कि शिक्षक के द्वारा 24 मई को ही कोरांव पुलिस को लिखित तहरीर देकर ऑनलाइन एफआईआर दर्ज कराई थी। जिस गाड़ी को चोरी हो जाने की ऑनलाइन एफआईआर शिक्षक द्वारा दर्ज कराई गई थी। उसी बाइक का 6 नवंबर 2022 को पुलिस ने चालान काटा है। जब शिक्षक के नाम 6 नवंबर 2022 को चालान कटा तो वह दंग रह गया। चालान के समय पुलिस ने जिसकी फोटो अपलोड की है। उसका नाम शिव शंकर निवासी गाढ़ा थाना कोरांव रूप में शिक्षक के द्वारा पहचान बताई गई। शिक्षक ने बताया कि मेरी चोरी गई हुई बाइक का चालान पिन कोड के आधार पर शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के कल्याणपुर नामक स्थल पर चालान काटा गया है। शिक्षक मनोज भारती ने कहा जब चोरी गई बाइक का ऑनलाइन एफआईआर दर्ज होने के बाद भी पुलिस ने चालान काट दिया। ऐसे में ऑनलाइन एफ आई आर का औचित्य ही क्या रह गया। शिक्षक ने कहा इतना सब कुछ होने के बावजूद भी अभी तक मेरी बाइक का कोई सुराग नहीं लग पा रहा है।

गणेश महोत्सव में बही हास्य रस की गंगा

अखंड भारत संदेश

नैनी। सर्वजनिक गणपति उत्सव मंडल.नैनी प्रयागराज एवं आभा ग्रामीण विकास सेवा संस्थान, नैनी, प्रयागराज द्वारा श्रमिक बस्ती, नैनी में आयोजित यमुनापार विशाल सांस्कृतिक गणपति महोत्सव मे गुरुवार को प्रथम सत्र में मेहंदी लगाओ प्रतियोगिता एवं रंगोली बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न विद्यालयों की छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और मेहंदी एवं रंगोली के एक से एक सुंदर नमूने प्रस्तुत किये` राधा रमण इंटर कॉलेज की अंग्रेजी प्रवक्ता पुष्पा दुबे एवं कला प्रवक्ता भावना मंगरुलकर ने निर्णायक की भूमिका निभाई। सायं काल गणेशोत्सव के दूसरे सत्र में हास्य नाटिका प्रतियोगिता एवं भजन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ` छोटे-छोटे बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई हास्य नाटिकाओं ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया` वहीं भजन प्रतियोगिता में बच्चों के सुमधुर भजन सुनकर श्रोता गण भक्तिमय हो गए एवं गणपति बप्पा की जय के जयकारे लगाने लगे` गणेशोत्सव के संयोजक महेश मधुकर ने सपत्नीक भगवान गणेश की आरती की` कार्यक्रम का कुशल संचालन बालकृष्ण मिश्र ने किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से महेश मधुकर मंगरुलकर, रवि करण सिंह, राजकुमार तिवारी, आर के शुक्ला, बालकृष्ण मिश्रा, पं संजय व्यास, अनिल विश्वकर्मा, चंद्रकांत मंगरुलकर, सुमन पाठक, जतिन ठाकुर आनंद सिंह, पुष्पेंद्र प्रताप सिंह राजेश मिश्रा, अतुल सिंह, अनंता राखे, आनन्द शर्मा, रेखा श्रीवास्तव, भावना मंगरुलकर, ज्योति मंगरुलकर, अलका विश्वकर्मा, उषा पांडेय, पुष्पा सिंह, मंजू तिवारी, ममता श्रीवास्तव, सुलोचना जायसवाल, गुड़िया सिंह, सीता मिश्रा, रिंकी गिरी, पिंकी गुप्ता, सरोज सिंह आदि ने सहयोग किया।

झूंसी में चौड़ीकरण की जद में आये 850 लोगों को मिला नोटिस

ओल्ड जीटी रोड, छतनाग रोड़ के साथ नई झूंसी से पुरानी झूंसी को जोड़ने वाली सड़क झूंसीका होगा चौड़ीकरण

अखंड भारत संदेश

झूंसी। महाकुंभ 2025 से पूर्व प्रयागराज विकास प्राधिकरण शहर के साथ नैनी, झूंसी में सकरी सड़को का चौड़ीकरण करने जा रहा है। झूंसी में चौड़ीकरण की जद में आए 850 मकान, दुकान मालिको को अपना पक्ष रखने के लिए नोटिस भी दे दी गई है। ध्वस्तीकरण के बाद कई भवन स्वामी बेघर हो जाएंगे। इस वजह से लोगों में हड़कंप मचा हुआ है। माघ मेले व कुंभ मेले के दौरान जिन सड़कों पर जाम लगता था उन सभी सड़कों को चौड़ा किया जाएगा पुरानी झूंसी से पुरानी जीटी रोड को जोड़ने वाली सड़क को 12 मीटर चौड़ा किया जाएगा। इस सड़क पर दो सौ मकान दुकान चौड़ीकरण की जद में है। पुरानी जीटी रोड को भी अंदावा से गंगा घाट तक 24 मीटर चौड़ा किया जाएगा चौड़ीकरण की जद में आए 300 लोगो को पीडीए द्वारा नोटिस मिल चुका है। इसी तरह छतनाग रोड पर भी 350 लोगो को पीडीए ने नोटिस दिया है। वाराणसी मार्ग से छतनाग गंगा घाट तक सड़क 12 चौड़ा किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए पीडीए के जोनल संजीव कुमार ने बताया कि जिलेभर में चौड़ीकरण की जद में आए करीब 1500 लोगों को नोटिस अब तक दिया जा चुका है। जिसमें 850 मकान दुकान मालिक झूंसी के हैं।

दीवाल के नीचे कई बच्चों के दबने की सूचना पर हड़कंप

झूंसी। थाना क्षेत्र के नई झूंसी मलाही टोला में गुरुवार की शाम एक कच्ची दीवार भर भरा कर गिर पड़ी। जिसके पास कई बच्चे खेल रहे थे उसमें से एक बच्चा दीवाल के मलबे में दब गया बाकी सभी भाग गए। कई बच्चों के दबे होने की सूचना ग्रामीणों को हुई तो मौके पर लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई लोग जल्दी-जल्दी मालवे को हटाने लगे किशोर को बाहर निकला गया। जिसमे मामूली चोट आई है। दीवाल की चपेट में आने से एक ई रिक्शा भी पूरी तरह से नष्ट हो गया। मलाही टोला में राम प्रसाद के कच्चे मकान की एक दीवाल गुरुवार की शाम अचानक गिर गई। पास में खेल रहे कई बच्चों में से एक बच्चा दीवाल के नीचे दब गया। मामले की सूचना मिलते ही लोगों में हड़ताल मच गया। मौके पर जुटे लोग फावड़ा कुदारी लेकर मालवे को हटाने लगे और नीचे दबे हुए किशोर अंश 11 पुत्र मूलचंद को बाहर निकल अस्पताल ले गए जिसे लोगों को लगा कि यहां और भी बच्चे खेल रहे थे कहीं और कोई तो नहीं दवा है सारे मालवे को हटाया गया तो उसके नीचे से दबे ई रिक्शा को भी निकाला गया। मौके पर एसओ झूंसी भी फोर्स के साथ पहुच गए थे।

अकीदत व ऐहतेराम के साथ हातिफ हुसैन के अजाखाने से निकाला गया जुलूस अलवेदा या हुसैन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शाहगंज पत्थरगली स्थित इमामबाड़ा स्व हातिफ हुसैन से नजीब इलाहाबादी के संचालन व कयादत में अकीदत व ऐहतेराम से जुलूस अलवेदा या हुसैन निकाला गया। रेयाज मिर्जा व शुजा मिर्जा ने मर्सिया पढ़ा। मौलाना जरगाम हैदर साहब कि ब्ला ने मजलिस को खिताब किया।ताबूत इमाम हुसैन , जुलजनाह,अलम व ताज़िया भी जुलूस में साथ साथ रहा। अन्जुमन हाशिमया,अन्जुमन हुसैनिया कदीम , अन्जुमन नकविया, अन्जुमन शब्बीरिया, अन्जुमन मजलूमिया, अन्जुमन असगरिया, अन्जुमन मोहाफिजे अजा ने सिलसिलेवार नौहा पढ़ते हुए जुलूस निकाला। अन्तिम में अन्जुमन गुन्चा ए कासिमया बख्शी बाजार सभी तबर्रुकात को लेकर सब्जी मंडी स्थित अजाखाना स्व असद रजा में पहुंच कर जुलूस को सम्पन्न कराया। वापसी में शायर ए अहलेबैत स्व मोअज्जम पाशा के अजाखाने पर देर रात मजलिस को जहीर अब्बास ने खिताब किया तो अन्जुमन गुन्चा ए कासिमया ने नौहा पढ़ा। मजलिस व जुलूस में प्रमुख रूप से अदीब रजा,नजीब रजा, हबीब रजा ,जरखेज अब्बास, जैन अब्बास, जीशान, रिजवान ,वजीर हैदर, फरुख, ताबिश सरदार, हाली हैदर, आब्दी भाई, इशत आब्दी, यशब आब्दी, मेंहदी अब्बास, सैय्यद मोहम्मद अस्करी आदि शामिल रहे। दायरा शाह अजमल में नूह रिजवी के आवास पर मोहम्मद मेंहदी रिजवी की ओर सालाना मजलिस को मौलाना अख्तर हुसैन साहब कि ब्ला ने खिताब किया तो कामरान रिजवी ने मर्सिया पढ़ा। अन्जुमन गुन्चा ए कासिमया बख्शी बाजार के नौहाख्वानो ने पुरदर्द नौहा पढ़ा। मिर्जा अजादार हुसैन, जफर रजा, शहन्शाह आब्दी, अहसन रजा, अरशद नकवी, आसिफ रिजवी, नजमुल हसन, जहीर अब्बास आदि शामिल रहे।

यमुना नदी में नम आंखों से सैराया ताज़िया व इमामबाड़े का फूल

प्रयागराज। दायरा शाह अजमल इमामबाड़ा नवाब अब्बन साहब मरहूम के अजाखाने में रखा ताज़िया व तबर्रुकात पर चढ़े फूलों को अश्रुपूरित नेत्रों से यमुना नदी में अलवेदा नौहा पढ़ते हुए सैराया (प्रवाहित)गया। कदीमी चली आ रही रवायत के अनुसार इमामबाड़े के चौथी पीढ़ी के अस्करी अब्बास व पांचवीं पीढ़ी के अर्श अब्बास व अकबर अब्बास प्रातः ही यमुना नदी पहुंचे और नौहों और मातम की सदाओं के साथ नाव से बीच धारा में फूलों और ताज़िया को यमुना नदी की गोदी में समर्पित कर दिया। नजीब इलाहाबादी ने सब के लिए दूआ की तो शादाब जमन , अस्करी अब्बास 'साहिर' ,अली रजा रिजवी ,शबीह अब्बास रिजवी ,असद अली रिजवी ,जीशान हैदर ,रजा ,कुमैल ,ऐजाज ,आसिफ रिजवी , दानियाल इलाहाबादी आदि ने पुरदर्द नौहा पढ़ते हुए पुरसा पेश किया।

कार्यालय ग्राम पंचायत देवघाट विकास खण्ड - कोरांव, प्रयागराज

अल्पकालीन निविदा सूचना

पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त योजना एवं मनरेगा के अन्तर्गत ग्राम पंचायत–देवघाट के अन्तर्गत पंजीकृत ठेकेदारों से अद्योलिखित विवरण के अनुसार कार्य कराने हेतु दिनांक 22.09.2023 से दिनांक 06.10.2023 सीलबन्द लिफाफे में निविदा आमंत्रित की जाती है, जो दिनांक 07.10.2023 को सायं 2 बजे गठित समिति के समक्ष खोली जाएगी। निविदा प्रपत्र 10 रू0 के स्टाम्प पेपर के साथ ग्राम पंचायत के कार्यालय में जमा कराना अनिवार्य होगा। किसी एक अथवा समस्त निविदा को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत को होगी। निविदा प्रपत्र ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। नियम एवं शर्तो की जानकारी ग्राम पंचायत विकास अधिकारी से प्राप्त की जा सकती है।
नोट– सामग्री की मात्रा स्वीकृत प्राकलन के अनुसार बढ़ घट सकती है।

क्र0	योजना का नाम	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत	कार्य पूर्ण करने का समय
1.	पंचम राज्य वित्त 15वां केन्द्रीय वित्त	ग्राम पंचायत देवघाट में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर द्वितीय भूसा भण्डार केन्द्र का निर्माण	4.97 लाख	2 माह
	राज्य/केन्द्रीय वित्त	ग्राम पंचायत देवघाट में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल पर चारागाह की बाउण्ड्री निर्माण	1.22 लाख	2 माह

शिवलाल
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत देवघाट
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज।

शशिलेन्द्र सिंह
ग्रा0 पं0 वि0 अधि0
ग्राम पंचायत देवघाट
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/ग्राम पंचायत -निविदा/2023-24/दिनांक 21.09.2023

व्यापार मण्डल ने सदस्यता अभियान के लिये गठित की समिति

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश व्यापार प्रतिनिधिमण्डल के जिलाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार केसरवानी ने बताया कि व्यापार मण्डल इकाई सगरा सुंदरपुर बाजार के कुछ दिनों पहले भंग कर दिया गया था और वहां का कार्यवाहक अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल को बनाया गया है। उन्होंने बताया कि अब वहां व्यापार मण्डल के पुनर्गठन के लिये व्यापारियों भाईयों के सर्वसम्मति से निर्णय लिये जाने पर व्यापारियों के सम्मान, सुरक्षा के लिये सदस्यता अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि सदस्यता अभियान के गठन के लिये 11 सदस्यीय समिति का गठन किया गया है, जिसमें राम अंजोर जायसवाल, प्रदीप सिंह, राजकुमार सोनी, कृपाशंकर जायसवाल, राजेन्द्र जायसवाल, रत्नाकर तिवारी, संतोष जायसवाल, राजू जायसवाल शामिल हैं।

रेल मंत्री से मिलकर सांसद ने कानपुर इंटरसिटी ट्रेन की समय सारिणी बदलने की किया मांग

सुबह सात बजे प्रयागराज से एवं सायं तीन बजे कानपुर से चलाया जाए

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। कौशाम्बी सांसद, संसदीय आचार समिति लोकसभा के चेयरमैन, दादरा नगर हवेली एवं दमन दीव के प्रभारी विनोद सोनकर रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव से पुनः मिलकर प्रयागराज संगम से वाया उंचाहार कानपुर सेंट्रल के मध्य चलने वाली ट्रेन संख्या 14101-14102 का समय सारिणी परिवर्तित करके सुबह 7 बजे प्रयागराज संगम से कानपुर से लिए व शाम 3 बजे कानपुर से प्रयागराज संगम के लिए संचालित करवाने का अनुमोदन पत्र सौंपा।

रेल मंत्री से मुलाकात करते सांसद विनोद सोनकर।

बता दें कि क्षेत्र के लोगों ने सांसद विनोद सोनकर से 2017 में कानपुर के लिए एक्सप्रेस ट्रेन चलवाने की मांग की। वर्ष 2018 में सांसद के प्रस्ताव पर रेल मंत्रालय द्वारा कानपुर से प्रयागराज के लिए ट्रेन चला दी गई। क्षेत्रीय जनता ने ट्रेन को सुबह प्रयागराज से कानपुर के लिए संचालित करवाने की मांग की। सांसद ने रेल मंत्री से मिलकर सुबह चलवाने का पत्र सौंपा।

प्रयागराज जं. से लखनऊ जं. रेलवे लाइन के मध्य पड़ने वाले लाल गोपालगंज व गढ़ी मानिकपुर रेलवे स्टेशन पर ट्रेन संख्या-14209-14210 प्रयागराज संगम लखनऊ एक्सप्रेस ट्रेन के ठहराव करने का अनुमोदन पत्र समस्त क्षेत्रवासियों की ओर से सौंपा। इस ट्रेन के ठहराव से आमजनों को यातायात में विशेष सुविधा होगी। उक्त जानकारी सांसद विनोद सोनकर के मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र पाण्डेय ने दी है।

भगवान श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के सामूहिक आयोजन में गूंजा राधे बिहारी का भक्ति रस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर पंचायत के शिवकुटीपुरम् में सामूहिक आयोजन के तहत बुधवार की शाम श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के तहत भगवान श्रीकृष्ण की झांकी का पूजन अर्चन एवं मनोहारी भजन संकीर्तन हुआ।

चेयरपर्सन अनीता द्विवेदी ने वार्ड के लोगों के साथ आचार्य राजेश पाण्डेय की अगुवाई में विद्वानों के समूह द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य भगवान श्रीकृष्ण का पूजन अर्चन कर नगर के लोकमंगल की कामना की। कार्यक्रम में प्रयागराज के रणजीत राज के सांस्कृतिक दल ने देर रात तक मनोहारी भजन व संकीर्तन से समां बांधी। भजन गायक रणजीत राज ने यशोदा तेरा लाला बड़ा नीक लागे तथा जन्मे कन्हैया गोकुला मा बधाई जैसे

शिवकुटीपुरम में भजन संकीर्तन में झूमे श्रद्धालु, चखा महा प्रसाद

अनेक सुमधुर भजनों को सुनकर बड़ी संख्या में श्रद्धालु नर नारी मंत्रमुग्ध हो उठे दिखे। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं को राधेकृष्ण का जयघोष लगाये जाने में भी मगन देखा गया। वहीं चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी तथा क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने कहा कि भगवत कथा तथा आध्यात्मिक संकीर्तन से वातावरण में सुचिता का परिवेश मजबूत हुआ करता है। कार्यक्रम के संयोजक राजकुमार शुक्ल, रामबिहारी मिश्र, प्रदीप त्रिपाठी, राजमणि मिश्र, उत्तम शुक्ल ने श्रद्धालुओं को राधेबिहारी का महाप्रसाद वितरित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक उत्कर्ष शुक्ला ने किया। इस मौके पर सभासद दारा सिंह, सभासद अनुराग पाण्डेय, छोटे लाल सरोज, प्रकाशचंद्र मिश्र, नवीन शुक्ल, दीपक पाण्डेय, हिमांशु तिवारी, प्रकाशचंद्र पाण्डेय, आरके सिंह, शिवकुमार मिश्र, धर्मेन्द्र सिंह, शास्त्री सौरभ आदि रहे।

सीओ की फटकार पर आधा दर्जन के खिलाफ घर में घुसकर मारपीट का मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सीओ की फटकार पर कोतवाली पुलिस ने चार नामजद तथा दो अज्ञात के खिलाफ घर में घुसकर मारपीट, बलवा तथा तोडफोड़ का केस दर्ज किया है। गंभीराबाद बेलहा निवासी दिनेश शुक्ला की पत्नी सुमन शुक्ला ने सीओ को दी गई तहरीर में कहा है कि बीती तीस जनवरी को जमीनी विवाद को लेकर विपक्षियों ने उसके दरवाजे पर गालीगलौज की। मना करने पर विपक्षी गांव के स्व. शिवशंकर के पुत्र गणेश शुक्ला व अंबिकेश तथा अंबिकेश की पत्नी अंतिका एवं शिवशंकर की पत्नी चिन्ता ने घर में घुसकर परिवार के सदस्यों को लाठी डंडे से मारापीटा। पीड़िता ने विरोध किया तो आरोपी उस पर भी हमलावर हो उठे।

शोर मचाने पर आरोपी घरेलू सामान में तोडफोड कर जानलेवा धमकी देते चले गये। पीडिता ने कोतवाली में तहरीर दी। पुलिस ने जांच के नाम पर महीनों केस नही दर्ज किया। इसके बाद उसने एसपी से फरियाद की। एसपी ने लालगंज सीओ को जांच सौपी। सीओ रामसूरत सोनकर की फटकार पर पुलिस ने बुधवार की रात आरोपी गणेश समेत आधा दर्जन के खिलाफ केस दर्ज किया है। प्रभारी निरीक्षक अवन दीक्षित का कहना है कि तहरीर के आधार पर केस दर्ज किया गया है, जांच कर सत्यता के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

पट्टी की बेटी काशी में सम्मानित

पट्टी, प्रतापगढ़। गायन के क्षेत्र में उभरती हुई कलाकार सेजल ठाकुर काशी में एक सितंबर से शुरू हुए काशी सांसद सांस्कृतिक महोत्सव में पट्टी की बिटिया सेजल ठाकुर ने अपने सुरों का जलवा बिखेर दिया। 24 सितंबर तक चलने वाले कार्यक्रम में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जिसमें गायन के क्षेत्र में पट्टी तहसील के रायपुर गाँव के सुनील ठाकुर की बिटिया सेजल को काशी संसद सांस्कृतिक महोत्सव में सुगम संगीत गायन में प्रथम स्थान मिला है। उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार रविंद्र जायसवाल ने पट्टी की बिटिया को सम्मानित किया।

दूसरे दिन भी गैर जनपद से आए शिक्षकों की हुई काउंसिलिंग

बुधवार को देर रात तक आधे शिक्षकों की भी नहीं हो पाई थी काउंसिलिंग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले में गैर जनपद से स्थानांतरित होकर आए 442 शिक्षकों को काउंसिलिंग के लिये 20 सितम्बर को बीएसए आफिस बुलाया गया था जहां सुबह से ही काउंसिलिंग कराने वालों की भीड़ लग गई थी लेकिन दोपहर बाद शासन से लिस्ट आने के कारण आधे शिक्षकों की भी काउंसिलिंग रात दस बजे तक नहीं हो पाई। पता चला है कि केवल 190 शिक्षकों की काउंसिलिंग बुधवार रात दस बजे तक हो पाई थी। शेष की दूसरे दिन काउंसिलिंग गुरुवार को प्रातः दस बजे से शुरू की गई है। बाहर से आई शिक्षिकाओं को रात रुकने में कठिनाई का सामना करना पड़ा लेकिन सरकारी नौकरी में स्थानांतरण में इतना झमेला झेलना पडेगा, यह मालूम नहीं था। 20 सितम्बर को होने वाली काउंसिलिंग 21 सितम्बर को अपरान्ह तक जारी रही। बताया जाता है कि स्कूलों की सूची बीएसए कार्यालय के बाहर चस्पा कर दी गई है जिसमें शिक्षकों को विद्यालय चुनकर बताना होता है। काउंसिलिंग में डायट प्राचार्य उप शिक्षा निदेशक अशोक कुमार सिंह, बीएसए भूपेन्द्र सिंह, डायट प्रवक्ता डा0 अमरेन्द्र कुमार मिश्र, खण्ड शिक्षा अधिकारी सदर संतोष कुमार श्रीवास्तव ने शिक्षकों को काउंसिलिंग के बाद आदेश मुहैया कराया। दोनों दिन हुई काउंसिलिंग में पुलिस व चिकित्सक बीएसए कार्यालय में तैनात रहे। बहरहाल आदेश पत्र मिलने पर शिक्षकों ने राहत महसूस की।

शिक्षिका को स्थानांतरण पत्र देते अधिकारी।

जिला युवा पर्यटन कॉन्क्लेव का हुआ आयोजन

कई विद्यालय के पर्यटन क्लब के सदस्यों ने किया प्रतिभाग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विश्व शांति दिवस के अवसर पर निदेशक पर्यटन उप्र व उप निदेशक पर्यटन प्रयागराज के निर्देश के क्रम में जिला विद्यालय निरीक्षक सरदार सिंह के आदेशानुसार प्रधानाचार्य राजकीय इंटर कालेज बरहदा प्रतापगढ़, प्रधानाचार्य संत एंथोनी इंटर कालेज प्रतापगढ़ फादर आनंद कुमार जान, डॉ मो अनीस के संयोजन में जिला युवा पर्यटन कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया।कॉन्क्लेव में राजकीय इंटर कालेज चंडीगोविंदपुर प्रतापगढ़, राजकीय बालिका इंटर कालेज मानिकपुर प्रतापगढ़, अबुल कलाम इंटर कालेज प्रतापगढ़, अमर जनता इंटर कालेज कटरा गुलाब सिंह प्रतापगढ़,राजकीय उमावि नई कोट गौरा, संत एंथोनी इंटर कालेज प्रतापगढ़ सहित जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के पर्यटन क्लब के सदस्यों ने प्रतिभाग किया।

जिला युवा पर्यटन कॉन्क्लेव में मौजूद प्रतिभागीगण।

कॉन्क्लेव में प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं धरोवर भवनों, पर्यटन स्थलों की पेंटिंग, टूरिज्म फोटोग्राफी, सेल्फी विथ पर्यटन स्थल, टूरिज्म डेस्टिनेशन पर वीडियो मेकिंग आदि में प्रतिभाग किया। निर्णायक मंडल द्वारा प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों का चयन किया गया। निर्णायक मंडल के सदस्यों में डॉ0 सालिक राम प्रजापति, सुप्रिया तिवारी, महजवीन बानो उपस्थित रहे। इस अवसर पर संतोष कुमारी ओझा, मो परवेज, मो उमर जमील, रुकसाना सिद्दीकी, दिनेश कुमार, जॉन खुजूर, शौकत अली आदि उपस्थित रहे। इसी प्रकार राजकीय बालिका इंटर कालेज में प्रधानाचार्या गरिमा श्रीवास्तव के निर्देशन में पेंटिंग प्रतियोगिता कराई गई।

अधिवक्ता पर हुए जानलेवा हमले में गंभीर धाराओं में दर्ज हुआ मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। अधिवक्ता व उसकी मां पर जानलेवा हमले में बुधवार की रात पुलिस ने चार आरोपियो के खिलाफ हत्या के प्रयास, घर में घुसकर मारपीट व तोडफोड के साथ धमकी समेत कई गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है। वहीं घटना को लेकर नाराज वकीलों ने गुरूवार को सीओ लालगंज से मिलकर आरोपियों के खिलाफ कडी कार्रवाई की मांग की है।

सांगीपुर थाना क्षेत्र के देउम पश्चिम निवासी संदीप कुमार तिवारी पुत्र जगदीश नारायण तिवारी तहसील में अधिवक्ता है। बुधवार की सुबह गांव के विपक्षी रामबली वर्मा पुत्र स्व. भगवानदीन वर्मा, सुखराजी पत्नी रामबली वर्मा, गजाधर वर्मा पुत्र स्व. भगवानदीन एवं गजाधर वर्मा की पुत्री ने पीड़ित अधिवक्ता की मां दुर्गेश देवी पर जानलेवा हमला कर दिया था। आरोपियो ने लाठी डंडे व कुल्हाडी से लैस होकर अधिवक्ता व उसकी मां को मार-पीटकर गंभीर चोटें पहुंचायी। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी रामबली वर्मा समेत चार के खिलाफ गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है। इधर गुरूवार को घटना को लेकर तहसील में साथी अधिवक्ताओं के बीच काफी आक्रोश दिखाई दिया। वकीलों ने सीओ लालगंज रामसूरत सोनकर से मिलकर आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग उठाई है। इस मौके पर महामंत्री धीरेन्द्र शुक्ल, संतोष पाण्डेय, घनश्याम मिश्र, राजेश सरोज, इरफान, हरकेश पटेल, बेनीलाल शुक्ल आदि अधिवक्ता रहे।

अधिवक्ताओं में दिखा आक्रोश, सीओ से मिल कार्रवाई की उठाई मांग

चोरी की मोटर साइकिल के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

पट्टी, प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के कुशल निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में जनपद के थाना आसपुर देवसरा से उ0नि0 लक्ष्मीकान्त सेंगर मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थानाक्षेत्र आसपुर देवसरा के नचरौला के पास से एक व्यक्ति अंकित गिरि पुत्र स्व0 आलोक गिरि नि0ग्राम नचरौला थाना आसपुर देवसरा जनपद प्रतापगढ़ को चोरी कदेवसकदेलेण्डर प्लस मोटर साइकिल बिना दिना प्लेट के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 331/2023 धारा 411 भादवि का अभियोग पंजीकृत किया गया है।

हापुड़ लाठीचार्ज को लेकर काली पट्टी बांध नेशनल हाइवे पर वकीलों ने किया विरोध प्रदर्शन

लालगंज में वकीलों ने न्यायिक कामकाज का बहिष्कार कर प्रशासन के खिलाफ जताया आक्रोश

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। हापुड़ में अधिवक्ताओं पर हुए लाठीचार्ज को लेकर अब तक सरकार की कार्रवाई से असंतुष्ट वकीलों ने गुरूवार को यहां जमकर हंगामा किया। वकीलों का जत्था तहसील परिसर में नारेबाजी करते दीवानी न्यायालय परिसर पहुंच गया। तहसील तथा दीवानी अदालतों कामकाज ठप कराकर वकीलों ने नेशनल हाइवे पर भी काली पटटी बांधकर जमकर विरोध प्रदर्शन किया। हाइवे पर वकीलों की नारेबाजी व विरोध प्रदर्शन के चलते आधे घण्टे तक लालगंज-रायबरेली रोड पर यातायात भी प्रभावित दिखा। इसके बाद वकीलों ने तहसील परिसर में एसडीएम कोर्ट के सामने भी घंटो नारेबाजी की। आमसभा में संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल महेश ने कहा कि हापुड़ में लाठीचार्ज के दोषी जब तक कार्रवाई की जद में नही लाए जायेगे यह आंदोलन तेज होता रहेगा। रूरल बार के राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने कहा कि सरकार अपने को निर्वाचित होने का दावा पेश करती है और दूसरी तरफ उसका चरित्र लाल फीताशाही को संरक्षण देने वाला अलोकतांत्रिक हो उठा है।

नेशनल हाईवे पर काली पट्टी बांधकर विरोध प्रदर्शन करते अधिवक्तागण।

आमसभा का संचालन उपाध्यक्ष लाल विनोद सिंह ने किया। वहीं दीवानी न्यायालय में भी अधिक्ताओं ने वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेन्द्र चतुर्वेदी की अगुवाई में विरोध प्रदर्शन किया। आमसभा को अजय शुक्ल गुडडू, राव वीरेन्द्र सिंह, शिवाकांत उपाध्याय, शैलेन्द्र सिंह, प्रमोद सिंह, प्रवीण यादव, संदीप सिंह, हरिश्चंद्र पाण्डेय, विपिन शुक्ल, सिंटू मिश्र ने भी संबोधित कर हापुड़ महासम्मलेन में भागीदारी का ऐलान किया। इस मौके पर अखिलेश द्विवेदी, हरेकृष्ण तिवारी, सुधाकर मिश्र, मनीष क्रांतिकारी, बीके तिवारी, तपन पाण्डेय, प्रभात श्रीवास्तव, प्रमोद तिवारी, विनय शुक्ल, दीपेन्द्र तिवारी, सुमित त्रिपाठी, करूणाशंकर मिश्र प्रदीप, शिवेन्द्र तिवारी, राकेश पाण्डेय, केबी सिंह, टीपी यादव, रमेश पाण्डेय, आशुतोष सिंह, जान्हवी प्रताप सिंह, पवन पाण्डेय, जितेन्द्र सिंह, दिनेश सिंह, अंजनी मिश्र, संजय ओझा, सुशील शुक्ल, केके शुक्ल, रामकिंकर शुक्ल, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, रवीन्द्र नाथ तिवारी, शिवप्रसाद यादव, संतोष सिंह, शैलेन्द्र मिश्र, राजेन्द्र त्रिपाठी, रूद्र प्रताप पाण्डेय आदि अधिवक्ता रहे।

सुवंसा रेलवे स्टेशन की निमार्णाधीन दीवार ढही

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सुवंसा रेलवे स्टेशन पर निमार्णाधीन दीवार बुधवार को ढह गई। इसको लेकर लोगों में तरह तरह की चर्चा हो रही है। इन दिनों स्टेशन के कायाकल्प का कार्य तेजी से चल रहा है, जिसमें सुवंसा रेलवे स्टेशन की नई बिल्डिंग भी बनाई जा रही है। सूत्रों के अनुसार रात में जेसीबी से मिट्टी डालते समय बनाई गई नई दीवार अचानक से ढह गई। शुक्र था कि मौके पर कोई मजदूर नहीं था। लोगों का कहना है कि बिना पिलर बनाए ही दीवार खड़ी की गई थी, जो मिट्टी डालते समय गिर गई। इस बारे में जनसंपर्क अधिकारी शंभू सिंह का कहना है कि जेसीबी द्वारा मिट्टी की लेवलिंग करते समय ऐसा हुआ है, जांच हो रही है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित होने पर शिक्षिकाओं ने जताई खुशी

प्रतापगढ़। जीपीएस इंटर कॉलेज की शिक्षिकाओं ने लोकसभा में नारी शक्ति वंदन अधिनियम के पारित होने पर भारत सरकार को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की और इसके माध्यम से भारत के विकास में नारी शक्ति के सहयोग की अभिवृद्धि की आशा व्यक्त की। अनुपमा सिंह ने स्वयं को सौभाग्य शाली मानते हुए कहा कि भारत में किसी पुण्य के कारण उनका जन्म हुआ है। अंजली श्रीवास्तव एवं सुषमा श्रीवास्तव ने यह सम्मान देने के लिए भाजपा सरकार को धन्यवाद ज्ञापित किया। सुमन सिंह, निशा दुबे एवं मोहिनी उमरवैश्य ने इस बात की प्रसन्नता व्यक्त की कि सभी दलों के समर्थन से यह अधिनियम पारित हुआ है और इसे इस बात का संकेत माना कि यह अधिनियम राज्य सभा से भी सुनिश्चित रूप से पारित हो जाएगा।

अपना दल के कार्यकर्ता उत्पीड़न को लेकर एएसपी से मिला प्रतिनिधिमण्डल

दोषी पुलिस कर्मियों पर जांच कर कार्यवाही की मांग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपना दल एस का प्रतिनिधिमंडल कार्यवाहक जिलाध्यक्ष बृजेश पटेल के नेतृत्व में पूर्वी एडिशनल एस०पी० से मिल कर अपना दल एस के कार्यकर्ता जयसिंह पटेल पर पुलिसकर्मियों द्वारा अभद्र भाषा का प्रयोग कर उसकी पिटाई के मामले में जांच कर कार्यवही किये जाने की मांग की।

आरोप है कि पुलिस कर्मी ने युवक को बड़ी बेरहमी से पिटाई की और रानीगंज थाना में कार्यरत सब इंस्पेक्टर पीड़ित परिवार के लोगों को भी अनावश्यक रूप से मां बहन को भद्दी भद्दी गालियां देते हुए बेइज्जत करने का काम किया और परेशान किया जा रहा है। इस मामले को लेकर एडिशनल एस०पी० से मिलकर घटना की जानकारी दी गई उचित जांच कर दोषी पुलिस कर्मियों पर तत्काल कार्यवाही किये जाने की मांग की गई। प्रतिनिधिमंडल में बृजेश पटेल के अलावा लक्खू चैधरी राष्ट्रीय सचिव महिला मंच कुशाग्र श्रीवास्तव, प्रदेश सचिव बौद्धिक मंच मुस्ताक अहमद, विजय सिंह ट्रांसपोर्ट यूनियन के जिलाध्यक्ष, ऐडवोकेट गिरीश मिश्रा पूर्व महामंत्री बार एसोसिएशन जिला अध्यक्ष विधि मंच सुरेश सरोज जिलाध्यक्ष अनुसूचित मंच डॉक्टर आर सी पटेल राबिन पटेल विधायक प्रतिनिधि, अमरनाथ पटेल बाबागंज विधानसभा महासचिव राजकुमार पटेल जिलाध्यक्ष युवा मंच, संतोष पटेल जिला अध्यक्ष सांस्कृतिक मंच बादल पटेल, बिपिन वर्मा,शिव मौर्य, जितलाल पटेल श्रवण पटेल, रामप्यारे गौड़, लल्लू वर्मा, चन्द्र भान पटेल,राम सिंह,राम सुख वर्मा, बजरंग बहादुर मौर्य, शिव प्रसाद गौतम, संतोष वर्मा रमेश पटेल, विजय पटेल विपिन पटेल अतुल प्रजापति, दिनेश राम मिलन, अशोक कुमार मौर्य, विनय पटेल, राजेंद्र पाल प्रधान राजकुमारी, रंगीत पटेल, कंचन पटेल, सुनीता पटेल आदि सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

एएसपी को ज्ञापन देते अपना दल के पदाधिकारीगण।

सपेरों ने मशक्कत कर पकड़े दो सांप, कौतूहल में गांव में जुटी भारी भीड़

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। चार दिनों से गांव में सांप की दहशत से घबराये ग्रामीणों को गुरूवार की सुबह सांप के पकड़े जाने को लेकर राहत मिल सकी है। बाहर से आये संपेरों ने गुरूवार की सुबह से अथक मशक्कत कर बबलू यादव के घर से दो सांप कैद करने में कामयाबी ली। पकड़े गये सांपो को देखने के लिए गांव में आसपास के लोगों की भी अच्छी खासी भीड़ जुटी दिखी। वहीं सांप काटने से अपने दो बच्चों को गवां चुके गांव के बबलू यादव तथा उसकी पत्नी का रो रो कर बुराहाल दिखा।

पिछले सप्ताह शनिवार की रात्रि बबलू यादव के दो मासूम बेटों अगम 08 तथा अरनव 07 की मौत हो गयी थी। बुधवार को भी बच्चों का पिता बबलू यादव शौचालय गया तो सांप ने उसे फुफकारा। इससे बबलू यादव की तबीयत बिगड़ गयी और उसे लालगंज ट्रामा सेण्टर में भर्ती कराना पड़ा था। बबलू यादव को भी सांप के फुफकारने से गांव के लोग और ज्यादा दहशत में आ गये। लोगों के प्रयास से बाहर से संपेरों को बुलवाया गया। गुरूवार की सुबह संपेरों ने मशक्कत कर दो सांपो को अपने कब्जे में ले लिया। पकड़े गये सांपो को देखने के लिए गांव में बच्चे व महिलाएं

धधुआ गाजन में सांप काटने से दो बच्चों की मौत को लेकर दहशत में हैं ग्रामीण

तथा बुजुर्ग भी इकटठा हो गये। मासूमों के साथ मौत का खेल खेलने वाले इन सांपों के संपेरो के हाथ लगने की खबर आसपास इलाके में भी हो गयी।

देखते ही देखते गांव में आसपास के लोगों की भी भारी भीड़ इकटठा हो गयी। संपेरे पकड़े गये सांपों को अपने साथ ले गये। सांपो के पकड़ में आने के बाद गांव के लोगों में दहशत कुछ कम होती भी देखी गयी। हालांकि यह चर्चा भी रही कि संपेरों ने जिन सांपों को पकड़ा है पता नही उनमें बच्चों को डसने वाला सांप है भी या नहीं। एक ही मां बाप के दो सगे बेटों को डसने वाले सांप को लेकर गांव में रविवार से ही अभी भी मातम का माहौल है। हालांकि मृतक बच्चों के घर से ही दो सांपों को पकड़े जाने पर लोग कुछ निशि्चत जरूर हुए हैं फिर भी लोगों के मन में यह आशंका भी वहां तैरती दिखी कि गांव में आसपास अगर कोई जहरीला सांप दूसरा होगा तो खतरा फिर मंडरा सकता है। सांप काटने से दो बच्चों की एक साथ मौत को लेकर गांव में अन्य घरों के बच्चे भी इस समय दुपके दुपके देखे जा रहे हैं।

छोटे छोटे बच्चों के माता पिता अपने बच्चों को शाम को बाहर नहीं निकलने दे रहे हैं। वहीं बच्चों के सोने पर भी कई घरों में बड़े बूढें व महिलाओं के डर के कारण रतजगा भी करने की चर्चा देखी सुनी जा रही है। बीच बीच में मृतक बच्चों की मां की दहाड़ मारकर चीखने की आवाज सुनकर लोग भी गमगीन हो उठते हैं। सर्पदंश से बच्चों की मौत की जानकारी क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना भी मंगलवार को गांव पहुंची थी। विधायक मोना ने भी परिजनों से संवेदना जताते हुए सुरक्षा तथा मदद का भरोसा दिलाया था।

तिहरे हत्याकांड के आठ अभियुक्तों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

पुलिस ने अभियुक्तों से बरामद किया हत्या में प्रयोग की गई राइफल तमंचा तमाम कारतूस

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मोहिउद्दीनपुर गांव में 15 सितंबर की रात्रि सोते समय गोली मारकर तीन दलित होरीलाल पुत्र श्रीनाथ उनके दामाद शिवशरण और बेटी बृजकली की बड़ी बेरहमी से हत्या कर दी गई थी तीन लोगों की हत्या की जानकारी मिलते ही अपर पुलिस महानिदेशक पुलिस महानिरीक्षक कमिश्नर जिला अधिकारी पुलिस अधीक्षक अपर पुलिस अधीक्षक सहित तमाम अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और अभियुक्तों की गिरफ्तारी का निर्देश दिया। क्षेत्राधिकारी चायल एसओजी प्रभारी संदीपन घाट कोतवाल और सराय अकिल कोतवाल के नेतृत्व में चार टीमों का गठन कर अभियुक्तों की गिरफ्तारी का निर्देश अधिकारियों ने दिया। पुलिस टीम हत्या अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए सक्रिय हुई तीन लोगों की हत्या में आठ लोगों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराया गया था। पुलिस की जांच और पूछताछ के दौरान अन्य नाम प्रकाश में आए हैं पत्रकारों से वार्ता करते हुए पुलिस अधीक्षक ने जघन्य अपराध तीन हत्या की घटना का खुलासा करते हुए बताया कि अमर सिंह पुत्र शिवप्रसाद निवासी पथरहा जय करण यादव सुरेश सिंह यादवेंद्र सिंह उर्फ गुड्डू यादव पुत्र राममिलन निवासी छबीलवा अरविंद सिंह पुत्र रोशन लाल निवासी छबीलवा अनुज सिंह अमित सिंह पुत्रगण सुग्रीव सिंह निवासी मोहिउद्दीनपुर राजेंद्र सिंह सुरेश सिंह अजीत सिंह पुत्रगण खेलावन निवासी मोहिउद्दीन पुर हत्या की घटना में शामिल है पुलिस ने यादवेंद्र सिंह अरविंद सिंह अजीत सिंह अमर सिंह अमित सिंह अनुज सिंह सुरेश सिंह और तीरथ निषाद को गिरफ्तार किया है। दो तमंचा एक राइफल और कारतूस अभियुक्तों के पास से पुलिस ने बरामद किया है। अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी के प्रयास में पुलिस लगी है। पुलिस ने जब गिरफ्तार अभियुक्तों से पूछताछ की तो अभियुक्तों ने तीन लोगों की हत्या का जुर्म कबूल कर लिया है। पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध शस्त्र अधिनियम हत्या आदि का मुकदमा दर्ज कर अदालत में पेश किया है पुलिस हत्या अभियुक्तों को अदालत से रिमांड पर लेने की कार्यवाही कर रही है साथ ही साथ अभियुक्तों पर गैंगस्टर एक्ट और हत्या की साजिश रचने वाले अभियुक्तों पर 120 बी की कार्रवाई पुलिस कर रही है।

56 बीघा सरकारी जमीन कब्जा करना चाहते थे हत्या अभियुक्त

कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मोहिद्दीन पुर गांव में 15 सितंबर को होरीलाल उनकी बेटी बृजकली और दामाद शिवशरण की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी इस हत्याकांड के पीछे 56 बीघा सरकारी जमीन पर कब्जा करना हत्या अभियुक्त का मूल उद्देश्य था सरकारी जमीन से पट्टा मिलने के बाद पट्टा धारक से शिव शरण ने जमीन खरीद लिया था और इस पर झोपड़पट्टी डालकर रहने लगा था यह बात दबंग को ठीक नहीं लगी बेश कीमती जमीन की कीमत दिनों दिन बढ़ रही थी जिससे दबंग की लालच बढ़ती गई और इसी लालच को पूरा करने के लिए दबंगों ने तीन लोगों की हत्या कर दी सरकारी जमीन पर बल पूर्वक दबंग कब्जा करना चाहते थे और जमीन कब्जा करने के उद्देश्य से उन्होंने गोली मारकर तीन दलित को मौत के घाट उतार दिया है।

तिहरे हत्याकांड के आश्रितों को अखिलेश यादव ने भेजा एक लाख का चेक

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मोहिउद्दीनपुर गांव में शुक्रवार को तीन लोगों को गोली मार कर मौत के घाट उतार दिया गया था इस हत्याकांड के बाद मृतक परिवार से मिलने और उन्हें हर संभव आर्थिक मदद करने का भरोसा देने उनके घर तमाम पार्टियों के नेता पहुंच रहे थे लेकिन किसी की जेब से फूटी कौड़ी नहीं निकाली जिस पर अखंड भारत संदेश समाचार पत्र ने प्रमुखता से खबर प्रकाशित कर झूठा आश्वासन देने वाले नेताओं को बेनकाब किया इसके बाद उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता इंद्रजीत सरोज को एक लाख रुपए का चेक देकर मृतक परिजनों के घर भेजा है बुधवार को इंद्रजीत सरोज मोहद्दीनपुर गांव पहुंचे और मृतक परिवार से मिलकर अखिलेश यादव द्वारा दी गई एक लाख रुपए की चेक मृतक परिजनों को सौपा है

पीएसी का सिपाही था तिहरे हत्याकांड का मास्टर माइंड

तिहरे हत्याकांड के हमलावरों की गोली से घायल अनूप ने भी दिया था साथ

कौशाम्बी। जिले के संदीपनघाट थाना क्षेत्र के मोहद्दीनपुर गांव में एक सप्ताह पहले बहुचर्चित तिहरे हत्याकांड का एसपी ने खुलासा कर दिया है,एसपी बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा गठित एसओजी और पुलिस टीम ने तिहरे हत्याकांड का खुलासा कर दिया और 8 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया और तीन अन्य की तलाश पुलिस कर रही है उसमे से एक अनूप सिंह को भी गोली लगी थी जिसका इलाज प्रयागराज में चल रहा है। घटनाक्रम के मुताबिक 14/15 सितंबर की रात संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मोहिद्दीनपुर गांव के पंडा चौराहा पर जमीन कब्जे को लेकर तीन लोगो की हत्या के लिए एक बड़ी साजिश रची गई थी जिसका मास्टर माइंड पीएसी में तैनात एक सिपाही ने रची थी,हालांकि वह खुद तो घटना के दिन गांव में नही था लेकिन हत्या और आगजनी के सारे कार्य उसकी देखरेख में ही हुए थे। पुलिस ने आरोपी पीएसी के सिपाही सुरेश सिंह को भी अरेस्ट कर लिया है। एसपी बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि मृतक होरी लाल और उसकी बेटी बृजकली और दामाद शिवसरन गांव में यादव डेयरी के सामने झोपड़ी बनाकर रह रहे थे, शिवसरन सहज जनसेवा केंद्र चलाता था,और बैंकिंग भी करता था,जिससे उसके पास रूपयो का टर्न ओवर लगातार होता रहता था, शिवसरन ने इसलिए वही पर एक जमीन खरीद ली थी,लेकिन वह जमीन पहले से ही विवादित थी, जिसे खरीदने के लिए उसने एग्रीमेंट ही करा लिया था लेकिन वहां के लोगो ने इस परिवार को वहां रहने पर आपत्ति जताई तो अक्सर विवाद होता था। विवाद के चलते इस गांव के रहने वाले लोगो में इस परिवार के प्रति नकारात्मक सोच घर बनाने लगी और सभी दुश्मन एक हो गए और पीएसी के सिपाही सुरेश सिंह के नेतृत्व में इस घटना को अंजाम दिया गया।वही होरी लाल को गोली मारते समय धोखे से एक गोली आरोपी अनूप सिंह को भी लग गई थी,जिसे सभी लोग लेकर अस्पताल भाग गए थे और उसे भर्ती कराकर इलाज करा रहे थे।एसपी बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि उनके द्वारा गठित टीम ने मामले की कड़ी को जोड़ते हुए घटना का सफल अनावरण कर दिया है,सभी आठ आरोपियों को गिरफ्तार कर लिए गया है,और तीन अन्य के नाम भी प्रकाश में आए है,उनकी गिरफ्तारी के लिए टीम बना दी गई है जल्द ही उनको भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

पुलिस मुठभेड़ में घायल व्यक्ति की इलाज के दौरान मौत

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र में सराफा व्यापारी की लूट के मामले में रतगहा की बाग में पुलिस और बदमाशो की मुठभेड़ 12 सितम्बर हुई थी। जिसमें दो बदमाशो को पुलिस की गोली लगी थी जिससे एक बदमाश गम्भीर घायल हो गया था जिसका इलाज एसआरएन हॉस्पिटल प्रयागराज में चल रहा था इलाज के दौरान विजय कुमार सोनी निवासी रीवा मध्य प्रदेश की मौत हो गयी है विजय कुमार सोनी के हाथ में जहां गोली लगी थी उसका कल ऑपरेशन किया गया था जहर फैलने से विनोद की इलाज के दौरान गुरुवार की दोपहर मौत हो गयी है। पुलिस द्वारा विजय कुमार सोनी के परिजनों को सूचना दी गई हैं लेकिन खबर लिखे जाने तक कोई भी मौके पर नही पहुंचे है जिससे चरवा पुलिस द्वारा शव को पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया गया है।

नौसिखिए ट्रैक्टर चालक ने कार को मारी टक्कर एक की मौत चार लहूलुहान

अखंड भारत संदेश

कार को टक्कर मार कर चलते वाहन से कूदा नौसिखिया चालक पलट गया ट्रैक्टर

कौशाम्बी। कड़ा थाना अंतर्गत संभुयी गांव और सौराई बुजुर्ग गांव के पास बुधवार की शाम को आलू लदे ट्रैक्टर ने सामने से आ रही कार को जोरदार टक्कर मार दिया है टक्कर मारने के बाद ट्रैक्टर चालक चलती वाहन से कूद कर फरार हो गया है जिससे ट्रैक्टर पलट गया है टक्कर लगते ही कार के परखच्चे उड़ गए कार में सवार लोग लहू लुहान हो गए आनन फानन में घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया इलाज के दौरान एक बच्चे की मौत हो गई है मौत की जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया है। जानकारी के मुताबिक पिंटू पुत्र गंगाचरण (32 वर्ष), राम कन्या पत्नी कैलाश (60 वर्ष), ननकी पत्नी राजू (26 वर्ष), अंकित पुत्र पिंटू (3वर्ष) एवं एक दिन का नवजात शिशु निवासी चौहानपुर कोरियो थाना देवीगंज बुधवार की शाम को कार में सवार होकर बच्चे के इलाज कराने अस्पताल जा रहे थे जैसे ही कार सवार सौराई बुजुर्ग और शंभुई गांव के बीच पहुंचे सामने से आ रहे अनियंत्रित ट्रैक्टर ने कार में टक्कर मार दी है जिससे कार सवार सभी लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं ट्रैक्टर और कार के भिड़ंत की आवाज सुनकर आस पास के लोग मौके पर पहुचे और तत्काल पुलिस और 108 एम्बुलेंस को सूचना दी। सूचना पाकर पुलिस और 108 की दो एम्बुलेंस मौके पर पहुंची। 108 एम्बुलेंस कर्मियों द्वारा सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिराथू लाया गया। जहाँ से डॉक्टरों ने जिला अस्पताल मंझनपुर के लिए रेफर कर दिया। जिला अस्पताल के डॉक्टरों ने तत्काल सभी घायलों का इलाज करना शुरू कर दिया। इसमें 3 साल का बच्चा अंकित पुत्र पिंटू जो गंभीर रूप से घायल था उसको आनन फानन में जिला अस्पताल के डॉक्टरों ने प्रयागराज मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर किया तब तक उसकी सांसे रुक गयी।

न्यूज झरोखा

कनैली से भखन्दा मार्ग सड़क है कि मौत का गड्ढा

कौशाम्बी। योगी सरकार बार-बार सड़क को गड्ढा मुक्त करने का निर्देश दे रही है लेकिन कौशांबी के अधिकारियों को योगी सरकार का निर्देश सुनाई नहीं पड़ रहा है जिले की तमाम सड़के गड्ढे में तब्दील है आए दिन लोग चोटिल हो रहे हैं कनैली से भखन्दा मार्ग सड़क खराब पूरी तरह से खराब है यह सड़क मौत का गड्ढा बन चुकी है बार-बार लोग शिकायत कर रहे हैं लेकिन जिम्मेदार अनसुनी कर रहे हैं इस सड़क पर रात भर ओवरलोड बालू वाहन चलते हैं ओवरलोड वाहनों को जिम्मेदार रोक नहीं पा रहे हैं जिससे सड़के समय के पहले खराब हो गयी हैं ओवरलोड बालू वाहनों के शोर शराबो से गांव के लोग परेशान हैं लेकिन अधिकारियों को ओवरलोड बालू वाहनों के संचालन की जानकारी नहीं हो पा रही है यमुना नदी में खदान बन्द होने के बाद डम्प की बालू की निकासी तेजी से हो रही है पूरी रात सड़क पर सैकड़ो ओवरलोड बालू वाहन फरार्टा भरते हैं सड़क अधिक खराब होने से वाहन भी खराब होते है जिससे सड़कों पर जाम लगता है कई स्कूल के हजारों बच्चे भी इस सड़क से आते जाते हैं लेकिन मौत का अड्डा बने सड़क में स्कूली बच्चों को भी आने-जाने में दिक्कतें होती हैं अवैध वसूली और संलिप्तता के चलते ओवरलोड वाहन जिम्मेदार रोक नहीं पा रहे हैं मौत का गड्ढा बन चुकी सड़क बनाई नहीं जा रहे हैं जिससे ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को समस्याओं से जूझना पड़ा है लेकिन ग्रामीणों की सुनने को कोई अधिकारी तैयार नहीं है।

घर से नराज वृद्ध महिला ने गंगा में लगाई छलांग

हर्रायपुर कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के नौगीरा गंगा घाट में घरेलू कलह से नाराज महिला ने गंगा नदी में छलांग लगा दी जिससे महिला नदी में डूबने लगी आसपास मौजूद लोगों ने हो हल्ला मचाया मौके पर112 नम्बर के जबाज सिपाही विजय शंकर पांडेय गंगा में कूद गए और कड़ी मशक्कत के वृद्ध महिला को नदी से बाहर निकाल कर उसकी जान बचाई। जानकारी के अनुसार कोखराज थाना क्षेत्र के तलैया टीकुर के रहने वाली मुन्नी देवी पत्नी दीनानाथ घरेलु कलह से तंग आकर गुरुवार को गंगा नदी में छलांग लगा दी हालांकि महिला को नदी से जिंदा निकाल कर पुलिस ने परिजनों को सुपुर्द कर दिया है।

अंतर्जनपदीय स्थानातंरण में आए शिक्षकों को आवंटित हुए विद्यालय

कौशाम्बी। अंतर्जनपदीय स्थानांतरित होकर कौशाम्बी आए शिक्षकों को गुरुवार को विद्यालय आवंटित कर दिया है। इस वर्ष लगभग 256 शिक्षक अंतर्जनपदीय तबादले में कौशाम्बी आए है साथ ही लगभग 146 शिक्षकों का गैर जनपद स्थानांतरण हुआ है। शिक्षकों को विद्यालय आवंटन की अंतिम डेट होने के चलते देर शाम तक विद्यालय आवंटित किया गया है। विद्यालय आवंटन को लेकर बुधवार और गुरुवार को पूरे दिन बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय के बाहर शिक्षकों का जमावड़ा लगा रहा कई दर्जन लग्जरी कार बीएसए कार्यालय के बाहर दोनों दिन खड़ी रही।

माटीकला टूल-किट्स वितरण चयन साक्षात्कार 27 सितम्बर को

कौशाम्बी। जिला ग्रामोद्योग अधिकारी चन्द्रशेखर वर्मा ने अवगत कराया कि उ0प्र0 माटीकला बोर्ड, लखनऊ द्वारा संचालित माटीकला टूल-किट्स विद्युत चालित चाक वितरण योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए 30 लाभार्थियों का लक्ष्य प्राप्त हुआ है, जिसके सापेक्ष लाभार्थियों का चयन साक्षात्कार दिनांक 27 सितम्बर 2023 को परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में जिला ग्रामोद्योग कार्यालय, कक्ष 44, प्रथम तल विकास भवन, मंझनपुर में अपरान्ह 12:00 बजे किया जायेंगा। उन्होंने बताया कि जिन लाभार्थियों द्वारा आवेदन-पत्र कार्यालय में जमा किया गया है, वे चयन साक्षात्कार में समय से भाग लेना सुनिश्चित करें, साक्षात्कार में अनुपस्थित होने की दशा में किसी भी आवेदन पत्र पर विचार नही किया जायेगा।

स्थगन आदेश के बाद होता रहा निर्माण आती जाती रही पुलिस

कौशांबी। करारी थाना क्षेत्र के महेंद्र गांव में विवादित आराजी पर अदालत में शीतला प्रसाद आदि द्वारा मुकदमा दाखिल हुआ मुकदमे की सुनवाई करते हुए न्यायालय ने यथा स्थिति बनाए रखने का स्थगन आदेश पारित किया स्थगन आदेश वादी ने करारी पुलिस को उपलब्ध करा दिया लेकिन उसके बाद भी विवादित भूमि पर दूसरे पक्ष अशोक कुमार आदि का निर्माण होता रहा वादी पक्ष बार-बार थाना पुलिस से मुलाकात कर विवादित भूमि पर अदालत के स्थगन आदेश का पालन कराते हुए निर्माण रोकने की मांग की लेकिन थाना पुलिस बार-बार मौके पर जाती रही दोनों पक्षों से लेनदेन करती रही लेकिन स्थगन आदेश के बाद भी निर्माण होता रहा शीतला प्रसाद आदि बनाम अशोक कुमार आदि के आदेश दिए जाने के बाद भी अदालत के स्थगन आदेश पर करारी थाना पुलिस निर्माण नहीं रोक सकी है स्थगन आदेश का पालन न करने वाली थाना पुलिस से पीड़ित शीतला प्रसाद ने जिला अधिकारी को पत्र देकर अदालत के आदेश का पालन कराने की गुहार लगाई है।

कृषकों की समस्याओ के निस्तारण के लिए कैम्प का होगा आयोजन

कौशाम्बी। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अन्तर्गत अवशेष कृषकों का ई-केवाईसी बैंक खातों की आधार सीडिंग तथा भूलेख अंकन कराये जानें के लिए तहसील एवं विकास खण्ड स्तर पर कृषकों की समस्याओं का निस्तारण किये जानें के लिए पीएम किसान लाभार्थी संतृप्तीकरण शिविर/कैंप का आयोजन प्रत्येक कार्यालय दिवस में प्रातः 10:00 बजे से सांय 5:00 बजे तक किया जायेगा। यह जानकारी उप कृषि निदेशक ने देते हुए बताया कि उप कृषि निदेशक कार्यालय कृषि विभाग मंझनपुर में एक हेल्प डेस्क की स्थापना भी की गयी है, जहाँ पी०एम० किसान योजना के लाभार्थी कृषक स्वयं उपस्थित होकर अथवा मो0नं0 7309891691 व 7309825832 पर कॉल कर सम्पर्क करके अपनी समस्याओं का निराकरण करा सकतें हैं।

आधुनिक युग की बुलंद आवाज है भाजपा : धर्मराज मौर्य

भाजपा द्वारा जिला कार्यालय मंझनपुर में जिला कार्यशाला बूथ सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम में जिले के सभी जिला पदाधिकारी मंडल एवं शक्ति केंद्रों के पदाधिकारियों की आयोजित हुई बैठक

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। भारतीय जनता पार्टी कौशाम्बी के द्वारा जिला कार्यालय मंझनपुर में जिला कार्यशाला बूथ सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम में जिले के सभी जिला पदाधिकारी मंडल एवं शक्ति केंद्रों के पदाधिकारी की बैठक आयोजित की गई कार्यशाला के मुख्य वक्ता जिला अध्यक्ष धर्मराज मौर्य ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी देश की 140 करोड़ की जनता का विश्वास बनकर राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर कार्य कर रही है और यही कारण है कि आधुनिक भारत की बुलंद आवाज भाजपा बन चुकी है। उन्होंने आगे बताया कि सभी कार्यकर्ता को अपनी-अपनी जिम्मेदारियां से अवगत कराया है कार्यक्रम का संचालन राकेश पांडे द्वारा किया गया कार्यक्रम में जिला महामंत्री संजय जयसवाल ने अपनी बात रखी जिला उपाध्यक्ष आशीष केसरवानी बच्चा ने मन की बात कार्यक्रम से संबंधित जानकारी दी। कार्यक्रम में मंझनपुर नगर अध्यक्ष वीरेन्द्र सरोज फौजी भरवारी नगर अध्यक्ष कविता पासी जिला संयोजक आईटी विभाग सत्यम केसरवानी जिला संयोजक जितेन साहू युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष रिंकू मौर्या प्रतिभा कुशवाहा,शीलू 15 मंडल के मंडल अध्यक्ष कई शक्ति केन्द्र से शक्ति केंद्र संयोजक उपस्थित रहे।

योगी राज में दबंगों का आतंक शत्रु संपत्ति समेत निजी भूमि पर जबरिया कब्जा

अखंड भारत संदेश

मोहिउद्दीनपुर गांव में जमीनी विवाद के बाद तीन लोगो की हत्या के बाद कड़ाधाम पुलिस और सिराथू तहसील के अधिकारी जमीनी विवाद को गंभीरता से नहीं ले रहे

कौशाम्बी। सिराथू तहसील क्षेत्र के मीरापुर मर्दानपुर वर्जी में दबंगो का आतंक कायम है आराजी संख्या 181 और 182 में शत्रु संपत्ति सहित कई सह खातेदार हैं लेकिन आराजी संख्या 181 और 180 पर गांव के दबंग सलाम हसन अफरोज बुलाकी पुर जबरिया कब्जा कर रहे हैं जिससे जमीन के अन्य सह खातेदार अपनी जमीन पर काबिज नहीं होने पा रहे हैं जब कभी जमीन के सह खातेदार जमीन पर जाते हैं तो उनके साथ गाली गलौज मारपीट आम बात हो गई है दबंग के आगे कड़ा धाम कोतवाली पुलिस भी विवश दिखाई पड़ रही है शत्रु संपत्तियों की जमीन में दबंग के कब्जा किए जाने से तहसीलदार एसडीएम भी विवश दिखाई पड़ रहे हैं। चायल तहसील क्षेत्र के संदीपन घाट थाना अंतर्गत मोहिउद्दीनपुर गांव में जमीनी विवाद के बाद तीन लोगो की बेरहमी से हत्या के बाद भी कड़ा धाम कोतवाली पुलिस और सिराथू तहसील के अधिकारी जमीनी विवाद को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं अधिकारियों की लापरवाही के बाद कभी भी बड़ी वारदात फिर हो सकती है वीरेंद्र कुमार पुत्र बिंदा प्रसाद निवासी मीरापुर माजरा मर्दानपुर बजी ने डीएम एसपी समेत आला अधिकारियों को शिकायती पत्र देकर दबंग पर कार्यवाही किए जाने शत्रु संपत्ति को दबंगों के कब्जा से मुक्त कराया जाने शत्रु संपत्ति में खेती करने के बाद कई वर्षों से उपज की वसूली कराए जाने और उसकी जमीन पर उसे काबिज कराए जाने की मांग की है।

सरकारी हैंडपंप कब्जा करने वाले की दीवार को नायब तहसीलदार ने गिराया

कौशांबी। सिराथू तहसील क्षेत्र के जगदीशपुर गांव में सरकारी हैंड पंप के चारों ओर बाउंड्री वॉल का निर्माण कर दबंग लोगों ने कब्ज का प्रयास किया था इतना ही नहीं सरकारी हैंडपंप में समरसेबल मोटर लगाकर अपनी निजी संपत्ति बना लिया था सरकारी हैंडपंप पर दबंग ग्रामीणों को पानी नहीं भरने दे रहे थे मामले की शिकायत अधिकारियों से हुई उप जिलाधिकारी सिराथू सौम्या मिश्रा के निर्देशन पर नायब तहसीलदार संजय कुमार कानूनगो धर्मपाल लेखपाल महेश कुमार शमशाबाद पुलिस चौकी के इंचार्ज अंशुमान मिश्रा मौके पर पहुंचे और कमल कुमार तिवारी के घर के सामने लगे हैंडपंप के चारों ओर चाहर दीवारी को गिरा दिया है जिससे अब हैंडपंप खुले में हो गया और लोगों को पानी भरने में आसानी होगी ग्रामीणों ने कहा कि हैंड पंप कब्जा करने वाले पर मुकदमा दर्ज कराया जाए सरकारी हैंड पंप के समान को चोरी कर अपने घर के भीतर निजी हैंडपंप में लगाने वाले दबंग पर मुकदमा दर्ज किया जाए।

झाड़ फूंक के बहाने इलाज व गड़ा खजाना निकालने की आड़ में ठगी करने वाला गिरोह सक्रिय

लग्जरी स्कॉर्पियो से घूम कर ठगी करने में लिप्त सदस्यों के वाहनों में मिले थे अलग अलग कई नंबर प्लेट

कौशाम्बी। फतेहपुर जिले के कुछ लोग इन दोनों झाड़फूंक के बहाने इलाज और जमीन में गड़ा खजाना निकालने की बात कहकर लोगों को ठगने में लगे हैं जिले के कई लोग गिरोह के झांसे में आकर लाखों रुपया गवा चुके हैं बीते दिनों मेजा थाना क्षेत्र में गिरोह के सदस्य लग्जरी सफेद स्कॉर्पियो वाहन के साथ पकड़े भी गए थे लेकिन व्यवस्था के तहत कार्यवाही नहीं हो सकी संदीपन घाट थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी मूरतगंज क्षेत्र के मुजाहिद पुर के रहने वाले राजेंद्र कुमार पुत्र मेवा लाल ठग गिरोह के झांसे में फंस गए हैं राजेंद्र कुमार की पत्नी की तबीयत खराब रहती है जिस पर गांव के कुलदीप ने उन्हें बताया कि कुछ लोग ऐसे हैं जो झाड़ फूंक से मरीज को ठीक कर देते हैं झांसे में आकर राजेंद्र कुमार ने फतेहपुर जिले के लोगों से संपर्क किया ठग लोग जब राजेंद्र के घर पहुंचे तो बताया की तुम्हारे घर मे गड़ा खजाना है वही परेशान कर रहा है खजाना निकालना पड़ेगा और इसमें खर्च आएगा खजाना निकालने के नाम पर 2 लाख बीस हजार रकम की डिमांड की गई लेकिन 60 हजार राजेंद्र ने उन्हें दे दिया ना तो जमीन से गड़ा खजाना निकला और ना ही राजेंद्र की पत्नी की तबीयत ठीक हो सकी उसे एहसास हुआ कि उसके साथ ठगी हुई है। इतना ही नहीं अलग-अलग मोबाइल नंबर से राजेंद्र को फोन कर शर्त के अनुसार तय बाकी रकम की डिमांड कर रहे हैं जब राजेंद्र रकम देने से इनकार कर रहा है तो उसके साथ गाली गलौज कर पूरे परिवार को गायब कर देने की धमकी दी जा रही है जिससे राजेंद्र का पूरा परिवार भयभीत है मामले की शिकायत राजेंद्र ने 4 सितंबर को पुलिस अधीक्षक से की है। बताया जाता है कि फतेहपुर जिले का जो व्यक्ति ठगी के कारनामे में सक्रिय है वह फतेहपुर जिले के शाह गांव का रहने वाला है और दाहिना हाथ उसका कटा हुआ है ठगी की तलाश में राजेंद्र अपने रिश्तेदारों के साथ उसके गांव पहुंच गया तो लोगों ने उसका नाम अय्यूब कुरैशी बताया है लोगों ने बताया कि यह नटवरलाल लोगों को खेल दिखाता है और पशु तस्करी के भी धंधे में शामिल है बीते दिनों चरवा थाना पुलिस के पशु तस्करों से पुलिस मुठभेड़ भी हो चुकी है लेकिन मुठभेड़ के सरगना गिरफ्तार नहीं हुए हैं।

अतीक के जाने के बाद भी गुंडो की नहीं बंद हुई अवैध वसूली !

अखंड भारत संदेश

पड़ोसी जनपद सहित प्रयागराज जनपद के प्रत्येक वाहन स्टैंड पर यूनियन के इन गुंडों का पूरी तरह से है कब्जा

प्रयागराज में 20 हजार से अधिक टेंपो टैक्सी से 5 लाख रुपए से अधिक की गुंडा टैक्स की वसूली तो पड़ोसी जनपदों में भी 10 हजार से अधिक टेंपो टैक्सी से 3 लाख से अधिक प्रतिदिन की बेखौफ हो रही है वसूली

कौशाम्बी। प्रयागराज में अतीक अहमद के कार्यकाल में प्रयागराज जनपद सहित आसपास के कौशाम्बी प्रतापगढ़ जनपदों में विभिन्न प्रकार के गुंडा टैक्स की वसूली आम बात हो गई थी अतीक अहमद तो चले गए लेकिन उनके गुंडे अभी गुंडा टैक्स की वसूली बंद नहीं कर सके हैं इस वसूली का हिस्सेदार अब कौन-कौन है यह बड़ी जांच का विषय है कुछ तो पर्दे के सामने दिखाई पड़ रहे हैं कुछ पर्दे के पीछे से वसूली के धंधे के संचालन को बढ़ावा देने में लगे हैं आम जनता को शोषित प्रताड़ित कर अतीक अहमद के कार्यकाल में शुरू हुई गुंडा टैक्स की वसूली अभी भी बेखौफ तरीके से प्रयागराज जनपद सहित आसपास के जनपदों में प्रतिदिन हो रही है प्रयागराज और आसपास के जिलों में विभिन्न प्रकार के अवैध तरीके से गुंडा टैक्स वसूली के मामले को बेनकाब करने के मामले में विक्रम टैक्सी यूनियन के वसूली का उदाहरण अतीक के लोगों की गुंडा टैक्स वसूली को बेनकाब करने के लिए पर्याप्त है प्रयागराज जनपद के शहर के हर चौराहे से लेकर आसपास के जनपदों के हर चौराहे पर विक्रम टैक्सी की वसूली के नाम पर यूनियन के गुंडे सुबह से देर रात तक सवारी भरने वाले वाहनों के आगे पीछे डंडे लेकर खड़े रहते हैं नंबर लगाने के नाम पर इन गुंडो को जिस वाहन चालक ने रकम नहीं दी उसके वाहन को सड़क पर चलने नहीं दिया जाता है प्रत्येक वाहन स्टैंड पर इन गुंडों का पूरी तरह से कब्जा है उत्तर प्रदेश सरकार के आरटीओ विभाग द्वारा रजिस्ट्रेशन लिए जाने के बाद भी वाहन सड़क पर नहीं चल पाते हैं गुंडो को गुंडा टैक्स देने के बाद ही वाहन चालक वाहन में सवारी भरकर गंतव्य को रवाना हो सकते हैं वरना उनके साथ मारपीट लड़ाई झंझट किया जाता है आखिर विक्रम टैक्सी यूनियन को वसूली का अधिकार किसने दिया है यह तो समाज सेवा की संस्था के नाम से पंजीयन कराई गई है तो फिर आखिर विक्रम टैक्सी यूनियन के नाम पर बीते चार दशक से बेखौफ तरीके से प्रयागराज और उसके आसपास के जनपदों में हो रही यह बड़ी वसूली चर्चा का विषय है लेकिन प्रयागराज से लेकर आसपास के जनपद के पुलिस अधिकारियों ने अभी तक विक्रम टेक्सी यूनियन के नाम पर हो रही अवैध वसूली को बंद कराने के बाद वाहन चालकों को राहत देने का प्रयास नहीं किया है अवैध वसूली को बंद करने के लिए अभी तक मीटिंग और चचाएँ भी अफसरो में नहीं शुरू की है वाहन के नाम पर वसूली की स्थिति इतनी आतंक अत्याचार से भरी है कि वसूली में लगे गुंडो के रैकेट सदस्यों की गुंडई के आगे वाहन चालक जुबान खोलने का साहस नहीं कर पाते हैं बीते चार दशक से प्रयागराज जनपद के शहर क्षेत्र सहित आसपास के पड़ोसी जनपदों में सब कुछ दिन के उजाले में खुलेआम हो रहा है आम जनता भी पूरे दिन होने वाली वसूली को देख कर दांतो तले उंगली दबा रही है लेकिन पुलिस कर्मियों को वाहनों से वसूली दिखाई नहीं पड़ रही है चचाओं पर जाए तो केवल प्रयागराज जनपद में 20 हजार से अधिक टेंपो टैक्सी से 5 लाख रुपए से अधिक की गुंडा टैक्स की वसूली प्रतिदिन खुलेआम हो रही है पड़ोसी जनपदों की चर्चा करें तो पड़ोसी जनपदों में भी 10 हजार से अधिक टेंपो टैक्सी से 3 लाख रुपए से अधिक प्रतिदिन की वसूली बेखौफ हो रही है वसूली के लिए रैकेट बनाकर करोड़ों रुपए महीने की वसूली करने वाले राकेट के सदस्यों के कारनामों को गंभीरता से लेना होगा। समाज सेवा का रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यूनियन के नाम पर अवैध तरीके से शुरू हुई वसूली को पूरी तरह से बंद करना होगा लेकिन क्या यूनियन के नाम पर बेखौफ तरीके से करोड़ो रुपए महीने की हो रही वसूली को बंद करने में योगी सरकार के अफसर सफल हो पाएंगे या फिर अतीक अहमद के कार्यकाल में शुरू हुई गुंडा टैक्स की वसूली उनके जाने के बाद भी उनके गुंडों द्वारा बेखौफ तरीके से होती रहेगी व्यवस्था पर यह बड़ा सवाल खड़ा है।

संपादक की कलम से

सत्ता का लोभ और धन की लालसा बड़ा सबब

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि सिद्धांतों के बिना राजनीति पाप है। भारतीय राजनीति का उद्भव प्राचीन काल से हुआ है,किंतु इसकी प्रकृति में परिवर्तन तब आया जब भारत विश्व स्तर पर एक आधुनिक राज्य के रूप में स्थापित हुआ। भारतीय राजनीति में स्वतंत्रता के पूर्व नैतिकता एवं संस्कृति की एकता के दम पर स्वतंत्रता संग्राम पर विजय प्राप्त की थी। विवेकानंद, सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री,सरदार वल्लभभाई पटेल, लाला लाजपत राय और ना जाने कितने महान व्यक्तियों ने नैतिकता और संस्कृति में एकजुट होकर ब्रितानी हुकूमत को देश से भगाया था। देश का स्वतंत्रता संग्राम जनप्रतिनिधियों को नैतिकता के पालन के लिए प्रोत्साहित करता रहा है। जब भारत में स्वतंत्र लोकतांत्रिक राजनीति का आरंभ हुआ तो नैतिकता का पतन, क्षरण आरंभ हो गया। राजनीति धीरे धीरे सिद्धांत से विमुख होती गई तथा इसकी दशा और दिशा में नैतिकता का क्षरण तथा पतन धीरे-धीरे प्रारंभ हो गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह माना जाता रहा है की राजनीति में अनैतिकता के पनपने के दो प्रमुख कारण माने गए धनबल और बाहुबल। राजनीति में ऐसा कहा जाता है कि जिसके पास धन होता है उसके पास बल भी होता है, और भारतीय राजनीति में और कई प्रदेशों के संदर्भ में यह बात सर्वथा उचित प्रतीत होती है। भारतीय राजनीति में धनबल और बाहुबल का नकारात्मक प्रभाव नैतिकता के पतन के रूप में सामने आया है। स्वतंत्रता के पश्चात राजनेताओं में स्वयं के लिए धन एकत्र करना एवं येन केन प्रकारेण सत्ता स्थापित करने के प्रयास के कारण नैतिकता धीरे-धीरे स्खलित होती गई है। नेताओं का बेईमानी और भ्रष्ट कार्य में लिप्त होना भी राजनीति में नैतिकता के पतन का प्रमुख कारण है,और यही कारण है कि आज अधिकतर भारतीय राजनेताओं पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए गए हैं, एवं उन पर मुकदमा भी चल रहा है। यह सर्व विदित है कि सार्वजनिक संपत्ति को अपनी स्वयं की संपत्ति बनाने की होड़ में राजनेताओं को कर्तव्य पथ से विमुख होते देखा गया है। राजनीति में राजनेताओं ने इसे संपत्ति कमाने का जरिया ही मान लिया है। सार्वजनिक संसाधनों का पूरा नियंत्रण राजनेताओं के पास होता है इसका उपयोग में अपने संसदीय, विधानसभा क्षेत्र के लिए करते हैं। इस तरह पूरे राज्य स्वदेश के संसाधनों का किसी एक क्षेत्र में निवेश करते जाते हैं, जो अनैतिकता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। राजनीति में भाई भतीजावाद एक सामान्य बहुत चर्चित लक्षण है, कोई भी राजनेता आज यह चाहता है कि योग्यता हो ना हो कोई भी बड़ा पद उसके भाई, भतीजे ,पत्नी ,बेटे आदि को मिल जाए, इतना ही नहीं कई बार सगे संबंधियों के अपराधी होते हुए भी राजनीतिक पद अथवा चुनावी टिकट दिलाने का प्रयास करते हैं। भारतीय राजनीति में क्रोनी कैपिटलिस्म यानी उद्योगपतियों एवं राजनीतिज्ञों का आपस में गठजोड़ को क्रोनी कैपिटलिस्म माना जाता है। इसमें उद्योगपति राजनीतिक चंदा का हवाला देते हुए राजनेताओं से देश की नीतियों को अपने पक्ष में करवा लेते हैं और इस तरह जनता का शोषण शुरू हो जाता है। भारतीय राजनीति में इस तरह के आरोप लंबे समय से लगते आ रहे हैं। राजनीति में उच्च नैतिक मूल्यों का महत्व घटने के साथ-साथ राजनीतिक मापदंड शासन को राजनीति आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में नकारात्मक रूप से प्रभावित करता जा रहा है। राजनेताओं से अपेक्षा होती है कि वह समाज के प्रति प्रतिबद्ध होकर काम करें किंतु अनैतिक राजनीति इस प्रतिबद्धता में एक बड़ी बाधा है, और इसके साथ ही राजनेता अनैतिक प्रथाओं का समावेश कर अपनी राजनीतिक रोटी सेकने में कतई गुरेज नहीं करते हैं। इतना ही नहीं राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप की भाषा भी निम्न स्तर तथा अनैतिक होते जा रही है, और यही कारण है कि राजनीति में अयोग्य लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है।

भाजपा का ह्यनारी शक्ति वंदन विधेयक के सहारे अगले चुनाओं में महिलाओं के वोटों पर नजर

अशोक भाटिया

अगले 5 राज्यों व 2024 के लोकसभा चुनाओं की की तैयारियों में जुटी भारतीय जनता पार्टी ने महिला आरक्षण का बड़ा दांव चला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने संसद के विशेष सत्र में महिला आरक्षण से संबंधित नारी शक्ति वंदन विधेयक पेश किया। लोकसभा में लंबी चर्चा के बाद ये विधेयक पारित हो गया है। विधेयक के पक्ष में 454 वोट पड़े जबकि इसके विरोध में केवल दो वोट पड़े। विपक्षी कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी पार्टियों ने कुछ आपत्तियों, कुछ सुझावों के साथ बिल के समर्थन में मतदान किया, ऐसा नहीं लगता कि राज्यसभा में भी कोई बाधा आएगी। मोदी सरकार के इस कदम को 2024 चुनाव से पहले मास्टर स्ट्रोक बताया जा रहा है। वहीं, जानकार इसे पांच राज्यों के चुनाव से जोड़कर देख रहे हैं।

दरअसल महिला आरक्षण बिल भाजपा के कोर एजेंडे में रहा है। अटल बिहारी सरकार के समय भी इसे पास कराने की कोशिश की गई थी, लेकिन तब बहुमत नहीं होने की वजह से यह अटक गया। मोदी सरकार में भी लंबे वक्त से इसे लागू करने की मांग उठ रही है।भारतीय जनता पार्टी ने 2019 के चुनावी घोषणापत्र में भी महिलाओं को संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण देने का वादा किया था। चर्चा इस बात की है कि भाजपा अपने सियासी समीकरण को दुरुस्त करने के लिए इस बिल का सहारा ले सकती है।

गौरतलब है कि लोकसभा से पहले मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान समेत पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव हैं। विधानसभा चुनाव में लगभग दो महीने का समय बचा है। मध्य प्रदेश से लेकर छत्तीसगढ़ और राजस्थान तक यात्राओं की सियासत चल रही है। छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस राज्य सरकार की लोक लुभावन घोषणाओं के सहारे सत्ता छीनने की कोशिश में है तो वहीं भारतीय जनता पार्टी परिवर्तन यात्राओं के जरिए सत्ता में वापसी की। मध्य प्रदेश में सीएम शिवराज जन आशीर्वाद यात्रा पर निकले हैं तो कांग्रेस भी जनाक्रोश यात्रा निकाल रही है।

राजनीतिक विश्लेषक बताते है कि लोकसभा चुनाव में अभी करीब छह महीने का समय बचा है और शीतकालीन सत्र में करीब दो महीने का। सरकार का फोकस अगर बस लोकसभा चुनाव ही होता तो ये बिल शीतकालीन सत्र में लाया जाता। तब तक समय चक्र की चाल चुनाव और तारीख की दूरी थोड़ी और कम कर चुकी होती। लेकिन सरकार ये बिल विशेष सत्र में लेकर आई जो बताता है कि निगाहें भले ही 2024 पर हों, निशाना पांच राज्यों के चुनाव हैं।

अब सवाल ये भी उठ रहे हैं कि राज्यों के चुनाव में ऐसा क्या है कि मोदी सरकार को महिला आरक्षण के जरिए एजेंडा सेट करना पड़ रहा है? ये समझने के लिए भाजपा और कांग्रेस की रणनीति के साथ ही नेतृत्व की चर्चा जरूरी है। भाजपा के लिए चुनावी राज्यों में कई चुनौतियां हैं। मध्य प्रदेश में सत्ता में रहकर भी पार्टी मुख्यमंत्री पद का चेहरा नहीं बता पा रही है। छत्तीसगढ़ में साढ़े चार साल तक भाजपा नेताओं की निष्क्रियता के साथ राजस्थान में वसुंधरा राजे की पार्टी की परिवर्तन यात्रा से दूरी को लेकर भी सवाल खड़े हो रहे हैं। दूसरी तरफ कांग्रेस जहां सत्ता में है, वहां लोकलुभावन योजनाओं के सहारे माहौल बनाने की रणनीति पर अमल शुरू कर दिया। पार्टी जहां विपक्ष में है, वहां स्थानीय समस्याओं के साथ ही महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर सरकार को घेरना शुरू कर दिया, प्याज और टमाटर की कीमतें याद दिलाई जाने लगीं।

कांग्रेस ने मध्य प्रदेश में महिलाओं पर फोकस कर 500 रुपये में गैस सिलेंडर और हर महीने 1500 रुपये देने की गारंटी का कार्ड भी चल चुकी है। महिला मतदाता भाजपा की ताकत रही हैं और इस वोट बैंक में सेंध का परिणाम पार्टी कर्नाटक नतीजों में देख चुकी है। इंडिया टुडे एक्सिस माई इंडिया के एग्जिट पोल के मुताबिक कर्नाटक चुनाव में 44 फीसदी महिलाओं ने कांग्रेस को वोट किया तो वहीं भाजपा के पक्ष में 33 फीसदी महिला मतदाताओं ने।

इसका इम्पैक्ट उत्तर प्रदेश के नतीजों से ऐसे समझा जा सकता है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की बड़ी जीत के बाद खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसके लिए खासतौर पर महिला मतदाताओं का धन्यवाद किया था। उत्तर प्रदेश चुनाव में इंडिया टुडे एक्सिस माई इंडिया के एग्जिट पोल के मुताबिक 48 फीसदी महिला मतदाताओं ने भाजपा के पक्ष में मतदान किया था वहीं सपा को 32 फीसदी महिलाओं के वोट मिले थे। महिला मतों में ये 16 फीसदी की लीड आधी आबादी के नजरिए से देखें तो करीब 8 फीसदी पहुंचती है जो बड़ा अंतर है।

जानकारों का कहना है कि मध्य प्रदेश में कांग्रेस का स्थानीय समस्याएं उठाना, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सरकार की ओर से लगातार लोकलुभावन योजनाओं का ऐलान भाजपा के लिए मुसीबत बन रहा था। कांग्रेस की रणनीति चुनाव लोकलाइज करने की रही है और भाजपा शायद समझ रही है कि ऐसा हुआ तो उसकी संभावनाएं कमजोर होंगी। यही वजह है कि चुनावी राज्यों में पार्टी सनातन विवाद से लेकर जी 20 की सफलता तक की बात कर रही है, किसी को मुख्यमंत्री फेस बनाने से बचते हुए चुनाव अभियान को प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे पर लाने की कोशिश कर रही है। महिला आरक्षण सीधे-सीधे महिलाओं से जुड़ा है ही, राज्यों से भी जुड़ा है। ऐसे में विरोधियों के लिए भाजपा पर ये आरोप लगाना भी मुश्किल होगा कि पार्टी राष्ट्रीय मुद्दे के सहारे राज्य चुनाव में वोट मांग रही है। महिला आरक्षण के दांव को महंगाई की वजह से महिलाओं की भाजपा को लेकर नाराजगी दूर करने की कोशिश भी बताया जा रहा है।

चुनाव आयोग के 2019 के डेटा के मुताबिक भारत में कुल 91 करोड़ मतदाता में महिला वोटर्स की संख्या करीब 44 करोड़ है। आयोग के मुताबिक पिछले लोकसभा चुनाव में वोट डालने के मामले में पुरुषों मुकाबले महिलाएं आगे रहीं। आयोग के मुताबिक लोकसभा चुनाव 2019 में 67.02 प्रतिशत पुरुष और 67.18 प्रतिशत महिलाओं ने मतदान किया था। तमिलनाडु, अरुणाचल, उत्तराखंड और गोवा समेत 12 राज्यों में महिलाओं वोटरों ने अधिक मतदान किया। वहीं बिहार, ओडिशा और कर्नाटक में दोनों के वोट करीब-करीब बराबर पड़े। इन 12 राज्यों में लोकसभा की करीब 200 सीटें हैं। भाजपा को तमिलनाडु, केरल छोड़कर बाकी के राज्यों में पिछले चुनाव में बंपर जीत मिली थी।2014 में महिलाओं के मुकाबले पुरुषों ने अधिक मतदान किया था। आयोग के मुताबिक पुरुषों के 67।09 तो महिलाओं के 65. 63 वोट पड़े थे। हालांकि, बिहार, उत्तराखंड, तमिलनाडु जैसे राज्यों में महिलाओं के वोट अधिक पडे।

2019 में भाजपा की प्रचंड जीत के पीछे महिला वोटरों की मुख्य भूमिका मानी गई। सीएसडीएस के मुताबिक 2019 में भाजपा को कुल 37 प्रतिशत वोट मिले, जबकि उसे वोट देने वाली महिलाओं में से 36 फीसदी के वोट मिले। कांग्रेस को सिर्फ 20 प्रतिशत महिलाओं का समर्थन मिला। महिलाओं के 44 प्रतिशत वोट अन्य पार्टियों को मिले। अन्य पार्टियों में तृणमूल, बीजू जनता दल, बीआरएस और जेडीयू को सबसे अधिक महिलाओं का वोट मिला।

सीएसडीएस के मुताबिक गुजरात में भाजपा को कुल 62 प्रतिशत वोट प्राप्त हुए, जबकि उसे महिलाओं के 64 प्रतिशत वोट मिले। इसी तरह बिहार, असम, ओडिशा और उत्तर प्रदेश में भाजपा के मिले कुल वोट में महिला मतदाताओं की संख्या अधिक था। उत्तर प्रदेश में भाजपा को कुल 49 प्रतिशत वोट मिला, लेकिन यहां उसे वोट देने वाली महिलाओं में से 51 फीसदी के वोट मिले। तमिलनाडु और महाराष्ट्र में भाजपा को दोनों के बराबर वोट मिले। जिन राज्यों में भाजपा को महिलाओं के अधिक वोट मिले, वहां पार्टी ने बंपर जीत दर्ज की। उदाहरण के लिए- गुजरात में भाजपा को सभी 26 सीटों पर जीत मिली। इसी तरह बिहार में पार्टी ने 16, ओडिशा में 10 और असम में 9 सीटों पर जीत हासिल की। महाराष्ट्र में भाजपा ने 23 सीटों पर जीत दर्ज की। यहां उसके गठबंधन सहयोगी शिवसेना को 18 सीटों पर जीत मिली थी।2014 के चुनाव में भी भाजपा को महिलाओं का समर्थन जमकर मिला था। सीएसडीएस के मुताबिक 2014 में 29 प्रतिशत महिलाओं ने भाजपा के पक्ष में वोट डाले थे। उस साल भाजपा को कुल 31 प्रतिशत वोट मिले थे। 2009 के मुकाबले यह बहुत ही बढ़ी बढ़ोतरी थी। 2009 में 18 प्रतिशत महिलाओं का वोट ही भाजपा को मिला था।

बढ़ता ई-कचरा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिये खतरा

? ललित गर्ग ?

लगातार बढ़ रहा ई-कचरा न केवल भारत के लिये बल्कि समूची दुनिया के बड़ा पर्यावरण, प्रकृति एवं स्वास्थ्य खतरा है। ई-कचरा से तात्पर्य उन सभी इलेक्ट्रानिक और इलेक्ट्रिकल उपकरणों (ईईई) तथा उनके पार्ट्स से है, जो उपभोगकर्ता द्वारा दोबारा इस्तेमाल में नहीं लाया जाता। ग्लोबल ई-वेस्ट मानिटर-2020 के मुताबिक चीन और अमेरिका के बाद भारत दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा ई-वेस्ट उत्पादक है। चूंकि इलेक्ट्रिक्ल और इलेक्ट्रानिक उपकरणों को बनाने में खतरनाक पदार्थों (शीशा, पारा, कैडमियम आदि) का इस्तेमाल होता है, जिसका मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ता है। दुनियाभर में इस तरह से उत्पन्न हो रहा ई-कचरा एक ज्वलंत समस्या के रूप में सामने आ रहा है। पारा, कैडमियम, सीसा, पॉलीब्रोमिनेटेड फ्लेम रिटार्डेंट्स, बेरियम, लिथियम आदि ई-कचरे के जहरीले अवशेष मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक होते हैं इन विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने पर मनुष्य के हृदय, यकृत, मस्तिष्क, गुर्दे और कंकाल प्रणाली की क्षति होती है। इसके अलावा, यह ई-वेस्ट मिट्टी और भूजल को भी दूषित करता है। ई-उत्पादों की अंधी दौड़ ने एक अन्तहीन समस्या को जन्म दिया है। शुद्ध साध्य के लिये शुद्ध साधन अपनाने की बात इसीलिये जरूरी है कि प्राप्त ई-साधनों का प्रयोग सही दिशा में सही लक्ष्य के साथ किया जाये, पदार्थ संयम के साथ इच्छा संयम हो।

आज दुनिया के सामने कई तरह की चुनौतियां हैं, जिसमें से ई-वेस्ट एक नई उभरती विकराल एवं विध्वंसक समस्या भी है। दुनिया में हर साल 3 से 5 करोड़ टन ई-वेस्ट पैदा हो रहा है। ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर के मुताबिक भारत सालाना करीब 20 लाख टन ई-वेस्ट पैदा करता है और अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी के बाद ई-वेस्ट उत्पादक देशों में 5वें स्थान पर है। ई-वेस्ट के निपटारे में भारत काफी पीछे है, जहां केवल 0.003 मीट्रिक टन का निपटारा ही किया जाता है। यूएन के मुताबिक, दुनिया के हर व्यक्ति ने साल 2021 में 7.6 किलो ई-वेस्ट डंप किया। भारत में हर साल लगभग 25 करोड़ मोबाइल ई-वेस्ट हो रहे हैं। ये आंकड़ा हर किसी को चौंकाता है एवं चिंता का बड़ा कारण बन रहा है, क्योंकि इनसे कैंसर और डीएनए डैमेज जैसी बीमारियों के साथ कृषि उत्पाद एवं पर्यावरण के सम्मुख गंभीर खतरा भी बढ़ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, ई-कचरे से निकलने वाले जहरीले पदार्थों के सीधे संपर्क से स्वास्थ्य जोखिम हो सकता है।

दुनिया भर में इलेक्ट्रॉनिक कचरे के बढ़ने की सबसे बड़ी वजह इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों की तेजी से बढ़ती खपत है। आज हम जिन इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों को अपनाते जा रहे हैं उनका जीवन काल छोटा होता है। इस वजह से इन्हें जल्द फेंक दिया जाता है। जैसे ही कोई नई टेक्नोलॉजी आती है, पुराने को फेंक दिया जाता है। इसके साथ ही कई देशों में इन उत्पादों के मरम्मत और रिसायक्लिंग की सीमित व्यवस्था है या बहुत महंगी है। ऐसे में जैसे ही कोई उत्पाद खराब होता है लोग उसे ठीक कराने की जगह बदलना ज्यादा पसंद करते हैं। साल 2021 में डेफ्ट यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी द्वारा किए गए सर्वेक्षण में फोन बदलने का सबसे बड़ा कारण साफ्टवेयर का धीमा होना और बैटरी में गिरावट रहा। दूसरा बड़ा कारण, नये फोन के प्रति आकर्षण था। कंपनियों की मार्केटिंग और दोस्तों द्वारा हर साल फोन बदलने की आदतों से भी प्रभावित होकर भी लोग नया फोन ले लेते हैं, जबकि इसकी जरूरत नहीं होती। इस वजह से भी ई-कचरे में इजाफा हो रहा है। एक अन्य आंकड़े के मुताबिक अगर साल 2019 में उत्पादित कुल इलेक्ट्रॉनिक कचरे को रिसायकल कर लिया गया होता वो करीब 425,833 करोड़ रुपए का फायदा देता। यह आंकड़ा दुनिया के कई देशों के जीडीपी से भी ज्यादा है।

यूनाइटेड नेशंस यूनिवर्सिटी की ओर से जारी ह्यग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर 2020 रिपोर्ट के मुताबिक साल 2019 में दुनिया में 5.36 करोड़ मीट्रिक टन ई-कचरा पैदा हुआ था।

शिंदे और दुष्यंत चौटाला की राजस्थान में एंट्री

बाल मुकुन्द ओझा

राजस्थान विधानसभा के आगामी चुनावों में हालाँकि कोई तीसरा मोर्चा अब तक कोई आकार नहीं ले पाया है मगर अन्य राज्यों के कई प्रभावी नेताओं ने प्रदेश में एंट्री लेकर कांग्रेस, भाजपा और बेनीवाल की पार्टी की धड़कने बढ़ा दी है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने गहलोत मंत्रिमंडल से बर्खास्त मंत्री राजेंद्र गुढा के जरिये प्रदेश में एन्ट्री ली है। उन्होंने गुढा के बेटे के जन्मदिन के अवसर पर एक बड़ी रैली को सम्बोधित किया और गुढा को सच्चाई से लड़ने वाला योद्धा करार दिया। एकनाथ शिंदे ने कहा कि अब राजस्थान और महाराष्ट्र की वीरता और शौर्य का मिलन हुआ है और अब ये दोनों साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे। गुढ़ा को शिव सेना के राजस्थान प्रदेश इकाई का समन्वयक का नियुक्ति पत्र प्रदान किया है। शिंदे की शिवसेना वैसे एनडीए के साथ गठबंधन में शामिल है। गुढा को उम्मीद है भाजपा उनके लिए उदयपुर वाटी की सीट छोड़ देंगी।

दुष्यंत चौटाला पूर्व उप प्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल के पड़ पोते है और हरियाणा में भाजपा के साथ मिलीजुली सरकार में उप मुख्यमंत्री है। उनकी पार्टी जन नायक जनता पार्टी भी एनडीए में शामिल है। चौधरी देवीलाल राजस्थान के सीकर से लोकसभा के सदस्य रहे है। उन्होंने तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ को हराकर यह सीट जीती थी। दुष्यंत चौटाला केपिता अजय सिंह चौटाला सीकर जिले के दांता रामगढ से विधायक रहे है। उन्होंने कांग्रेस के कद्दावर नेता नारायण सिंह को हराकर प्रदेश की सियासत में प्रवेश किया था। अजय सिंह नोहर से भी विधायक रहे है। वे राजस्थान के जाट मतदाताओं में अपनी पहचान बनाये हुए है। दुष्यंत चौटाला ने कहा है राजस्थान में जेजेपी मजबूती के साथ विधानसभा चुनाव लड़ेगी और बेहतर चुनाव परिणाम देगी। प्रदेश की जनता के आशीर्वाद से राजस्थान विधानसभा का ताला इस बार जेजेपी के चुनाव चिन्ह चाबी से खुलेगा। पूर्व विधायक प्रतिभा सिंह और डा. मोहन सिंह नदवई को जननायक जनता पार्टी में शामिल किया है। प्रतिभा सिंह नवलगढ़ विधानसभा क्षेत्र से वर्ष 2003-2008 तक निर्दलीय विधायक रह चुकी हैं। वे दो बार नवलगढ़ से ब्लाक समिति प्रधान रही हैं। वहीं डॉ. मोहन सिंह नदवई भरतपुर विधानसभा क्षेत्र में खासा प्रभाव रखते हैं। उनकी धर्मपत्नी डॉ. सुलभा दो बार भरतपुर जिला परिषद की चेयरपर्सन रह चुकी हैं। हाल ही में सीकर से पूर्व जिला परिषद चेयरपर्सन एवं दातारामगढ़ से कांग्रेस विधायक वीरेंद्र सिंह की धर्मपत्नी रीटा सिंह भी जेजेपी में शामिल हुई थी। रीटा सिंह प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष रहे नारायण सिंह के बेटे की बहु है। दुष्यंत ने कहा कि अगर राजस्थान के लोग समर्थन करते हैं, तो हरियाणा की तरह ही राज्य के युवाओं को निजी क्षेत्र में नौकरियों में 75 प्रतिशत आरक्षण देंगे। महिलाओं को पंचायती राज में 50 फीसदी हिस्सेदारी देंगे।

क्यों मोदी ने संसद पर हमले को किया याद

आर.के. सिन्हा

भारत के संसदीय लोकतंत्र के लिये 13 दिसंबर, 2001 काला दिन था। उस दिन देश के दुश्मनों ने हमारे लोकतंत्र के मंदिर को निशान बनाया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संसद के विशेष सत्र को संबोधित करते हुए संसद पर हुए उस हमले का उल्लेख करके उन शूरवीरों के प्रति देश की कृतज्ञता को ज्ञापित किया जिनकी बहादुरी के कारण ही संसद भवन के अंदर आतंकी घुस नहीं सके थे। तब संसद का शीतकालीन सत्र चल रहा था। उस दिन विपक्षी सांसद राज्यसभा और लोकसभा में हंगामा काट रहे थे। सदन को तत्काल 45 मिनट के लिए स्थगित कर दिया गया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी संसद से घर की ओर जा चुके थे। हालांकि, उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी समेत अन्य सांसद संसद भवन में ही मौजूद थे। तभी सफेद एंबेसडर कार से जैश-ए-मुहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा के पांच आतंकी संसद भवन परिसर में प्रवेश करते हैं। भारत के दुश्मनों ने संसद भवन में दाखिल होते ही ताबड़तोड़ गोलीबारी चालू कर दी थीं।

जिस दिन संसद भवन पर हमला हुआ था उस दिन दिल्ली में गुलाबी धूप खिली हुई थी। किसी ने अपने ख्वाबों में भी नहीं सोचा था कि आज संसद भवन पर हमला करने का कोई साहस करेगा। संसद भवन परिसर में धमाकों की आवाजें सुनकर लालकृष्ण आडवाणी ससंद भवन से बाहर आते हैं। तभी सुरक्षाकर्मी उन्हें रोक देते हैं, हमले की जानकारी देते हैं। इतना सुनते ही उपप्रधानमंत्री आडवाणी ससंद भवन में स्थित अपने कार्यालय में चले जाते हैं और प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को फोन करते हैं।

संसद पर हुए हमले में राज्यसभा सचिवालय के सुरक्षा सहायक जगदीश प्रसाद यादव, मातबर सिंह नेगी, केंद्रीय रिजर्व सुरक्षा बल (सीआरपीएफ) की कॉन्स्टेबल कमलेश कुमारी, दिल्ली पुलिस के उप निरीक्षक रामपाल, नानक चंद, हेड कॉन्स्टेबल ओम प्रकाश, बिजेन्दर सिंह और घनश्याम तथा केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के एक माली देशराय शहीद हो गये थे। कृतज्ञ राष्ट्र इन शहीदों को सदैव याद रखेगा। इन्होंने भारत विरोधी ताकतों की कोशिशों को नाकाम कर दिया था। बेशक, यदि संसद भवन में तैनात बहादुर सुरक्षाकर्मियों ने आतंकियों का कसकर मुकाबला न किया होता तो बहुत बड़ा नुकसान हो सकता था।

संसद भवन पर हुए उस हमले में सबसे पहले केंद्रीय रिजर्व सुरक्षा बल (सीआरपीएफ) की कमलेश कुमारी यादव ने वतन के लिये अपनी जान का नजराना पेश किया था। कमलेश कुमारी की ड्यूटी संसद भवन के गेट नंबर एक पर थी। कमलेश कुमारी ने देखा कि एक एंबेसेडर कार डीएल3सीजे 1527 वहां से बिना उनकी अनुमति लिए संसद में तेजी से अंदर चली गई। कमलेश कुमारी को गड़बड़ नजर आई। वो भागकर अपने गेट को बंद करने लगीं और फिर उन्होंने बाकी गेटों पर तैनात अपने साथियों को सतर्क भी कर दिया। इसी दौरान चेहरे पर नकाब ओढ़े आतंकियों ने उन पर गोलियों की बौछार कर दी। उन्हें 11 गोलियां लगीं। यह 11.50 बजे की घटना है। अगर कमलेश कुमारी ने तुरंत अपने सहयोगियों को अलर्ट न किया होता तो आतंकियों को संसद भवन में बम विस्फोट करने का मौका मिल जाता। आतंकियों के पास एके-47 और हैंड ग्रेनेड थे। कहना होगा कि संसद पर हमले के कुछ पलों के भीतर ही सुरक्षा कर्मी आतंकियों से टक्कर लेने के लिये तैयार हो गये थे। तब ही एक आतंकी ने गेट नंबर-एक से संसद भवन में घुसने की कोशिश की, लेकिन सुरक्षा बलों ने उसे वहीं ढेर कर दिया। इसके बाद उसके शरीर पर लगे बम में भी ब्लास्ट हो गया। फिर पहले से संसद भवन परिसर में घुस चुके तीन आतंकियों को मार दिया गया। इसके बाद बचे हुए आखिरी आतंकी ने गेट नंबर-5 की तरफ दौड़ लगाई, लेकिन वो भी जवानों की गोली का शिकार हो गया।

बहरहाल, संसद हमले के दो दिन बाद ही 15 दिसंबर 2001 को अफजल गुरु, एसएआर गिलानी, अफशान गुरु और शौकत हुसैन को गिरफ्तार कर लिया गया। इन सबने संसद पर हमले की साजिश रची थी। बाद में सुप्रीम कोर्ट ने अफजल गुरु को मौत की सजा सुनाई। उसे 9 फरवरी 2013 को दिल्ली की तिहाड़ जेल में सुबह 8 बजे फांसी पर लटका दिया गया। पूरे मामले की जांच के दौरान पता चला था कि अफजल ने पाकिस्तान में आतंकी ट्रेनिंग ली थी।

बहरहाल, अब देश की संसद को अपना नया भवन मिल गया है। बेशक, देश आतंकवाद के खिलाफ एक साथ मिलकर जुलकर लड़ता रहेगा। जब भी देश के सामने आतंकवाद से जुड़े सवाल आयेंगे तब भारत का उत्तर कठोर ही होगा। आतंकवाद के बिन्दु पर सभी राजनीतिक दल और सारे देश की आम जनता एक हैं। कहीं कोई मतभेद नहीं है। इसके साथ ही देश चाहेगा कि नए संसद भवन में कम से कम उन दो प्रस्तावों पर अमल करने की दिशा में भी भी पहल हो जिन्हें देश की संसद ने पारित किया हुआ है। बता दें कि देश की संसद में 8 नवंबर,1962 को उस प्रस्ताव को रखा गया था जिसमें चीन से देश के उस हिस्से (अक्सईचिन) को वापस लेने के संबंध में जिसपर चीन ने 1962 की जंग के बाद कब्जा लिया था। प्रस्ताव में कहा गया था- ह्यये सदन पूरे विश्वास के साथ भारतीय जनता के संकल्प को दोहराना चाहता है कि भारत की पवित्र भूमि पर से आक्रमणकारी को खदेड़ दिया जाएगा। इस बाबत भले ही कितना लंबा और कठोर संघर्ष करना पड़े।ह्व इस प्रस्ताव को 14 नवंबर को पारित कर दिया।

जब भी देश की पहली संसद भवन का इतिहास लिखा जायेगा तब उसमें 22 फरवरी,1994 का अवश्य उल्लेख होगा। उस दिन संसद ने एक प्रस्ताव ध्वनिमत से पारित करके पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) पर अपना हक जताते हुए कहा था कि ह्यपी०ओ०के०ह्व भारत का अटूट अंग है। पाकिस्तान को उस भाग को छोड़ना होगा जिस पर उसने कब्जा जमाया हुआ है। संसद के प्रस्ताव का संक्षिप्त अंश कुछ इस तरह से है-

ह्यइह सदन भारत की जनता की ओर से घोषणा करता है- (क) जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और रहेगा। (ख) भारत में इस बात की क्षमता और संकल्प है कि वह उन नापाक इरादों का मुंहतोड़ जवाब दे जो देश की एकता,प्रभुसत्ता और क्षेत्रिय अंखडता के खिलाफ हो।

यही कुछ कारण थे कि प्रधान मंत्री मोदी ने 13 दिसम्बर 2001 के शहीदों को अपनी भावभीनी श्रधांजलि अर्पित कर देश की जनता की ओर से अमर शहीदों को अपनी कृतज्ञता अर्पित की क

इस बीच, देश की चाहत है कि नये संसद भवन में वाद,विवाद और संवाद के लिये सबको खूब मौका मिले ।

घोटाले के खिलाफ लामबन्द किसान सडकों पर उतरेंगे: रुद्र

चित्रकूट। सरकारी योजनाओं में किसानों को दी जा रही सुविधाओं में हो रहे घोटाले के खिलाफ किसान लामबंद होकर सड़कों में उतरेंगे। सरकार की नीतियों से खेत, किसान, और फसल चैपट होता जा रहा है, बिजली पानी मंहगा होता जा रहा जबकि किसान को उसकी उपज का वाजिब दाम भी नहीं मिलता है। इसके बावजूद किसानों के लिए खेती के उन्नत के लिए जो योजनाएँ आती हैं उनमें सरकारी कमार्चारी घोटाला करते हैं।

गुरुवार को किसान सभा की ग्राम कमेटी सुरसेन की बैठक ग्राम कमेटी के अध्यक्ष ललक सिंह की अध्यक्षता में किसान सभा चित्रकूट कार्यालय में हुई। बैठक में ग्राम कमेटी सुरसेन ग्राम कमेटी बरद्वारा एवं ग्राम कमेटी हरिसनपुर के किसान आए। किसानों से किसान सभा के जिलाध्यक्ष का रुद्र प्रसाद मिश्रा ने कहा कि आजादी के बाद से आज तक किसानों के हित में उनकी आय दुगनी करने को कोई नीतियाँ नहीं तैयार की गई, जो भी सरकारें आई किसानों के नाम पर योजनाएँ बना कर उनमें घोटाला किया गया। ग्राम कमेटी के अध्यक्ष ललक सिंह ने कहा कि जिले में लघु सिंचाई विभाग महा घोटाले का कार्यालय बन गया है किसानों को योजनाओं का लाभ न देकर बिचैलिये और दलालों के माध्यम से सिंचाई के उपकरण एवं अन्य सामान जो मुख्यमंत्री सिंचाई योजना के अंतर्गत प्राप्त होता है उस पर घोटाला किया जा रहा है घुले मार्केट में जो सामान 60 हजार रुपये का मिलता है उस सामान को लघु सिंचाई, चित्रकूट के सहायक अभियंता, अभिशाषी अभियंता अपने दलालों के माध्यम से अपनी चाहीती फर्म से कमीशन खाते है और घटिया सामान दिलाकर उच्च गुणवत्ता का पैसा भुगतान करते हैं और यदि किसान घटिया सामान की शिकायत करने लघु सिंचाई विभाग जाता है तो उसे अपमानित किया जाता है। ग्राम कमेटी बरद्वारा के किसान सुरेश चन्द्र ने कहा कि लघु सिंचाई विभाग चित्रकूट पूरे जिले में किसानों के साथ लूट मचाये है उन्होंने बताया कि लाभार्थी किसान को मिलने वाला अनुदान किसान के खाते में नहीं भेजते हैं सीधे अपनी चाहीती फर्म को चेक काट दिया जाता है और सामान की डिलवरी किसान को घर में न देकर उससे किराया भाड़ा वसूला जाता है।

बैठक में सर्वसम्मत से यह तय हुआ कि जिलाधिकारी को एक ज्ञापन भेजा जाये और उनको समय देकर कार्यवाही की उम्मीद की जाये यदि जिलाधिकारी 15 दिन के अंदर लघु सिंचाई विभाग, चित्रकूट के अधिकारियों द्वारा किए गए घोटालों की जांच नहीं करते तो किसान सभा के बैनर तले जिला के हजारों हजार किसान सड़कों पर उतरेंगे। बैठक में किसान दिनेश सिंह, सुशील मिश्रा, फेरन प्रसाद, कुबेर प्रसाद, समरवीर, अजय सिंह, सत्यप्रकाश, शिव प्रकाश, वीरबहादुर सिंह, लल्लूराम त्रिपाठी, शिवम् द्विवेदी, इंद्रजीत तिवारी आदि दो दर्जन किसान शामिल हुए।

राजस्व टीमों ने वसूली अभियान को दी गति

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द के निर्देश पर गुरूवार को वसूली टीम ने भरतकूप एवं घुरेटनपुर क्षेत्र में वसूली अभियान चलाया। जिसमें बकायदारों से वसूली कर कार्यवाही की गयी।

वसूली टीम ने विद्युत, बैंक, खनन, स्टांप, व्यापार कर, परिवहन आदि विभिन्न विभागों के बकायदारों की तलाश की गई। वसूली के दौरान विधुत देय के बांकीदार रामखेलावन निवासी घुरेटनपुर के 10 लाख रूपए के बांकीदार का विधुत कनेक्शन काटा तथा वसूली टीम द्वारा दो लाख रूपए की वसूली की गई। टीम ने बताया कि तहसील कर्वी के अंतर्गत राजस्व विभाग की टीमों द्वारा सघन वसूली अभियान निरंतर चलता रहेगा ताकि विभिन्न विभागों के बकाए की वसूली कराई जा सके।

इस मौके पर अमीन राकेश कुमार पाण्डेय, रहमान खां, विद्यासागर, देशराज, सगीर, सत्यनारायण, कुलदीप आदि मौजूद रहे।

छातृवित्त के लिए आवेदन करें पात्र विद्यार्थी

चित्रकूट। जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह भदौरिया ने बताया कि उत्तर प्रदेश शासन द्वारा वित्तीय वर्ष शैक्षिक सत्र 2023-24 में दशमोत्तर कक्षाओं में अध्ययंगत उत्तर प्रदेश के मूल निवासी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सामान्य वर्ग, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति शैक्षणिक भत्ता एवं शुल्क प्रतिपूर्ति व अन्य कार्यों के लिए समय सारणी निर्गत की गई है। सारणी के अनुसार 22 सितंबर से 31 दिसंबर तक छात्रों द्वारा ऑनलाइन आवेदन किया जाना। 25 सितंबर से 8 जनवरी तक हार्ड कॉपी छात्र-छात्राओं द्वारा वांछित संलग्नको सहित शिक्षण संस्था में जमा किया जाना है। 25 सितंबर से 11 जनवरी 2024 तक शिक्षण संस्थान द्वारा आवेदन पत्र को ऑनलाइन सत्यापित एवं अग्रसारित करना, 31 जनवरी 2024 से 9 फरवरी 2024 तक त्रुटि पूर्ण आवेदन को छात्रों के स्तर से सही करना, उक्त के साथ-साथ अनुसूचित जातिध् अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्रों को द्वितीय चरण में भी आवेदन करने की सुविधा प्रदान की गई है जिसके अंतर्गत छात्रों द्वारा आवेदन किए जाने हेतु समयावधि 1 जनवरी 2024 से 31 मार्च 2024 तक निर्धारित है, उक्त के क्रम में दशमोत्तर छात्रवृत्ति योजना अंतर्गत समस्त छात्रध् छात्राओंध् संस्थाओं को सूचित किया जाता है की शासन द्वारा निर्गत समय सारणी के अनुसार निर्धारित समयावधि में आवेदन की समस्त प्रक्रियात्मक कार्यवाही करते हुए योजना का लाभ उठाएं अधिक जानकारी के लिए अपनी संस्था अथवा जिला समाज कल्याण अधिकारी कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

केशरवानी समाज ने बंजारी माता की निकाली शोभा यात्रा

चित्रकूट। केशरवानी समाज विगत कई वर्षों से बंजारी माता की शोभा यात्रा निकल रहा है। केसरवानी धर्मशाला बस स्टैंड में यात्रा के समापन पर माता जी के मंदिर में पूजा होती है। पूजा के बाद शाम को केसरवानी धर्मशाला बस स्टैंड में प्रसाद के रूप में सभी को भोजन कराया जाता है। इस कार्यक्रम में राकेश केसरवानी, जितेंद्र केसरवानी, रोहित केसरवानी, धर्मेंद्र केसरवानी, नितेश केसरवानी, अंकुर केसरवानी, रवि केसरवानी, शुभम केशरवानी, सोनू केसरवानी समेत केशरवानी समाज के सभी बंधु शामिल हुए।

मौके पर जाकर करायें पैमाइश: डीएम

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने कलेक्ट्रेट में जनता दर्शन एवं संतुष्टि समाधान दिवस में आए फरियादियों की समस्यायें सुनकर निस्तारण के निर्देश दिये।

गुरुवार को उन्होंने शासन की मंशानुसार समस्याओं का समय व गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने चैम्बर में जनता दर्शन एवं संतुष्टि समाधान दिवस में फरियादियों से मिलकर समस्यायें सुनी। मौके पर सम्बन्धित अधिकारियों को दूरभाष पर निस्तारण के निर्देश दिये । भूमि सम्बन्धित समस्याओं को उन्होंने संबंधित उप जिला अधिकारी को निर्देशित किया। तहसीलदार, नायब तहसीलदार को मौके पर जाकर पैमाइश कराकर निस्तारण के निर्देश दिये।

उन्होंने जनता दर्शन में प्राप्त प्रार्थना पत्रों का निस्तारण समय से करने को कहा। जनसुनवाई में अपर उप जिलाधिकारी पंकज वर्मा, अपर उप जिलाधिकारी सौरभ यादव मौजूद रहे।

राज्य स्तरीय सायर मेले का समापन, राज्यपाल शुक्ल ने की अध्यक्षता

सोलन। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने मंगलवार सायं सोलन जिले के अर्की उपमंडल में आयोजित राज्य स्तरीय सायर मेले के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मेले और त्यौहारों के माध्यम से न केवल हमारी समृद्ध संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा मिलता है बल्कि उनका संरक्षण भी सुनिश्चित होता है। उन्होंने कहा कि यह प्रसन्नता का विषय है कि सदियों से चली आ रही परंपराओं को लोगों ने आज भी कायम रखा है।

राज्यपाल ने कहा कि प्राकृतिक आपदा से राज्य को भारी नुकसान होने के बावजूद प्रदेश तीव्र गति इस स्थिति से उबर रहा है और अब स्थितियां सामान्य हो रही हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश का हर व्यक्ति इस आपदा में सहयोग देने के लिए आगे आ रहा है। उन्होंने कहा प्रदेश के लोग बुलंद हौंसले के साथ राज्य के पुनर्निर्माण अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं।

उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि सायर मेला लोगों की आस्था से जुड़ा है जो हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास हमारी समृद्ध परंपराओं को संरक्षित करने का होना चाहिए और युवा पीढ़ी को भी संस्कृति से जोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को हमारी सभ्यता और संस्कृति का न केवल ज्ञान बल्कि उस पर गर्व भी होना चाहिए, तभी देश आगे बढ़ेगा और दुनिया में अपनी पहचान बनायेगा। मेले न केवल सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों के केंद्र होते हैं, बल्कि इनके माध्यम से राज्य की लोक संस्कृति, कला और शिल्प को जानने और समझने का अवसर भी मिलता है।

राज्यपाल ने तीन दिवसीय सायर मेले के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति को बधाई दी। उन्होंने युवा पीढ़ी में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ग्रामीण स्तर पर युवाओं को नशे के प्रवृत्ति से निजात दिलाने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने सायर मेले के दौरान आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये। उन्होंने सायर मेला आयोजन समिति द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी किया। राज्यपाल ने सांस्कृतिक संध्या का भी आनंद लिया।

इससे पहले, मुख्य संसदीय सचिव संजय अवस्थी ने राज्यपाल और लेडी गवर्नर एवं राज्य रेडक्रॉस अस्पताल कल्याण अनुभाग की अध्यक्षा जानकी शुक्ल का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सायर मेले का इतिहास लगभग 380 वर्ष पुराना है और यह लोगों की श्रद्धा का केन्द्र है। उन्होंने कहा कि इन उत्सवों के आयोजन से स्थानीय परम्पराओं एवं समृद्ध संस्कृति का संरक्षण होता है। उन्होंने कहा कि त्यौहारों के माध्यम से लोगों के बीच मेल-मिलाप और आपसी भाईचारा बढ़ता है तथा नई ऊर्जा का संचार होता है।

शंकर ढाबा के इर्द-गिर्द अराजकतत्वों के जमघट से बालिकायें परेशान

गंजेडी-शराबी मचाते हैं उत्पात

चित्रकूट। कोतवाली कर्वी की पुलिस प्रतिदिन शाम को शहर भ्रमण करती है। शहर भ्रमण दौरान पुलिस आम जनता से किसी समस्या के बारे में पूंछताछ नहीं करती। ऐसे में लोग अपनी समस्या पत्रकारों से बताते हैं।

ऐसा ही एक मामला जिला मुख्यालय के बस स्टैण्ड स्थित शंकर ढाबा के पास का आया है। शंकर ढाबा के ठीक बगल से गली के पास एक नाई की दुकान व ढाबा के ठीक बगल से दूसरी ओर देशी शराब ठेके की दुकान है। नाई की दुकान में बैठकर ज्यादातर लोग गांजा पीते हैं व शराब की दुकान में शराब का सेवन करते हैं, फिर ऐसे लोग गली की दीवार से सटकर पेशाब करते हैं। ऐसे में वहां से गुजरने वाली मां-बहनों को शर्मिन्दगी का सामना करना पडता है। गंजेडी व शराबी किस्म के लोग वहां से गुजरने वाली बालिकाओं व युवतियों पर फब्तियां कसते हैं। शंकर ढाबा की गली में तमाम सम्भ्रांत परिवार के लोग रहते हैं। 1 ऐसे परिवारों की एक बालिका के साथ विगत दिवस कुछ शोहदों ने फब्तियां कसीं। उस बालिका ने अपने पिता को सारी बातें घर जाकर बताई। पिता खासे क्षुब्ध हुए, उन्होंने इस पत्रकार से सारी बातें बताईं। इस बारे में पत्रकार ने शहर कोतवाल अजीत कुमार पाण्डेय को जानकारी दी। शहर कोतवाल ने कहा कि वह आज ही गश्त दौरान शंकर ढाबा के आसपास बैठने वाले अराजकतत्वों की धर-पकड के साथ सख्त कार्यवाही करेंगे। अब देखना है कि शहर कोतवाल किस तरह से शंकर ढाबा के आसपास टहलने वाले अराजकतत्वों पर अंकुश लगाते हैं।

अवैध शराब के साथ एक गिरफ्तार

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम के लिए चलाए जा रहे अभियान के क्रम में राजापुर प्रभारी निरीक्षक भास्कर मिश्रा ने बताया कि उप निरीक्षक राम प्रवेश यादव व आरक्षी अंकित शुक्ला, शुभम त्रिपाठी द्वारा राजा यादव पुत्र छेदीलाल यादव निवासी सोतीपुरवा को 30 क्वार्टर देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। आरोपी के विरुद्ध आबकारी अधिनियम के अन्तर्गत अभियोग पंजीकृत किया गया।

गांजा तस्करी आरोपी को हुई दो वर्ष की सजा

चित्रकूट। पुलिस महानिदेशक उत्तर प्रदेश महोदय द्वारा चलाये जा रहे के तहत न्यायालय में लम्बित चल रहे वादों में गहन पैरवी कर अपराधियों को अधिक से अधिक सजा कराने हेतु पुलिस अधीक्षक महोदया जनपद चित्रकूट श्रीमती वृन्दा शुक्ला द्वारा दिये गये निदेशों के अनुपालन में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कर्वी श्री अजीत कुमार पाण्डेय एवं पैरोकार आरक्षी अमरेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा की गयी गहन पैरवी एवं सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता श्री सनद कुमार मिश्रा द्वारा की गयी प्रभावी प्रस्तुति एवं प्रभावी बहस के फलस्वरूप माननीय न्यायालय अपर जनपद न्यायधीशध्एफटीसी (न्यू) श्री सुशील कुमार वर्मा द्वारा थाना कोतवाली कर्वी में पंजीकृत मु0अ0सं0 497ध्2019 धारा 08ध्20 एनडीपीएस एक्ट के आरोपी अभियुक्त नौसाद उर्फ अहमद पुत्र बाबू खाँ निवासी पहरा रोड़ कस्बा भरतकूप जनपद चित्रकूट को 02 वर्ष के कठोर कारावास व 05 हजार रुपए का अर्थदण्ड से दण्डित किया गया ।

घटना का संक्षिप्त विवरणः-

दिनाँक 16.07.2019 को तत्कालीन उ0नि0 श्री सत्यदेव सिंह थाना कोतवाली कर्वी तथा उनकी टीम द्वारा द्वारा अभियुक्त नौसाद उर्फ रहमत उपरोक्त को 01 किलो 500 ग्राम गांजा के साथ गिरफ्तार किया गया था । अभियुक्त के विरुद्ध थाना कोतवाली कर्वी में मु0अ0सं0 497ध्2019 धारा 08ध्20 एनडीपीएस एक्ट पंजीकृत किया गया था । विवेचक तत्कालीन उ0नि0 श्री राहुल कुमार द्वारा विवेचना पूर्ण करने के बाद आरोपी के विरुद्ध माननीय न्यायालय में दिनाँक 07.10.2019 आरोप पत्र प्रेषित किया गया था ।

ज्वार-बाजरा के खोले जायेंगे क्रय केन्द्र

चित्रकूट। जिले में पहली बार ज्वार-बाजरा के सरकारी क्रय केन्द्र खोले जायेंगे। कर्वी मण्डी, पहाडी मण्डी, बरगढ मण्डी, मानिकपुर मण्डी एवं बसिला मण्डी में केन्द्र खोले जायेंगे। खरीद एक अक्टूबर से 31 दिसम्बर तक होगी। वर्ष 2023-24 में बाजरा का न्यूनतम समर्थन मूल्य रू 2500 रुपये प्रति कुन्तल ज्वार का (हाइब्रिड) मूल्य रु 3180ध् प्रति कुन्तल तथा ज्वार का मूल्य (मालदण्डी) 3225 प्रति कुंतल है,बाजरा एवं ज्वार की बिक्री हेतु खाद्य एवं रसद विभाग की वेबसाइट पंजीकरण प्रारम्भ हो चुका है, बिकी किये गये बाजरा/ज्वार के मूल्य का भुगतान सीधे किसानों के आधार लिंक बैंक खाता में पी०एफ०एम० एस० के माध्यम से करने की व्यवस्था की गई है। पंजीकरण एवं बिक्री हेतु किसी भी सहायता के लिए किसान भाई टोल फ्री नम्बर 1800-1800-150 या सम्बन्धित जनपद के जिला खाद्य विपणन अधिकारी, तहसील के क्षेत्रीय विपणन अधिकारी या ब्लाक के विपणन निरीक्षक से सम्पर्क कर सकते है।

राजापुर पुलिस ने एक वारंटी दबोचा

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश में वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा के मार्गदर्शन में वरि0उ0नि0 रामवीर सिंह व की टीम ने वारंटी राजू सोनकर पुत्र समोखी सोनकर निवासी रुपौलिहन टोला को गिरफ्तार किया है। टीम में वरिष्ठ दरोगा रामवीर सिंह, सिपाही शुभम त्रिपाठी शामिल रहे।

नहर के अन्तिम छोर तक पहुंचना चाहिए पानी: डीएम

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द की अध्यक्षता में गुरूवार को सिल्ट सफाई के सम्बन्ध में जिला स्तरीय समिति की बैठक कलेक्टरेट सभागार में हुई।

अधिशासी अभियंता सिंचाई प्रखंड प्रथम आशुतोष कुमार ने बताया कि जनपद में नहर की 6 बड़ी प्रणालियों में 113 नहरे हैं। जिसमें बड़ी नहर प्रणाली ओहन नहर प्रणाली, बरुआ नहर प्रणाली, चिल्ली मल्ल नहर प्रणाली, गुंन्ता नहर प्रणाली, रसिन लिफ्ट एवं राइट मुख्य नहर है। जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता सिंचाई प्रखंड प्रथम को निर्देशित किया कि नहरों की सूची जनप्रतिनिधियों को उपलब्ध करा दें। उन्होंने कहा कि कोई भी नहर सिल्ट सफाई से छूटने न पाए। अधिशासी अभियंता सिंचाई प्रखंड प्रथम ने कहा कि बड़ी नहरों की सफाई मशीन द्वारा होगी। जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि सिल्ट सफाई से पहले की फोटो खींचा जाए तथा कार्य होने के बाद की भी फोटोग्राफ्स रखें। उन्होंने मुख्य विकास अधिकारी से कहा कि टीम बनाकर इसका निरीक्षण करते रहें। उन्होंने अधिशासी अभियंता से कहा कि इस समय अगर पानी की मांग हो तो नहरों का संचालन कराएं। उन्होंने कहा कि किसानों को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि एक नवम्बर तक सिल्ट सफाई हो जानी चाहिए। जिससे कि किसानों को पानी देने में समस्या न हो। उन्होंने कहा कि सिल्ट सफाई की फोटोग्राफ सत्यापित होने के बाद प्रेषित करें। इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर, अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी, अधिशासी अभियंता सिंचाई निर्माण खंड शिवेश कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

आदिवासियों ने निकाली सामाजिक रैली

मध्य प्रदेश सहित देश में आदिवासियों पर अत्याचार की घटनाएं बड़ी : नीलमणि शाह

रायसेन। बेगमगंज,सुल्तानगंज चौराहे से आदिवासी नेता नीलमणि शाह के नेतृत्व में सैकड़ो आदिवासियों ने रैली निकाली। रैली नगर के मुख्य मार्ग से होती हुई नाहर गार्डन पहुंची। इस अवसर पर पूर्व विधायक एवं जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र पटेल एवं राजेंद्र सिंह तोमर सहित कांग्रेस कार्यकताओं द्वारा अपने-अपने निवास स्थान के सामने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया। नाहर गार्डन में आयोजित कार्यक्रम में राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाहजी का बलिदान दिवस सैकड़ो आदिवासियों की मौजूदगी में मनाया गया । आदिवासी समाज के नेताओं एवं बुजुर्गों ने उन्हें याद करते हुए उनके चित्र पर माल्यार्पण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आदिवासीयों के प्रमुख नेता नीलमणि शाह मध्य प्रदेश सहित देश में आदिवासियों पर हो रहे अत्याचार , अनाचार का तीखा विरोध करते हुए कहाकि आज आदिवासियों की जो दुर्गति मणिपुर , सीधी ,खमरिया एवं अन्य स्थानों पर हो रही है । वह आजादी के बाद से आज तक कभी भी नहीं हुई । हम इसकी घोर निंदा करते हुए आव्हान करते हैं कि सभी आदिवासी अपनी समाज और संस्कृति की सुरक्षा के लिए एकत्रित हो जाएं। राजनीतिक दलों द्वारा हमें भ्रमित किया जाता है और हम उनके लोक लुभावना वायदों में आकर गलत निर्णय कर लेते हैं लेकिन आज हमें आदिवासी विरोधी सरकारों को सबक सिखाने की जरूरत है। यदि हमारी मां बहने ठान लें तो अपने-अपने गांव में होने वाली अवैध शराब की बिक्री पर प्रभावी ढंग से रोक लगा सकती हैं। इसको रोकने के लिए उठ खड़ी हों ताकि हमारे समाज में शराब जैसी बीमारी से बर्बाद होने वाले घरों और हमारी पीढ़ी को बचाया जा सके।

राजीव गांधी ग्रामीण एवं शहरी ओलंपिक खेलों का राज्य स्तरीय आयोजन 25 सितम्बर से जोधपुर में

जयपुर । राज्य स्तरीय राजीव गांधी ग्रामीण एवं शहरी ओलंपिक खेलों का आयोजन आगामी 25 से 28 सितंबर तक राज्य के जोधपुर जिले में होना प्रस्तावित है। खेल विभाग के शासन सचिव नरेश कुमार ठकराल ने बुधवार को जानकारी देते हुए कहा कि इस आयोजन के सफल क्रियान्वयन के लिए खेल से जुड़े सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक स्तर पर संबंधित अधिकारियों के सहयोग से सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं और हम इस आयोजन को एक नए आयाम तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत हैं। उन्होंने बताया कि राज्य स्तर पर कुल 50 जिलों में इस खेल में 11 वर्गों (कबड्डी, शूटिंग, वॉलीबॉल, टेनिस बॉल क्रिकेट, खो-खो, वॉलीबॉल, फुटबॉल, रस्सा-कशी, एथलेटिक्स-100 मीटर, एथलेटिक्स- 200 मीटर, एथलेटिक्स- 400 मीटर एवं बास्केटबॉल) में ग्रामीण एवं शहरी दोनों स्तर से कुल 7 हजार 556 खिलाड़ियों को चुना गया है जिनमें 4? हजार ?91 महिला वर्ग से एवं 3 हजार 565 पुरुष वर्ग से है, जो खेलों में महिलाओं की बढ़ती सहभागिता को भी दशार्ता है।

अमेरिकी रक्षा मंत्रालय का दावा, भारत में जल्द बनेंगे अमेरिकी हथियार

वाशिंगटन। भारत और अमेरिका के बीच आपसी रिश्तों की मजबूती सामान्य व्यापार के साथ अब सैन्य व्यापार की ओर भी दिखने लगी है। अमेरिकी रक्षा मंत्रालय से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी ने दावा किया है कि भारत और अमेरिका सैन्य प्रणालियों के निर्माण में सहयोग की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इसके परिणाम स्वरूप जल्द ही भारत के आयुध कारखानों में अमेरिकी हथियार बनते नजर आएंगे। अमेरिकी रक्षा मंत्री कार्यालय में दक्षिण एशिया नीति के निदेशक सिद्धार्थ अय्यर ने वाशिंगटन के हडसन इंस्टीट्यूट में एक कार्यक्रम के दौरान दावा किया कि भारत और अमेरिका के सैन्य प्रणालियों के निर्माण में साथ आने पर भारत के रक्षा उद्योग को उच्च-तकनीक वाले हथियारों के उत्पादन का मौका मिल सकता है। इतना ही नहीं दोनों देशों के सहयोग के बाद भारत में अमेरिका के हथियारों के बनने का रास्ता भी साफ हो जाएगा।

अय्यर ने कहा कि अमेरिका अब भारत सरकार के साथ युद्ध में इस्तेमाल होने वाले जमीन आधारित पारंपरिक हथियार बनाने के लिए बात कर रहा है। इसके अलावा दोनों देशों में खुफिया तंत्र और निगरानी में इस्तेमाल होने वाली सैन्य प्रणालियों के इस्तेमाल को लेकर भी बातचीत जारी है। अमेरिका की तरफ से पारस्परिक रक्षा खरीद समझौते को तय करने पर भी चर्चा जारी है। इस पर ज्यादा जानकारी प्रक्रिया के आगे बढ़ने के बाद ही दी जा सकती है। हडसन इंस्टीट्यूट की अपर्णा पांडे के साथ बातचीत में अय्यर ने कहा कि आपूर्ति व्यवस्था की सुरक्षा को अंतिम रूप देने के लिए भारत और अमेरिका के बीच बातचीत में अच्छी प्रगति हो रही है।

भारत की ट्रैवल एडवाइजरी से घबराया कनाडा! मुंहतोड़ जवाब मिलने पर बदले सुर, अब कर रहा शांति की अपील

टोरंटो। भारत-कनाडा के बीच बढ़ते राजनयिक विवाद के बीच अब कनाडा के रुख में नरमी आई है और उसने शांति की अपील की है। दरअसल बीते दिनों कनाडा ने अपने नागरिकों को भारत के कुछ राज्यों की यात्रा करने से बचने की बेतुकी सलाह दी थी। इसका मुंहतोड़ जवाब देते हुए भारत सरकार ने भी अपने नागरिकों को कनाडा की यात्रा से बचने की सलाह दे डाली। इतना ही नहीं ताजा घटनाक्रम में भारत ने कनाडा के लोगों के लिए वीजा सेवाएं भी निलंबित कर दी हैं। अगले आदेश तक यह निलंबन जारी रहेगा। वहीं तीखा जवाब मिलने से कनाडा के रुख में थोड़ी नरमी आई है और अब वहां के नेता शांति की अपील कर रहे हैं।

खालिस्तानी आतंकी की हत्या से बिगड़े संबंध

बता दें कि कनाडा में खालिस्तानी अलगाववादी नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर कनाडाई पीएम जस्टिन ट्रूडो ने वहां की संसद में दिए एक बयान में भारत पर गंभीर आरोप लगाए थे। जिसके बाद दोनों देशों के रिश्तों में कड़वाहट आई है। कनाडा ने भारत के एक राजनयिक को वापस भेजा तो भारत ने भी उसी भाषा में जवाब देते हुए कनाडा के एक राजनयिक को निष्कासित कर दिया। इसके बाद कनाडा ने अपने नागरिकों को भारत में जम्मू कश्मीर, उत्तर पूर्वी राज्यों का दौरा करने से बचने की सलाह दी तो भारत ने भी अपने नागरिकों को कनाडा की यात्रा करने से बचने की सलाह दी है। भारत के कड़े रुख से कनाडा कुछ नरम पड़ा है।

कनाडा के आव्रजन मंत्री मार्क मिलर ने कहा है कि कनाडा की यात्रा करना बिल्कुल सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि कनाडा, दुनिया के सबसे सुरक्षित देशों में से एक है और बीते दो-तीन दिनों के घटनाक्रम और आरोपों की गंभीरता के बीच सभी को शांत रहने की जरूरत है। कनाडा सरकार के एक और मंत्री सीन फ्रेजर ने कहा कि वह जांच पर कोई टिप्पणी नहीं करेंगे लेकिन यह बेहद गंभीर मामला है और हमारी जांच एजेंसियां इसकी जांच कर रही हैं।

सिंगापुरः चांगी एयरपोर्ट पर अगले साल से नहीं पड़ेगी पासपोर्ट दिखाने की जरूरत

सिंगापुर। सिंगापुर के चांगी एयरपोर्ट 2024 से आव्रजन के लिए स्वचालित क्लियरेंस और पासपोर्ट मुक्त होने के लिए तैयार है। इसकी घोषणा सिंगापुर की संचार मंत्री जोसेफिन टिओ ने पार्लियामेंट के सत्र के दौरान की। इस दौरान देश के आव्रजन अधिनियम से जुड़े कई बदलाव पारित किए गए। अधिकारियों ने बताया कि यात्री अब केवल बायोमेट्रिक डेटा का इस्तेमाल करके पासपोर्ट के बिना सिंगापुर में घूम सकेंगे। उन्होंने कहा, सिंगापुर पासपोर्ट मुक्त आव्रजन मंजूरी देने वाला विश्व के कुछ देशों में से एक होगा। चांगी एयरपोर्ट पर चेहरे की पहचान (फेस रिकगनिशन) और बायोमेट्रिक टेक्नोलॉजी पहले से ही इस्तेमाल में है। आने वाले बदलावों से यात्रियों को प्रत्येक टच प्वाइंट पर अपने दस्तावेजों को दिखाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बायोमेट्रिक का उपयोग सिंगल टोकन प्रमाणीकरण बनाने के तौर किया जाएगा, जो कि विभिन्न टच प्वाइंट पर कार्यरत होगा।

कनाडा में एक और खालिस्तान समर्थक गैंगस्टर की हत्या, लारेंस विश्नोई गैंग ने ली जिम्मेदारी

ओट्टावा। कनाडा में खालिस्तानी अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के बाद भारत और कनाडा के राजनयिक घमासान के बीच एक और खालिस्तान समर्थक गैंगस्टर की हत्या हो गयी है। भारतीय जांच एजेंसी एनआईए की वांछित सूची में शामिल सुखदूल सिंह गिल उर्फ सुक्खा दुनेके की हत्या कर दी गयी है। गैंगवार में हुई इस हत्या की जिम्मेदारी लारेंस विश्नोई गैंग ने ली है। जानकारी के मुताबिक कनाडा के मनितोबा प्रांत के विन्नीपेग में सुक्खा दुनेके की हत्या कर दी गयी। उस पर 15 राउंड गोलियां चलाई गयीं और मौके पर ही उसकी मौत हो गई।फर्जी दस्तावेजों के सहारे वर्ष 2017 में भारत से भाग कर कनाडा पहुंचा सुक्खा खालिस्तान समर्थक था।

भारतीय जांच एजेंसी, एनआईए द्वारा जारी की गयी 41 आतंकियों व गैंगस्टरों की सूची में सुक्खा शामिल था। उसे खालिस्तानी आतंकी-गैंगस्टर अर्शदीप सिंह उर्फ अर्श डल्ला का राइट हैंड माना जाता था। वह कनाडा में बैठकर अपने गुर्गों से भारत में रंगदारी वसूलता था।

लॉरेंस गैंग ने गैंगस्टर सुक्खा के कत्ल की जिम्मेदारी ली है। लॉरेंस गैंग ने सोशल मीडिया पोस्ट पर लिखा की सुक्खा बंबीहा ग्रुप का इंचार्ज बना फिरता था। सुक्खा को हेरोइन का आदी नशेड़ी बताकर कहा गया है कि उसने सिर्फ अपने नशे के शौक को पूरा करने के लिए बहुत घर उजाड़े थे। उसकी हत्या की जिम्मेदारी लेते हुए लारेंस विश्नोई गैंग ने लिखा है कि सुक्खा ने गुरलाल बराड़, विक्की मिड्डूखेड़ा, संदीप नंगल अंबिया की हत्या करवाई थी। दावा किया गया है कि सुक्खा को उसके किए हुए पापों की सजा मिल गयी है। साथ ही लारेंस गैंग ने अपने बाकी दुश्मनों को भी सजा देने की बात कही है।

नए शिक्षा विधेयक के विरोध में देशभर के सरकारी शिक्षकों का काठमांडू में विरोध प्रदर्शन

काठमांडू। सरकार द्वारा संसद में पेश किए गए नए शिक्षा विधेयक का विरोध करते हुए देशभर के सरकारी शिक्षकों का राजधानी काठमांडू में विरोध प्रदर्शन हो रहा है। सरकारी विद्यालयों को नगरपालिका और गांवपालिका के मातहत रखने के प्रस्तावित प्रावधान के विरोध में यह प्रदर्शन किया जा रहा है। नेपाल शिक्षक महासंघ के आह्वान पर देश के सभी सरकारी और सामुदायिक विद्यालय के शिक्षक अपने अपने स्कूल को बन्द कर काठमांडू में विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। शिक्षकों के विरोध प्रदर्शन के कारण बुधवार को काठमांडू के सबसे व्यस्त रहने वाले माइतीघर बानेश्वर सड़क खण्ड पूरी तरह बन्द रहा। हजारों शिक्षकों के प्रदर्शन से राजधानी की यातायात व्यवस्था चरमरा गई है।

नेपाल शिक्षक महासंघ के अध्यक्ष कमला देवी तुलाधर ने बताया कि सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को स्थानीय निकाय के तहत लाने का हम विरोध कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार के इस प्रस्तावित विधेयक से सरकारी शिक्षकों को हतोत्साहित करने का काम किया गया है। शिक्षकों के पदोन्नति और स्थानांतरण का अधिकार स्थानीय नगरपालिका और गांवपालिका को देना शिक्षकों के साथ अन्याय है। कई राजनीतिक दलों ने भी शिक्षकों के इस आंदोलन का समर्थन करते हुए सरकार से इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की मांग की है। हालांकि शिक्षा मंत्री अशोक राई ने कहा कि सरकार की तरफ से लगातार वार्ता का आह्वान किए जाने के बाद भी शिक्षक महासंघ के प्रतिनिधि वार्ता में नहीं आए।

भारत-नेपाल के बीच राज्य स्तरीय विद्युत व्यापार करने पर सहमति

काठमांडू। भारत और नेपाल के बीच अब राज्य स्तर पर भी विद्युत खरीद-बिक्री पर सहमति बन गई है। दोनों देशों के बीच हुई बैठक के बाद केन्द्र सरकार के अलावा अब राज्य सरकारों को भी नेपाल से बिजली खरीदने और बेचने की अनुमति दी गई है।

नई दिल्ली में पिछले दो दिनों तक इंडो नेपाल ज्वाइंट टेक्निकल टीम की बैठक में इस तरह की सहमति होने की जानकारी दी गई है। नेपाल विद्युत प्राधिकरण और भारत के ऊर्जा मंत्रालय अन्तर्गत विद्युत व्यापार निगम के अधिकारियों की बैठक में दोनों देशों के बीच रहे 132 केपीए प्रसारण लाइन से सीमावर्ती राज्यों को बिजली खरीदने और बेचने पर सहमति हुई है।

बैठक में शामिल नेपाल विद्युत व्यापार विभाग के निदेशक प्रबल अधिकारी ने बताया कि इस सहमति के बाद नेपाल से और अधिक बिजली भारत के राज्यों को बेचने का रास्ता खुल गया है।

अधिकारी ने बताया कि अब तक नेपाल और भारत के बीच मुफ्फरपुर-ढल्केवर के बीच रहे

400 केवीए प्रसारण लाइन से ही बिजली का व्यापार हो रहा है। यह बिजली भारत के केन्द्रीय प्रसारण लाइन को सीधे बेचा जा रहा है। लेकिन दिल्ली में हुई सहमति के बाद अब उत्तर प्रदेश के नौतनवा से लेकर नेपाल के मैनहिया तक रहे 132 केवीए क्षमता वाले प्रसारण लाइन और नानपारा से नेपाल के कोहलपुर तक रहे 132 केवीए प्रसारण लाइन से बिजली व्यापार किया जा सकता है। नेपाल और भारत के बीच इस समय 450 मेगावाट बिजली का नियमित व्यापार हो रहा है। इसे बढ़ा कर जल्द ही 550 मेगावाट करने पर पहले ही सहमति हो चुकी है। नेपाल के कई हाईड्रो पावर को भारत में बिजली बेचने के लिए हरी झंडी दे दी गई है।

हिंदुओं को जान का खतरा बताकर हिंदू फोरम कनाडा ने सरकार से मांगी सुरक्षा, लिखा पत्र

ओट्टावा। कनाडा में हिंदुओं के सिर पर जान का खतरा मंडरा रहा है। हिंदू फोरम कनाडा ने सरकार से हिंदुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है।

जून माह में अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के मामले में कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो द्वारा भारत पर आरोप लगाए जाने के बाद कनाडा में रह रहे भारतीय भी चिंतित हैं। रही सही कसर भारत में आतंकवादी के रूप में चिह्नित गुरपतवंत पन्नू ने हिंदुओं को देश छोड़कर जाने की धमकी देकर पूरी कर दी है। पन्नू प्रतिबंधित संगठन सिख फॉर जस्टिस का मुखिया भी है और भारत विरोधी गतिविधियों में लिप्त रहता है।

अब इस मसले पर कनाडा के अल्पसंख्यकों के बीच काम कर रहे मानवतावादी संगठन हिंदू फोरम कनाडा ने कनाडा के सुरक्षा मंत्री डोमिनिक लीब्लेंक को पत्र लिखकर खालिस्तान समर्थक आतंकियों के खतरे को देखते हुए हिंदू समुदाय की सुरक्षा की मांग की है। फोरम ने पन्नू के बयानों के संबंध में इस मामले पर ध्यान देने और अहम कदम उठाने की मांग की है। पत्र में अधिकारियों से इस मामले को गंभीरता से लेने का अनुरोध किया गया है। इसका सीधा प्रभाव कनाडा के नागरिकों पर पड़ रहा है। सोशल मीडिया पर वायरल होने वाली नफरती वीडियो ने हिंदुओं की चिंता और भी बढ़ा दी है। फोरम ने पत्र में विश्वास व्यक्त किया है कि कनाडाई अधिकारी इस मामले में निर्णायक कदम उठाएंगे।

HINDU FORUM CANADA

भारतीय मूल के कनाडाई सांसद ने की सावधानी बरतने की अपील, ट्रूडो सरकार से पूछे सवाल

ओट्टावा। भारत और कनाडा के बीच बढ़ते तनाव को लेकर कनाडा में भारतीय मूल के सांसद चंद्र आर्या ने कनाडा के हिंदुओं से सावधानी बरतने की अपील करते हुए कहा है कि खालिस्तान समर्थक नेता कनाडा के हिंदू और सिखों को बांटने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कनाडा के पीएम ट्रूडो का नाम लिए बगैर कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर आतंकवाद का महिमामंडन या किसी धार्मिक समूह को निशाना बनाकर किए जाने वाले घृणित अपराध की मंजूरी कैसे दी जा रही है। सोशल साइट एक्स पर साझा किए गए वीडियो संदेश में चंद्र आर्या ने अपील करते हुए कहा कि हिंदू कनाडाई शांति से रहें लेकिन सावधानी बरतें। किसी भी तरह की हिंदू फोबिया की घटना की जानकारी अपने नजदीकी कानून-व्यवस्था लागू करने वाली एजेंसी को दें। उनका कहना है कि खालिस्तान समर्थक नेता कनाडा में रह रहे हिंदुओं को उकसा कर हिंदू-सिखों को आपस में बांटने की मंशा रखते हैं। वीडियो संदेश में उन्होंने दावा किया है कि कनाडा में रह रहे सिख समुदाय के ज्यादातर लोग खालिस्तान

आंदोलन का समर्थन नहीं करते हैं। वे खुल कर इसका विरोध नहीं करेंगे लेकिन वे हिंदू समुदाय के साथ जुड़े हुए हैं।

उन्होंने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर आतंकवाद का महिमामंडन या किसी धार्मिक समूह को निशाना बनाकर किए जाने वाले घृणित अपराध की मंजूरी कैसे दी जा रही है। यदि कोई श्वेत वर्चस्ववादी नस्लीय कनाडाई लोगों के किसी समूह पर हमला कर उन्हें देश से बाहर निकलने के लिए कहे तो कनाडा में हड़कंप मच जाएगा।

कौन हैं चंद्र आर्या

कनाडा के ओंटारियो के नपियर से सांसद चंद्र आर्या का जन्म कर्नाटक में हुआ। उन्होंने बैंगलोर विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग कर कर्नाटक विश्वविद्यालय से एमबीए किया। पढ़ाई पूरी कर चंद्र आर्य ने दिल्ली में डीआरडीओ और कर्नाटक वित्तीय निगम में काम किया। इसके बाद वे कतर गए और कुछ वर्षों बाद कतर से कनाडा पहुंचे। कनाडा की उन्होंने राजनीति में कदम रखा और चुनावी जीत हासिल की। भारतीय मीडिया में वे पहली बार तब चर्चाओं में आए जब कनाडा की संसद में उन्होंने मातृभाषा कन्नड़ में अपनी बात रखते हुए इसे कनाडा में रह रहे पांच करोड़ कन्नड़ भाषियों के लिए गौरवशाली क्षण बताया।

कनाडाई पीएम ट्रूडो के बयान के समर्थन में बोले अमेरिकी अधिकारी किर्बी

न्यूयॉर्क। अमेरिका ने खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत की संलिप्तता के कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के आरोप का समर्थन जताते हुए इसे बेहद गंभीर बताया है।

अमेरिकी रणनीतिक संचार के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (एनएससी) के समन्वयक जॉन किर्बी ने कहा कि मैं राजनयिक वार्ता को प्रोटेक्ट करने जा रहा हूं और इसे वहीं छोड़ दूंगा। किर्बी ने सहयोग के लिए भारत को प्रोत्साहित करेंगे। शीर्ष अमेरिकी

अधिकारी ने कहा कि मेरा मानना है कि पारदर्शी व्यापक जांच एक सही दृष्टिकोण है ताकि इसका पता लगाया जा सके कि वास्तव में क्या हुआ था? निश्चित रूप से भारत को हम सहयोग के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। दरअसल, जॉन किर्बी प्रतिबंधित खालिस्तान टाइगर फोर्स (केटीएफ) के हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत की संलिप्तता के बारे में जस्टिन ट्रूडो के आरोपों से जुड़े एक सवाल का जवाब दे रहे थे। हरदीप सिंह निज्जर की दो अज्ञात बंदूकधारियों ने 18 जून को कोलंबिया प्रांत में स्थित एक गुरुद्वारे के बाहर गोली मारकर हत्या की थी। निज्जर भारत के सबसे वांछित आतंकियों में से एक था। निज्जर के सिर पर 10 लाख रुपये का नकद इनाम भी था।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में दावा, गिरफ्तार लोगों को तालिबान दे रहा क्रूर यातना

न्यूयार्क। अफगानिस्तान में तालिबान राज की वापसी के बाद क्रूर शासन की पुनरावृत्ति सामने आ रही है। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की 1,600 से अधिक लोगों एक रिपोर्ट में बताया गया कि अफगानिस्तान में हिरासत में लोगों को तालिबानी अधिकारी क्रूर और अमानवीय यातना दे रहे हैं। तालिबान मानवाधिकार का खुलकर उल्लंघन कर रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार आरोपितों से अपराध स्वीकारने के लिए छत से लटकाया जाता है। बिजली के झटके सहित कई और अमावनीय यातनाएं दी जाती हैं। इसमें 11 प्रतिशत मामलों में महिलाओं को दी गई

कठोर और क्रूर यातना भी शामिल है। 259 मामलों में शारीरिक पीड़ा और 207 मामलों में मानसिक पीड़ा देने की बात कही गई है। रिपोर्ट में जनवरी 2022 से जुलाई 2023 के अंत तक के मामले दर्ज हैं।

संयुक्त राष्ट्र सहायता मिशन ने कहा कि ऐसे 50 प्रतिशत मामलों में हिरासत में रखे गए लोगों पर क्रूर, अमानवीय और अपमानजनक व्यवहार की शिकायत दर्ज की गई है। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त वोल्कर टर्क ने कहा कि तालिबान ने अगस्त 2021 में अफगानिस्तान की सत्ता पर कब्जा करने के बाद उदार शासन का वादा किया था। लेकिन वह 1990 के दशक से पहले वाले तालिबान की तरह ही क्रूर और कठोर कदम उठा रहा है।

राज्य स्तरीय सायर मेले का समापन, राज्यपाल शुक्ल ने की अध्यक्षता

सोलन। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने मंगलवार सायं सोलन जिले के अर्की उपमंडल में आयोजित राज्य स्तरीय सायर मेले के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मेले और त्यौहारों के माध्यम से न केवल हमारी समृद्ध संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा मिलता है बल्कि उनका संरक्षण भी सुनिश्चित होता है। उन्होंने कहा कि यह प्रसन्नता का विषय है कि सदियों से चली आ रही परंपराओं को लोगों ने आज भी कायम रखा है।

राज्यपाल ने कहा कि प्राकृतिक आपदा से राज्य को भारी नुकसान होने के बावजूद प्रदेश तीव्र गति इस स्थिति से उबर रहा है और अब स्थितियां सामान्य हो रही हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश का हर व्यक्ति इस आपदा में सहयोग देने के लिए आगे आ रहा है। उन्होंने कहा प्रदेश के लोग बुलंद हौंसले के साथ राज्य के पुनर्निर्माण अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि सायर मेला लोगों की आस्था से जुड़ा है जो हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास हमारी समृद्ध परंपराओं को संरक्षित करने का होना चाहिए और युवा पीढ़ी को भी संस्कृति से जोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को हमारी सभ्यता और संस्कृति का न केवल ज्ञान बल्कि उस पर गर्व भी होना चाहिए, तभी देश आगे बढ़ेगा और दुनिया में अपनी पहचान बनायेगा। मेले न केवल सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों के केंद्र होते हैं, बल्कि इनके माध्यम से राज्य की लोक संस्कृति, कला और शिल्प को जानने और समझने का अवसर भी मिलता है। राज्यपाल ने तीन दिवसीय सायर मेले के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति को बधाई दी। उन्होंने युवा पीढ़ी में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ग्रामीण स्तर पर युवाओं को नशे के प्रवृत्ति से निजात दिलाने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने सायर मेले के दौरान आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये। उन्होंने सायर मेला आयोजन समिति द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी किया। राज्यपाल ने सांस्कृतिक संध्या का भी आनंद लिया। इससे पहले, मुख्य संसदीय सचिव संजय अवस्थी ने राज्यपाल और लेडी गवर्नर एवं राज्य रेडक्रॉस अस्पताल कल्याण अनुभाग की अध्यक्षा जानकी शुक्ल का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सायर मेले का इतिहास लगभग 380 वर्ष पुराना है और यह लोगों की श्रद्धा का केन्द्र है। उन्होंने कहा कि इन उत्सवों के आयोजन से स्थानीय परम्पराओं एवं समृद्ध संस्कृति का संरक्षण होता है। उन्होंने कहा कि त्यौहारों के माध्यम से लोगों के बीच मेल-मिलाप और आपसी भाईचारा बढ़ता है तथा नई ऊर्जा का संचार होता है।

इससे पहले, सोलन के उपायुक्त मनमोहन शर्मा ने राज्यपाल का स्वागत किया और सायर मेले के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक गौरव सिंह, नगर पंचायत अर्की के अध्यक्ष हेमेन्द्र गुप्ता, पार्षद और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।